अभिनव गीतमंजरी

३

पूर्णमेवावशिष्यते

ACHARYA S.N. RATANJANKAR FOUNDATION

श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

|| श्री ||

हिंदुस्तानी संगीत पद्धति

अभिनव गीत मंजरी

तृतीय भाग

(द्वितीय संस्करण)

लेखक

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

बी. ए. संगीताचार्य

(सुजान)

प्रकाशक

आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन

दादर, बम्बई - ४०० ०१४.

समर्पण

संगीताचार्य

पण्डित राजाभैया पूछवाले (ग्वालियर)

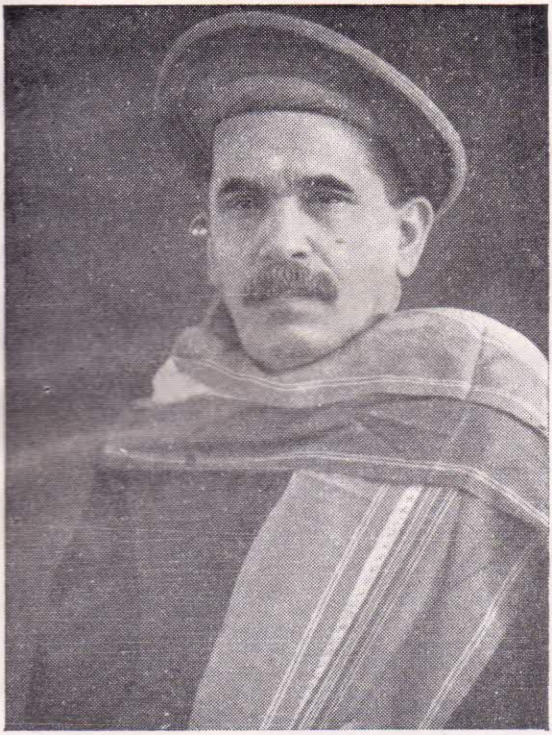

राजाभैयेतिनाम्ना प्रथितगुणयशाः गानविद्याविदग्धः ।
सद्वृत्तिः सर्वदा यः स्वरलयनिरतो बालकृष्णस्वभावः ।
यस्यप्रेमाब्धितोयैः सततमहमपि स्नापितो वत्सलस्य ।
तस्यांघ्रौ गीतमंजर्यभिनव सुविशिष्टार्पितेयं परार्धा ॥

पद्मभूषण

आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर

बी. ए. संगीताचार्य

(सुजान)

जन्म : ३१ दिसम्बर १९००   निधन : १४ फरवरी १९७४

लेखक

प्रस्तावना - द्वितीय संस्करण

अभिनव गीत मंजरी का यह तीसरा व अंतिम भाग, पुनर्गठित रुप में, संगीत - प्रेमिओं की सेवा में सादर करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता एवम् समाधान हो रहा है। इस मालिका के द्वितीय भाग का प्रकाशन गत दो वर्ष पूर्व अर्थात् ईसवी सन् १९९२ में किया गया था, जिसमें पूर्वी, मारवा तथा काफी ठाठों से उत्पन्न होने वाले लगभग ५८ प्रचलित एवम् अप्रचिलत रागों में १६८ विभिन्न बंदिश प्रकारों का समावेश किया गया है। अब इस तीसरे एवम् अंतिम भाग में आसावरी, भैरवी तथा तोडी ठाठों के अंतर्गत आनेवाले रागों के अतिरिक्त, लेखक द्वारा स्वनिर्मित रागों में रची हुई बंदिशों को, एक स्वतंत्र विभाग के रूप में, समावेश किया है। साथ साथ 'ताल-लक्षण-गीत - संग्रह' के रूप में एक और स्वतंत्र विभाग अंत में जोड़ दिया गया है, जिसमें प्रचलित तथा अप्रचलित कुछ तालों को, लक्षणगीत बंदिश - प्रकार के माध्यम से समझाया गया है।इसी प्रकार, 'सरस्वती वन्दनम्' व 'श्रीतानसेन प्रशस्ति' का भी समावेश इस भाग में किया गया है। सारांश, लगभग ५६ रागों में कुल १५२ बंदिशों का समावेश इस पुस्तक में किया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि संगीत प्रेमी इन बंदिशों से पूर्णतया लाभान्वित होंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन में (इस मालिका के प्रथम व द्वितीय भाग के प्रकाशन समवेत) जो यथायोग्य आर्थिक सहायता हमें श्री. करसनदास विसनजी ट्रस्ट द्वारा मिली है, उसके लिये इस उक्त ट्रस्ट के समस्त विश्वस्तों को जितने भी धन्यवाद दिये जाय, कम होंगे। इस अमूल्य आर्थिक सहायता के कारण ही इस पुस्तक को भी अत्यन्त अल्प मूल्य में प्रकाशित करने में हम सफल हो सके, जिससे सर्वसाधारण संगीत प्रेमी को इस पुस्तक को संग्रहित करने में सुविधा हो सके। इस पुस्तक मालिका के मुखपृष्ठ की निर्मिति, हितैषी श्रीं. शरद साठे ने अत्यन्त आत्मीयता से की है, जिसके लिये हमारी ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाओं सहित धन्यवाद। उसी प्रकार, इस पुस्तक के मुद्रण कार्य में सुदर्शन आर्ट प्रिंटींग प्रेस के संचालक श्री. लव बागवे तथा श्री. अशोक

बागवे का सक्रीय सहयोग प्राप्त हुवा है। अतएव हम उन्हें भी अपनी शुभकामनाओं सहित हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

अंत में, हमारे गुरुवर्य के इस विपुल संगीत सामग्री को पुनः प्रकाशित कर उनकी अभिलाषा की अंशतः पूर्ति करने में हम सफल हो सके, जिसका हमें पूर्ण समाधान है। हम आशा करते हैं कि समस्त संगीत प्रेमी पूर्ववत् इस पुस्तक मालिका को अपनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे। पूज्य गुरुवर्य के चरणों में यही हमारी विनम्र मनोकामना है।

विश्वस्त मण्डल

बम्बई, प्रजासत्ताक दिवस — आचार्य एस्. एन्. रातंजनकर फाऊण्डेशन

दि. २६ जनवरी १९९४ — दादर, बम्बई - ४०० ०१४.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
१.	अडाणा	थेईता थेईता	४५
२.	"	कहालों कीजे बखान	४६
३.	"	दिर दिर तनद्रे तनद्रे	४८
४.	"	हे गिरधारी	५०
५.	"	तेरो ही नाम रहे	५१
६.	"	अटचौताल नाम सोहे	२३१
७.	अल्हैया बिलावल	ताल हंसबिलास	२४५
८.	आसावरी	रेमपसां ध प	१
९.	"	मृदु निधग सुर लिये	१
१०.	"	तुम बिन को रखवार	२
११.	"	हँसत गावत सब	४
१२.	"	जिया में लगी कोऊ नहीं जाने	५
१३.	"	खेलहु नहीं जाने री	६
१४.	आसावरी-तोडी	कहो जी कहो कैसे के करिये	७२
१५.	"	जागो रे जग जीवन	७३
१६.	"	बिना नीर कसे जीवे मीन	७५
१७.	काफी	निराली सजी है सखि	२३५
१८.	कुमुद्वती	राग वर्णन व स्वरविस्तार	२०७
१९.	"	सरस रस बतियाँ	२०८
२०.	"	ये कौन पुरुख परब्रह्म	२१०
२१.	केदार	तेवरो ताल गुनीजन	२१६
२२.	कौंसीकान्हडा (मालकौंस अंग)	काहे करत मोंसे बरजोरी	५३
२३.	"	दैया दिन दूने	५५
२४.	खट	बँधा समा सुरलय राग तालसों	३५
२५.	"	रहे नाम तेरो	३६
२६.	"	पार नाहीं गुन को	३८
२७.	"	ये हो कैसी होरी मची	४०
२८.	खमाज	भरी एक, एक तजी	२१९
२९.	"	ना दिर दिर तन	२४८

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
३०.	गुर्जरी तोडी	नीर जमुना तीर बिलसै	१३२
३१.	गोपी बसंत	दाता बिधाता	२५
३२.	"	विद्या दानी दयानी	२६
३३.	"	ए काहे हो मोहे मनावन	२७
३४.	"	खेलहु नहीं जांने	२८
३५.	गोरख कल्याण	कासे कहूँ मन की बिथा	२४९
३६.	गौरी शंकर	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१७८
३७.	"	कौन मदमातो ठाडो	१७९
३८.	"	सरस रस रास रच्यो है	१८०
३९.	गांधारी	काहे अहो साँवरे	२०
४०.	"	द्रियानारे तोम् तदीम्	२१
४१.	"	सिगरे सिंगार किये बन बैठी	२२
४२.	"	सुन लै हो सुजान	२४
४३.	चारुकेशी	रागवर्णन व स्वरविस्तार	९९
४४.	"	प्रिये चारुकेशी	१०१
४५.	"	बनरा बनी आयोरी	१०२
४६.	"	नैया परी मजधार	१०४
४७.	"	बालमुवा परदेस गये	१०४
४८	छायानट	गिनत दश मात्रा	२२०
४९.	जोगेश्वरी	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१९१
५०.	"	लाज काज सब छाँडि	१९२
५१.	"	जोग जाग जप कीन्हे	१९३
५२	जौनपुरी	जाने ना दूँगी तोहे बालम	८
५३.	"	परम कृपाल भज रे गोपाल	९
५४.	"	जग जीवन जगन्नाथ	१०
५५.	"	नमो नमो गुनी गंधर्व चरण	१२
५६.	तिलक्ककामोद	रूप अनुपम ताल रूपक	२१७
५७.	तोडी	निधमगरेसा ऩिसारेग	११६
५८.	"	मृदु रिधग तीवर मनि	११७
५९.	"	सुनि सुमिर मन राम राम नाम	११८
६०.	"	सियरि पवन बहे मंद	१२०

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
६१.	तोडी	सुजन सुन हरि हर में नहीं भेद	१२१
६२	"	द्रौपदी के लाज रखन	१२३
६३	"	गरज उठयो त्रिभुवन मों	१२४
६४	"	श्रृंगार हास्य करुण	१२७
६५	"	हे श्री सीते देवि (वर्णम्)	१३०
६६	"	सवारी सोहे पंचदश मात्रा	२३९
६७	दरबारी कान्हडा	कहालों बिनति करूँ मैं	४२
६८	"	कौन चूक परी मोंसों	४४
६९	"	जाही के अनुपम गत	२२४
७०	दाक्षिणात्य वसंत	राग वर्णन व स्वरविस्तार	१०६
७१	"	ऋतु आयो अत सुखकर	१०७
७२	"	सरस सुगंध फूल खिले	१०९
७३	"	कासे कहूँ अपनी बिथा	१११
७४	देवगांधार	आज सुनाओ जस गुणगान	१४
७५	"	देव गंगाधर जटा जूट	१५
७६	देवगांधारी तोडी	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१७१
७७	"	राग रस को भेद न्यारो	१७२
७८	"	माथे किरीट पीतांबपर कट सोहे	१७४
७९	देशकार	ताल गजमुख जानियो	२४३
८०	देस	रसरंग युत गीत मधुर	२१५
८१	देसी	हटो हटो जावो छाँडो	२९
८२	"	पिया हम वारी	३१
८३	"	माधो मुकुंद मुरारी	३२
८४	"	यह देखो आयो है	३३
८५	नट भैरवी	राग वर्णन व स्वर विस्तार	१६
८६	"	दीनन दुःख हरन	१७
८७	"	राधे तोहे आन	१८
८८	"	धन धन भाग तेरो	१९
८९	परमेश्वरी	राग वर्णन व स्वरविस्तार	११२
९०	"	कौन अनोखे अनारी	११३
९१	"	कित गये चितचोर	११५

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
९२	पीलु की माँझ	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१८१
९३	"	ऐसी कैसी रीत नेहा की	१८२
९४	"	कौन अधीन भयो	१८३
९५	बहार	ताल पंचानन गिनै	२४६
९६	बिहाग	लघु गुरु लघु मिलि	२४१
९७	बिलासखानी तोडी	वही जाओ जाओ	८९
९८	"	होवे का किये लाखो तीरथ	९०
९९	"	बिलसै अत न्यारी सुरागनि	९१
१००	भूपाल तोडी	भनक परी कान	९२
१०१	"	माँगन माँगत आयो	९३
१०२	भैरवी	गरेसानि॒ सा॒गमध॒प	५६
१०३	"	गुनिजन बरनत भैरवी रागनि	५६
१०४	"	बिन कर्तब कस जीवन तेरो	५८
१०५	"	सगुन शुभ सोच बिचार	५९
१०६	"	उनको ले आवो मनाये	६०
१०७	"	बार बार बरजो नहीं माने	६२
१०८	"	फुलगेंदवा अब ना मारो	६३
१०९	"	देखो कन्हैया बरजोरी करो ना	६५
११०	"	हे ऊधो रे जाय कहो	६६
१११	"	श्वेताम्बरा केयम् (वर्णम्)	६८
११२	"	कहे कोऊ राम नाम	७०
११३	मधमाद सारंग	द्वादश मात्रा नियमित	२२८
११४	मलयमारुतम्	रागवर्णन व स्वरविस्तार	९४
११५	"	मलय समीर बहे	९५
११६	"	सुन रे सुजान अनुपम रागरूप	९६
११७	मारवा	सूल सुलच्छन कहे	२२१
११८	मालकौंस	सांसां ध॒ नि॒ ध॒ म	७७
११९	"	भैरवी के मेलन सों	७८
१२०	"	नाद बेद अप्रम्पार	७९
१२१	"	गाऊँ गुन गाऊँ	८१
१२२	"	फूली सुगंधित रातरानी	८२

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
१२३	**मालकौंस**	गाऊँ जस गान मंगल गाऊँ	८४
१२४	"	नभ मण्डल प्रकाशत	८६
१२५	"	रच्यो है रास कान्ह	२३७
१२६	**मालव मंजरी**	राग वर्णन व स्वरविस्तार	२०३
१२७	"	नाम न जानूँ गामहुँ नं जानुँ	२०४
१२८	"	हो मेंडा सॉंई	२०६
१२९	**मुलतानी**	ऩिसारे ऩिसागमप	१३३
१३०	"	नैना नीर झरत	१३४
१३१	"	कट सोहे पीताम्बर	१३५
१३२	"	कैसे कैसे आऊँ तिहारे पास	१३६
१३३	**रजनी कल्याण**	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१८८
१३४	"	अब तो याद करो ईश्वर को	१८९
१३५	"	अब न माने जियरा	१९०
१३६	**राग-माला**	प्रथम बिलावल मेल	१४६
१३७	**लक्ष्मीतोडी**	जा जारे जारे जारे पतंगवा	१४१
१३८	"	साँवरे बादर	१४२
१३९	"	सियरी पवन बहे	१४३
१४०	"	कौन ये रीत अनोखी	१४४
१४१	**लाचारी तोडी**	सत बचन कहो अहो सुजनवा	१३८
१४२	"	बहुत या जग मों	१३९
१४३	**बसंतमुखारी**	उठत जिया हूक सुनि कोयल कूक	९७
१४४	"	मालनियाँ लावो री गूँध लावो री	९८
१४५	**वियोगवराळी**	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१९४
१४६	"	बिनती यही न जौहो मथुरा	१९६
१४७	"	लाख करोर जियो जियो	१९७
१४८	**शंकरा**	चतुर ताल कहे लच्छन	२२६
१४९	**श्यामली**	रागवर्णन व स्वरविस्तार	२११
१५०	"	लावो री गूँध लावो	२१२
१५१	**स्वरस्वति वंदनम्**	हंसारूढा सितवसनयुता	१५९
१५२	**सालगवराळी**	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१६५
१५३	"	सुमर साहेब सुलतान	१६६

क्रमांक	राग	गीत के शब्द	पृष्ठ
१५४	सालगवराळी	सुमिर सुजन घनश्याम	१६७
१५५	"	जियरा नहीं माने एक	१६९
१५६	"	आज बधाई बाजे	१७०
१५७	सावनी केदार	राग वर्णन व स्वरविस्तार	१७५
१५८	"	सोलेहुँ सिंगार किये सजी सजनी	१७६
१५९	"	तुम हो प्रवीन महाप्रताप	१७७
१६०	सुरेश्वरी	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१९८
१६१	"	गुरु बिना ग्यान कबहूँ नहीं आवे	१९९
१६२	"	जियरा नहीं माने	२००
१६३	"	छूटत पिचकारी	२०१
१६४	सुरंजनी	रागवर्णन व स्वरविस्तार	१८४
१६५	"	सुरन बिच सोहे प्रथम खरज	१८५
१६६	"	नेहा लगाय कित जाय बसे	१८७
१६७	श्रीतानसेन प्रशस्तिः	ध्रुवःकष्ठ स्वरोद्गारः	१५०
१६८	हमीर	झूमर ताल सोहत	२३३
१६९	हरप्रिया	रागवर्णन	२१३
१७०	"	सुन रे सुजान मनमोहन	२१३
१७१	हिंडोल	ताल विक्रम कहत गुनि	२३०

इस पुस्तक में आया हुवा एक अप्रसिद्ध ताल :-

ताल हंसबिलास - मात्रा १६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धिं	ऽ	ना	धिं	त्रक	धी	ना	तिं	ऽ	त्रक
X					2		0		

११	१२	१३	१४	१५	१६
धी	धी	ना	धी	धी	ना
३			४		

॥ श्री ॥

अभिनव-गीत-मंजरी

भाग ३ रा

राग आसावरी-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

म   नि   प   म   सा
रे म प सां | ध॒ - प -, | म प ध॒ प | ग॒ ग॒ रे सा
३ | × | २ | ०

सा   नि   प   म   सा
रे रे सा रे | ध॒ - प - , | म प ध॒ प | ग॒ ग॒ रे सा
३ | × | २ | ०

अंतरा

प   नि   प   नि
म म प प | ध॒ -, म प | सां - सां - | रें - सां -
३ | × | २ | ०

नि   ध   नि   मं
ध॒ - ध॒, सां | - सां, सां रें | गं॒ - रें सां | रें नि॒ ध॒ प
३ | × | २ | ०

प   म   सा
म प सां - | ग॒ - रे सा, | गं॒ रें सां नि॒ | ध॒ प म ग॒
३ | × | २ | ०

राग आसावरी-लक्षणगीत-झपताल(मध्यलय)

स्थायीः मृदु निधग सुर लिये उपजत मधुर मेल
आसावरी, जामें निकसत सुरागिनी, नाम आसावरी।

अंतराः अंश धैवत रुचिर संवदत गांधार
अगनि अनुलोम, दिन दूजे पहर गेय,
अतही मनोहरी॥

स्थायी

म प	नि ध प	ग ग	री सा -,	री म	प प,सां	धृ धृ	प - प
मृ दु	नि ध ग	सु र	लि ये ऽ,	उ प	ज त,म	धु र	मे ऽ ल
×	2	0	3	×	2	0	3
रीं -	सां - रीं	ध -,	प - प	म म	प प,सां	ध -	ध प -,
आ ऽ	सा ऽ व	री ऽ,	जा ऽ में	नि क	स त,सु	रा ऽ	गि नी ऽ,
×	2	0	3	×	2	0	3
म प	ध,ग -	री सा	री सा -				
ना ऽ	म,आ ऽ	सा ऽ	व री ऽ				
×	2	0	3				

अंतरा

म -	प ध -	सां सां	सां सां सां	ध -	सां सां गं	रीं सां	ध - प
अं ऽ	श धै ऽ	व त	रु चि र	सं ऽ	व द त	गा ऽ	धा ऽ र
×	2	0	3	×	2	0	3
गं गं	गं गं गं	रीं -	रीं,सां सां	म प	ध सां सां	ध ध	प - प
अ ग	नि अ नु	लो ऽ	म,दि न	दृ ऽ	जे ऽ प	ह र	गे ऽ य
×	2	0	3	×	2	0	3
म म	प -,ध	ग -	री सा -				
अ त	ही ऽ,म	नो ऽ	ह री ऽ				
×	2	0	3				

राग आसावरी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : तुम बिन को रखवार हमारो, दीन नाथ तुम पतित उद्धारन,
आयो शरण तिहारे द्वार ।

अंतरा : दीन दुनी के हो तुम दाता, दुखियन के दुख हर परमेश्वर,
अब की रखियो टेक हमारी, सदा सदा मैं दास तिहार ॥

स्थायी

म म	म	नि	प म
ग ग री सा	री म प प	ध - प,प	मप धप ग -
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र, ह	माऽ ऽऽ रो ऽ
0	3	×	2
सा	म	नि	प
री री सा सा	री म प प	ध - प,प	ध म प -
तु म बि न	को ऽ र ख	वा ऽ र,ह	मा ऽ रो ऽ
0	3	×	2
म म सा		म प	नि
ग - ग री	- री सा सा	री री म म	प - ध प
दी ऽ न ना	ऽ थ तु म	प ति त उ	द्धा ऽ र न
0	3	×	2
प प	सां	नि सां	नि
म प गं -	रीं रीं सां,सां	म - प सां	ध - - प
आ ऽ यो ऽ	श र ण,ति	हा ऽ ऽ रे	द्वा ऽ ऽ र
0	3	×	2

अंतरा

प	नि नि	ध	नि
म - प,प	ध - ध -	सां - सां सां	सां - सां -
दी ऽ न,दु	नी ऽ के ऽ	हो ऽ तु म	दा ऽ ता ऽ
0	3	×	2
नि नि नि नि	ध नि	सां रीं	सां
ध ध ध ध	सां - सां सां	गं गं रीं सां	रीं नि ध प
दु खि य न	के ऽ दु ख	ह र प र	मे ऽ स र
0	3	×	2
प नि	नि नि	म नि	ग
म म प सां	ध ध प -	ग - री सा	री ग सा -
अ ब की ऽ	र खि यो ऽ	टे ऽ क ह	मा ऽ री ऽ
0	3	×	2
नि नि रीं सां		सां सां	नि
सा सा गं गं	रीं - सां -,	रीं - सां,रीं	ध - - प
स दा ऽ स	दा ऽ मैं ऽ,	दा ऽ स,ति	हा ऽ ऽ र
0	3	×	2

राग आसावरी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : हँसत गावत सब ग्वाल गोपाल
श्याम संग जमुना तट,अत रस सों
खेलत, धूम धाम सों नाचत|

अंतरा : सुर नर मुनि कोऊ भेद न जाको पायो
ऐसो अप्रंपार, नाथ जगत को गोप ग्वाल बिच
हिलमिल राग रंग रास रचत ||

स्थायी

प प	म म	म प	नि प
ध म पध मप	ग ग री सा	री म प सां	ध – प, ध
हँ स तऽ गाऽ	व त स ब	ग्वा ऽ ल गो	पा ऽ ल, श्या
२	०	३	×
	नि नि	प प म	म म
म म प प	ध ध प –	ध म, ध प	ग ग री सा
ऽ म सं ग	ज मु ना ऽ	त ट, अ त	र स सों ऽ
२	०	३	×
सा	म प	नि	प
री – सा सा,	री म री, म	प म, प नि	ध, म प सां
खे ऽ ल त,	धू ऽ म, धा	ऽ म, सों ऽ	ऽ, ना च त
२	०	३	×

अंतरा

प	नि नि प	प	नि
म म प प	ध ध म प	सां – सां सां	सां – सां –
सु र न र	मु नि को ऊ	भे ऽ द न	जा ऽ को ऽ
२	०	३	×
नि नि	ध	गं	सां
ध – ध –	सां – सां –	रीं गं रीं सां	रीं नि ध प
पा ऽ यो ऽ	ऐ ऽ सो ऽ	अ प र म	पा ऽ ऽ र
२	०	३	×

ध	म	प	सां	ध	ध	प	-	ग	-	रीसा	री	-	री	सा	सा
ना	ऽ	थ	ज	ग	त	को	ऽ	गो	ऽ	पऽ	ख्वा	ऽ	ल	बि	च
२				०				३				×			

री	री	म	म	प	-	प,	ध	-	ध,	सां	-	सां,	म	प	सां
हि	ल	मि	ल	रा	ऽ	ग,	रं	ऽ	ग,	रा	ऽ	स,	र	च	त
२				०				३				×			

राग आसावरी—एकताल (विलंबित)

स्थायी : जिया में लगी कोऊ नहीं जाने

नहीं पहचाने, न बूझे, जासों लगी सो ही माने।

अंतरा : घर अंगना न सुहावे, कल ना परत मोहे

जिया तरपत नित, बलमा परदेसी का जाने॥

स्थायी

,पध	गग	री,री	सा	,सा	री,मप	पसां	धध	ध	प	,प	ध	-
,जिऽ	याऽ	में,ल	गी	,को	ऊ,ऽऽ	नहीं	जाऽ	ऽ	ने	,न	हीं	ऽ
	०		३		४		×		०		२

म	,पधमप	ग	-	री	सा,री	ध	ध	प	,मप	ध	ध
ऽ	,पऽहऽ	चा	ऽ	ने	ऽ,न	बू	ऽ	झे	,ऽऽ	जा	ऽ
०		३		४		×		०		२	

सा	,सा	री	म	पमप-	,प	धम	पधसां-	निध	पम	गरी	सा;पध
सों	,ल	गी	ऽ	ऽऽऽऽ	,सो	हीऽ	माऽऽऽ	नेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ;जिऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

मम	पप	धम	,पध	सां	-	सां	-	ध	ध	सां	,सां
घर	अंग	नाऽ	,नसु	हा	ऽ	वे	ऽ	क	ल	ना	,प
३		४		×		०		२		०	

नि सां सां सां नि नि ध
सां गं | रीं सां | ,रीं ध | ध – | प ,मप | पध ,पमप
र त | मो हे | ,जि या | ऽ ऽ | ऽ ,ऽऽ | तऽ ,रऽऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म सा नि म नि नि ध नि
ग री | सा सा | सासा रीम | प ,मप | धध म,पध | सां,सांरीगं
प त | नि त | बल माऽ | ऽ ,ऽऽ | ऽऽ ऽ,पर | दे ,ऽऽऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

सां प नि म सा ध म म सा
रीं सां | मपधसां – | ध ,पमप | ग री | सा ;पध | गग री,री
सी ऽ | काऽऽऽ ऽ | जा ,ऽऽऽ | ने ऽ | ऽ ;जिऽ | याऽ में,ल
३ | ४ | × | ० | २ | ०

नि म म
सा ,सा | री,मप पसां |
गी ,को | ऊ,ऽऽ नहीं | -- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ | ४

राग आसावरी–होरी–धमार

स्थायी: खेलहु नहीं जानेरी ऐसे अनारी खिलैया
इन संग ना कोऊ खेलो होरी।
अंतरा : मुख मीड़े,बाँह पकरे लेत,ढीट लंगर
तोसों कौन खेले होरी॥

स्थायी

नि
सा
खे

म नि प
री म प प | ध – – प – | – प, | ध म –
ल हु न हीं | जा ऽ ऽ ने ऽ | ऽ री, | ऐ ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

प म सा सा नि
प – –,ध | ग – – री – | सा ,री | ध – –
से ऽ ऽ,अ | ना ऽ ऽ री ऽ | ऽ ,खि | लै ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

नि̣ म नि नि
प़ – – –, | सा री म प ध़ | म , प | ध़ सां –
या ऽ ऽ ऽ, | इ न ऽ सं ग | ऽ , ना | को ऊ ऽ
३ × २ ०

सां ध नि म सा नि̣
रीं नि धप | म प ध सां – | ग – | री – ; सा
खे ऽ लोऽ | हो ऽ ऽ ऽऽ | री ऽ | ऽ ऽ ; खे
३ × २ ०

म
री म प प |
ल हु न हीं | ----- इत्यादि
३

अंतरा

प नि ध नि नि नि
म प – ध – | सां –, | सां – सां | सां सां सां –
मु ख ऽ मीं ऽ | ड़े ऽ, | बाँ ऽ ह | प क रे ऽ
× २ ० ३

सां मं सां नि नि
रीं गं – रीं –, | सां – | रीं सां रीं | ध – प प
ले ऽ ऽ त ऽ, | पे ऽ | सो ऽ ऽ | ढी ऽ ऽ ट
× २ ० ३

म प सां नि नि प नि
प गं – रीं – | – , सां | रीं ध प, | म प ध सां
लं ग ऽ र ऽ | ऽ , तो | ऽ सों ऽ, | को ऽ न ऽ
× २ ० ३

नि म सा नि̣ म
ध प – ग – | री – | सा – ; सा | री म प प
खे ऽ ऽ ले ऽ | हो ऽ | री ऽ ; खे | ल हु न हीं
× २ ० ३

राग जौनपुरी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: जाने ना दूँगी तोहे बालम
बिरह बिथा मोहे अधिक सतावत
कासे कहूँ अपने जिया की पीर।

अंतरा: बिदेसवा अब जाय बसो नहीं
दिन रतिया मोरे तरपत बीतत
बरसत नैना नित नीर॥

स्थायी

मप धनि ध प	ग री म म,	प – ध म,	पध निसां ध प
जाऽ ऽऽ ने ऽ	ना ऽ दूँ गी,	तो ऽ हे ऽ,	बाऽ ऽऽ ल म
0	३	×	२
रीं रीं रीं, रीं	सांरीं गं रीं सां	ध प म, प	ग रीग री सा
बि र ह, बि	थाऽ ऽ मो हे	अ धि क, स	ता ऽऽ व त
0	३	×	२
नि सा री म,	री म प, ध	म प, निसां रींगं	रींसां निध पम गरी
का से क हूँ,	अ प ने, जि	या की, पीऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽरऽ
0	३	×	२

अंतरा

, म प प	ध म, प ध	सां – सां, सां	रींनि सां सां सां
, बि दे स	वा ऽ, अ ब	जा ऽ य, ब	सोऽ ऽ न हीं
0	३	×	२
प ध सां रीं	सांरीं गं रीं सां,	ध प म प	ग रीग री सा
दि न र ति	याऽ ऽ मो रे,	त र प त	बी ऽऽ त त
0	३	×	२

नि सा री म	री म प ध	मप निसां रींमं गंरीं	सांनि धप मग री
ब र स त	नै ना नि त	नीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ र
०	३	×	२

राग जोनपुरी – रूपक (मध्यलय)

स्थायी: परम कृपाल भज रे गोपाल
काहे न देखत माया जंजाल।
अंतरा: निसदिन नाम ले तूँ बिचार
सब दुःख द्वंद होत निस्तार
ऐसो प्रभु दीन दयाल॥

स्थायी

री म	प, सांसां	ध - प,	ध म	पध पप	ग री सा
प र	म, कृऽ	पा ऽ ल,	भ ज	रेऽ गोऽ	पा ऽ ल
२	३	⊗	२	३	⊗
म -	प, गं	रीं रींसां	नि -	सां, रींसां, निसांरींसां	ध - प
का ऽ	हे, न	दे ख त	मा ऽ	या, जंऽ, ऽऽऽऽ	जा ऽ ल
२	३	⊗	२	३	⊗

अंतरा

म म	प प	ध - ध	सां -	सां, सां	नि सां सां
नि स	दि न	ना ऽ म	ले ऽ	तूँ, बि	चा ऽ र
२	३	⊗	२	३	⊗
ध ध	सां सां	सांरीं, गं गं	रीं सां	सां, रीं	ध - प
स ब	दु ख	दंऽ ऽ द	हो ऽ	त, नि	स्ता ऽ र
२	३	⊗	२	३	⊗

म -	प -	सां ध प ‖	ध म	पध पप	ग री सा
ऐ S	सो S	प्र भु S ‖	दी S	नS दS	या S ल
२	३	⊗ ‖	२	३	⊗

राग जौनपुरी - एकताल (मध्यलय)

स्थायीः जग जीवन जगन्नाथ, परमेश्वर परमात्म
परब्रह्म गुप्त प्रकट, अगम अगोचर निर्गुण
निराकार कहलायो।

अंतराः भाँत भाँत रूप लिये, जड़ चेतन मों विचरत
या बिध यह संसार रच्यो तुँव, तबहूँ घरि पल
देखत सुनत लीला तुम्हरी यह, पामर नर
अहंकार बल कछुहु पार न पायो॥

स्थायी

सा सा	री म	प प,	ध ध	- प	- प
ज ग	जी S	व न,	ज ग	S न्ना	S थ
×	०	२	०	३	४
म म	प -	पध मप,	ग ग	री -	सा सा
प र	मे S	सS रS,	प र	मा S	त म
×	०	२	०	३	४
म ग	- री	सा सा,	री री	ध़, ध़	प़ प़
प र	S ब्र	S ह्म,	गु प	त, प्र	क ट
×	०	२	०	३	४
म़ म़	प़, प़	सा -	सा सा,	री री	म म
अ ग	म, अ	गो S	च र,	नि र	गु न
×	०	२	०	३	४

म	नि		प		नि
प प	– ध	– प,	म म	पध निसां	ध प
नि रा	ऽ का	ऽ र,	क ह	लाऽ ऽऽ	यो ऽ
×	०	२	०	३	४

अंतरा

प	प	नि		नि	
म –	प, सां	– सां,	सां –	सां, सां	सां –
भाँ ऽ	त, भाँ	ऽ त,	रू ऽ	प, लि	ये ऽ
×	०	२	०	३	४

नि नि	ध	नि	मं	सां	
ध ध	सां –	सां रीं	गं –	रीं रीं	सां सां
ज ड़	चे ऽ	त न	मों ऽ	वि च	र त
×	०	२	०	३	४

प		प		नि	सां सां
रीं –	सां सां,	म म	प –	ध –	नि, नि
या ऽ	बि ध,	य ह	सं ऽ	सा ऽ	र, र
×	०	२	०	३	४

	नि	नि	म	सा	
सां –	सां सां,	सा सा	ग –	री री	सा सा,
च्यो ऽ	तुँ व,	त ब	हूँ ऽ	घ रि	प ल,
×	०	२	०	३	४

नि म	म	प	नि नि	म	प
सा री	म, री	म प,	ध ध	प –	ध म
दे ख	त, सु	न त,	स ब	ली ऽ	ला ऽ
×	०	२	०	३	४

ध नि	सां	नि	नि		
प ध	नि सां	सां सां,	सांरीं मंगं	रीं रीं	सां सां,
तु म्ह	री ऽ	य ह,	पाऽ ऽऽ	म र	न र,
×	०	२	०	३	४

नि	म			प	
सा सा	– री	म म	प प	ध म	पध निसां
अ हं	ऽ का	ऽ र	ब ल	क घु	हुऽ ऽऽ
×	०	२	०	३	४

सां नि	नि	नि म	प	ध नि	सां
निसां रींसां	ध प,	सा –	री म	प ध	नि सां
पाS SS	र न,	पा S	यो S	S S	S S
×	0	2	0	3	४

राग जौनपुरी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : नमो नमो गुणि गंधर्व चरण
सुस्वर कण्ठ मधुर तातें बस भयो सकल संसार तिहारे
धन्य गुणी गंधर्व कहायो।

अंतरा-१: पलुश ग्राम सुख धाम निवासी, विप्र दिगंबर ब्रह्म शिरोमणि,
सूनु विष्णु शुभ नाम धरायो, ध्यान ध्यान गुण मान बढ़ायो॥

अंतरा-२: नाद वेद सेवा व्रत धरिके जन गण मन संगीत जगायो,
परम पावन संदेस जतायो, भक्ति भाव रस प्रेम सिखायो॥

स्थायी

कण: प ध	ध	म	नि
म प नि ध	प धम, पधमप	ग – री सा	सा, ध प प
न मो S न	मो SS, गुS णिS	ग S -ध S	र्व, च र ण
0	3	×	2
कण: सा	म म	म सा प	
नि – सा सा	री म म, प	ग री, म –	प धम, प प
सु S स्व र	क S ण्ठ, म	धु र, ता S	तें SS, ब स
0	3	×	2
कण: नि नि	नि प	नि नि	
ध ध – ध	प प, ध म	पध निसां नि, सां	ध – प –
भ यो S स	क ल, सं S	साS SS र, ति	हा S रे S
0	3	×	2
कण: म प	नि	सां नि	
प गं रीं सां	रीं –, सां म	पध निसां सां, रीं	ध – प –
ध S न्य गु	णी S, ग S	-धS SS र्व, क	हा S यो S
0	3	×	2

अंतरा-१

म प प ध॒	– ध॒, म प	सां – सां, सां	नि सां सां –
प लु श ग्रा	ऽ म, सु ख	धा ऽ म, नि	वा ऽ सी ऽ
०	३	×	२
ध॒ – ध॒ ध॒	सां – सां सां,	सांरीं गं रीं, सां	निसां रींसां ध॒ प
वि ऽ प्र दि	ग ऽम्ब र,	ब्रऽ ऽ ह्म, शि	रोऽ ऽऽ म णि
०	३	×	२
पध॒ निसांसां, रीं	नि सां, ध॒ प	मप ध॒प ग, सा	री – सा –
सुऽ ऽऽ नु, वि	ऽ ष्णु, शु भ	नाऽ ऽऽ म, ध	रा ऽ यो ऽ
०	३	×	२
सा री म, री	म प, ध॒ म	पनिसां रींगं रीं, सां	मपध॒ निसां ध॒ प
ध्या ऽ न, ध्या	ऽ न, गु ण	माऽऽ ऽऽ न, ब	ढ़ाऽऽ ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२

अंतरा-२

रीं – रीं, रीं	– रीं, सां –	ध॒ म प ध॒	सां सां सां –
ना ऽ द, वे	ऽ द, से ऽ	वा ऽ व्र त	ध रि के ऽ
०	३	×	२
नि सां रीं रीं	सां सां, ध॒ म	प – प, म	पध॒ निसां ध॒ प
ज न ग ण	म न, सं ऽ	गी ऽ त, ज	गाऽ ऽऽ यो ऽ
०	३	×	२
प सां नि, सां	ध॒ प, मप ध॒प	ग – री, सा	री ग सा –
प र म, पा	व न, संऽ ऽऽ	दे ऽ स, ज	ता ऽ यो ऽ
०	३	×	२
री – री म	– म, प प,	मपनि सांरींसां नि, सां	ध॒ – प –
भ ऽक्ति भा	ऽ व, र स,	प्रेऽऽ ऽऽऽ म, सि	खा ऽ यो ऽ
०	३	×	२

राग देवगांधार–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः आज सुनावो जस गुण गान
रब को नाम मंगल सुखदायक।
अंतरा : सब बिध बाजे तत बितत घन शिखर बजावो
आनन्द सों नेह बढ़ावो, सब को रिझावो ॥

स्थायी

धृ म प, सां	धृ – प –,	धृ म पधमप	गृ रीगृ री सा
आ ऽ ज, सु	ना ऽ वो ऽ,	ज स गुऽणऽ	गा ऽऽ ऽ न
३	×	२	०
री नि सा री	ग म म, म	प प,पधृ मप	गृ – री सा
र ब को ऽ	ना ऽ म, मं	ग ल,सुऽ खऽ	दा ऽ य क
३	×	२	०

अंतरा

म प धृ धृ	सां – सां, धृ	धृ, सां रीं गं	रीं सां –, सां
स ब बि ध	बा ऽ जे, त	त, बि त त	घ न ऽ, शि
३	×	२	०
नि सां –, रीं	धृ – प –,	पपमग म प प	धृ – सां –
ख र ऽ, ब	जा ऽ वो ऽ,	आऽऽऽ ऽ न न्द	सों ऽ ऽऽ
३	×	२	०
गृ गृ री, सा	री – सा –,	सा री ग, म	प धृ निसां प
ने ऽ ह, ब	ढ़ा ऽ वो ऽ,	स ब को, रि	झा ऽ वोऽ ऽ
३	×	२	०

राग देवगांधार-साध्रा- झपताल(मध्यलय)

स्थायीः देव गंगाधर, जटाजूट सीस धर

पशुपत कैलासपत, शम्भो हर हर शिव।

अंतरा : त्रिलोचन त्रिशूलधर, बिखधर पिनाकधर

निरत ताण्डव करत, जय जय महादेव॥

स्थायी

प	नि	ध	नि नि	सां	सां नि	नि	नि
म -	प ध़ -	प सां	सां सां,सां	नि -	सां - रीं	सां -	सां ध़ प
दे ऽ	व गं ऽ	गा ऽ	ध र,ज	टा ऽ	जू ऽ ट	सी ऽ	स ध र
×	2	0	3	×	2	0	3
म	म प		प	म	म म म	सा	
नि प	ग ग,म	प -	रीं रीं सां,	नि प	ग म,प	ग ,म	ग री सा
प शु	प त,कै	ला ऽ	स प त,	शं ऽ	भो ऽ,ह	र ,ह	र शि व
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

प	नि	म प	नि	सां सां	नि		नि
म प	ध़ प, प	सां -	सां सां सां	नि नि	सां सां,सां	रीं -	सां ध़ प
त्रि लो	च न,त्रि	शू ऽ	ल ध र	बि ख	ध र,पि	ना ऽ	क ध र
×	2	0	3	×	2	0	3
मं मं	मं मं			म	म म	म	
गं गं	गं,गं -	रीं सां	रीं सां सां,	नि प	ग म,प	ग म	ग री सा
नि र	त,ता ऽ	ण्ड व	क र त,	जै ऽ	जै ऽ,म	हा ऽ	दे ऽ व
×	2	0	3	×	2	0	3

राग नटभैरवी

नटभैरवी यह वास्तव में एक मेल(थाट) दाक्षिणात्य प्रणाली में प्रचलित है, जो कि हिन्दुस्तानी संगीत प्रणाली का आसावरी थाट होता है। किन्तु दाक्षिणात्य विद्वान् इसे एक राग मान कर बरतते हैं। इसके लक्षण में इसे सम्पूर्ण जाति का राग बताया गया है, जब कि इस राग का प्रचलन हिन्दुस्तानी संगीत में कुछ वर्षों से हुआ है और हमारे संगीत विद्वान् इस राग के आरोह में मध्यम एवम् निषाद स्वरों को दुर्बल मानते हैं। इस राग में वादी स्वर धैवत तथा संवादी ऋषभ माना गया है और इसे प्रातः काल का राग माना गया है।

उठाव

पधसां, रेंसां, निध, प, पम, धपमगरे, रेगप, मगरे, गरेसा।

स्वर-विस्तार

१. सा, गरेसा, धृप़, धृसा, रेगप, मप, धप, मगरे, गरेसा।

२. सा, धृसा, प़धृसा, रे, गरे, मपधप मगरे, सारेगप, धम, पधसां, निधप, रेगमप, धप, निधप, मगरे, गमगरे, गरेसा।

३. सारेप, मप, धम, रेगमप, धप, सां, धप, धसां, पधनिसां, रेंगंरें, सां, धसां, रेंसां निधप, मगरेगप, मगरे, गरेसा, धृसा, रेमपध पमगरे, म-गरे, गरेसा।

४. प, धप, निधप, सां, रेंसां, निधप, पधनिसां, रेंगंरें, सां, रेंसां, निसां, निधप, म, पधरेंसां, निधप, मधपमगरे, पमगरे, मगरेसा।

५. अंतरा : मप, धसां, पधनिसां, सां, धसां, रेंगंरें, गंरेंसां, धरें, रेंसां निधप, मनिधप, रेगपमप, निधप, गंरें, रेंगंरेंसां, धसां, धनिसांरें, मंगंरेंसां, रेंगं, सांगंरें, मंगंरेंसां, निधप, मप, मधपमगरे, गमगरे, गरेसा।

६. तानें : निधपमगरे गमपध पमगरे गरेसा धृसा। सारेमप धपमगरे सारेगरे पमगरे पधसांरेंगंरें सांरेंसांनिधप रेगपमप मगरे गमपधनिसांनिधप मधपमगरेसा। सारेमगरे पधसांनिधप धसांरेंगंरें मंगरेंगं सांरें धरेंसांरें सांनिधप निधपम धपमगरेसा।

राग नटभैरवी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : दीनन दुख हरन करुणानिधान

आयो शरण आज तोरे चरन।

अंतरा : निसदिन तिहारी कृपा की आस

बिनती करत हूँ कर जोरि 'सुजन'॥

स्थायी

			म प
			दी
प म ग॒ री	ग॒	ध	रीं सां नि॒ म
म ग॒ री सा	री ग॒ प, प	ध सांरीं गं रीं	सां नि॒ ध॒, प
न न दु ख	ह र न, क	रु णाऽ ऽ नि	धा ऽ न, दी
३	×	२	०
प म ग॒ री	ग॒	ध॒	सां नि॒ ध॒ ग॒
म ग॒ री सा	री ग॒ प, प	ध॒ पध॒ रीं सां	नि॒ ध॒ प, री
न न दु ख	ह र न, क	रु णाऽ ऽ नि	धा ऽ न, आ
३	×	२	०
म प	म	प	सां नि॒ ध॒ म
ग॒ प –, नि॒	ध॒ प, ग॒ री	सा, रीं – सां	नि॒ ध॒ प; प
ऽ यो ऽ, श	र ण, आ ऽ	ज, तो ऽ रे	च र न; दी
३	×	२	०

अंतरा

			नि॒ सा
			नि
ग॒ म प ध॒	सां मं	नि॒	नि॒ प
री ग॒ प, ध॒	सां – सां, रीं	गं – रीं, सां	– ध॒ प, रीं
स दि न, ति	हा ऽ री, कृ	पा ऽ की, आ	ऽ स ऽ, बि
३	×	२	०
	म	प	सां म
सां रीं, सां नि॒	ध॒ प –, ग॒	रीसा रीं – सां	रीं नि॒ ध॒; प
न ति, क र	त हूँ ऽ, क	रऽ जो ऽ रि	सु ज न; दी
३	×	२	०

राग नटभैरवी-साधा-झपताल(मध्यलय)

स्थायी : राधे तोहे आन कृष्ण कन्हैया की
चलरी सखी मान काहे किये गुमान।

अंतरा : जुहत बाट सकल गोप गोपीगण
रास रच्यो है सुन्दर बिंद्राबन ॥

स्थायी

ध			नि	म	म	ध प	म ग री
प धसां	सां-,रीं	सां -	ध - प,	प -	ध म, ध	प म	ग री सा
रा SS	धे S,तो	हे S	आ S न,	क्रे S	ष्ण S,क	न्हे S	या S की
×	२	०	३	×	२	०	३
नि म	म	प म	ग	ध		नि रीं	नि
सा री	ग प,प	म ग	री ग सा,	प ध	सांरीं गं,रीं	सां सां	ध प धम
च ल	री S,स	खी S	मा S न,	का S	हेS S,कि	ये गु	मा S नS
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

म	प ध		नि	म	नि		
प प	ध,सां-	सां -,	सां सां सां	प -	ध,सां रीं	सांरीं गं	रीं - रीं
जु ह	त,बा S	ट S,	स क ल	गो S	प,गो S	पीS S	ग S ण
×	२	०	३	×	२	०	३
गं			नि	नि ध प	म ग री	प	म ग री
रीं गं	मं गं,रीं	सां -	ध प-,	ध प	म,ग री	प म	ग री सा
रा S	स S,र	च्यो S	है SS,	सु न्द	र,बिं द	रा S	ब S न
×	२	०	३	×	२	०	३

राग नटभैरवी-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी: धन धन भाग तेरो जसोमती नन्दरानी
खेलत अंगना में परम पुरुख परमेश्वर।

अंतरा : ध्यान धरत नित सुर मुनि जोग जाग जप तप करि
तबहू न पावे जाको ऐसो अनन्त अगम हरि
सहज आयो तेरे द्वार॥

स्थायी

री	री	ग,	म	-	म,	प	-	प,	ध	-	प
ध	न	ऽ,	ध	ऽ	न,	भा	ऽ	ग,	ते	ऽ	रो
×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	ग	री	-,	री	ग	मग,	री	सा	सा
ज	सो	ऽ	म	ती	ऽ,	न	न्द	ऽऽ,	रा	ऽ	नी
×		०		२		०		३		४	
सा	-	-	री	ग	म	प	प	ध	सां	-	सां
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	त	अं	ग	ऽ	ना	ऽ	में
×		०		२		०		३		४	
रीं	सां	सां,	ध	प	प,	प	म	ग	री	सा	सा
प	र	म,	पु	रु	ख,	प	र	मे	ऽ	स	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	-	म	प	प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां
ध्या	ऽ	न	ध	र	त	नि	त	सु	र	मु	नि
×		०		२		०		३		४	

रीं –	रीं, गं	रीं सां,	रीं सां	नि ध	प प
जो S	ग,जा	S ग,	ज प	त प	क रि
×	०	२	०	३	४

री री	ग म	ग री,	सा –	सा,नि	ध प
त ब	S हु	S न,	पा S	वे,जा	S को
×	०	२	०	३	४

सा –	री,ग	म –	म,प	प ध	सां सां
ऐ S	सो,अ	न S	न्त,अ	ग म	ह रि
×	०	२	०	३	४

गं रीं	सां,नि	ध प,	प म	ग,री	सा सा
स ह	ज,आ	S यो,	ते रे	S,द्वा	S र
×	०	२	०	३	४

राग गांधारी–साध्रा– झपताल(मध्यलय)

स्थायी: काहे अहो साँवरे लाल नंद के

पीत मोसों छाँड़ दीन्ही आज ऐसी।

अंतरा : कब की मैं ठाड़ी द्वारे तिहारे

कीजो कृपा अब दरस की प्यासी॥

स्थायी

री –	सा –,सा	री म	प – प	ध –,	ध – प	पध,पम	प – –
का S	हे S,अ	हो S	साँ S व	रे S,	ला S ल	नंS,दS	के S S
×	२	०	३	×	२	०	३

ध म	पध सां,सां	रीं निसांरीं	ध – प	ध म	प – ध	ग –	री – सा
पी S	तS S,मों	सो SSS	छाँ S ड़	दी न्ही	आ S ज	ऐ S	सी S S
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

म प	धृ –, धृ	सां –	सां – –,	धृ –	सां –, रीं	नि सां रीं	धृ – प
क ब	की ऽ, मैं	ठा ऽ	ड़ी ऽ ऽ,	द्वा ऽ	रे ऽ, ति	हा ऽऽ	रे ऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	निसां, म	प धृ	निसा –,	रीं नि	धृ पधृ मप	ग –	री – सा
की ऽ	जो ऽ, क्र	पा ऽ	अ ब ऽ,	द र	स कीऽऽ	प्या ऽ	सी ऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

राग गांधारी – तराना – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : द्रियानारे तोम् तदीम् दीम् तदीम् दीम्,
तदियानारे तद्रेन्ना तद्रेन्ना, दिर दिर दिर तोम्
तनन दिर दिर तोम्, दिर दिर दिर दिर दिर दिर
दिर दिर, तदीम् दीम् तदीम्।

अंतरा : द्रितोम् द्रितोम तननननन दीम्, तननननन दीम्,
तननननन दीम् दीम्, ना दिर दिर दिर तोम्
तार्दानी, क्डान् ताधा, क्डान् ताधा, क्डान् ताधा ॥

स्थायी

पधृ मप
द्रिऽ याऽ

ग – री –	सा –, री म	म, प –, प	धृ – प –
ना ऽ रे ऽ	तो म्, त दी	म्, दी म्, त	दी म् दी म्
२	०	३	×
धृ म प धृ	सां – रीं नि	– सां –, रीं	धृ – प –
त दि या ना	रे ऽ, त द्रे	ऽ न्ना ऽ, त	द्रे ऽ न्ना ऽ
२	०	३	×

सां सां सां नि प म प ध नि सां

-, नि नि नि | सां - -, प | ध म, प ध | सां -, सां नि

ऽ, दिर दिर दिर | तो ऽ ऽ, म्त | न न, दिर दिर | तो म, दिर दिर

2 | 0 | 3 | ×

नि ध प म ग री सा म नि

ध प म ग | री सा, री म | -, प -, प | ध प, पध मप

दिर दिर दिर दिर | दिर दिर, त दी | म, दी म, त | दी म; द्रिऽ याऽ

2 | 0 | 3 | ×

अंतरा

प ग ग ग ग ग ग सा नि

ध री -, री | री - -, री | री री सा सा | सां - -, सां

द्रि तो म, द्रि | तो ऽ म, त | न न न न | दी ऽ म, त

2 | 0 | 3 | ×

सां गं नि सां सां नि

सां नि सां सां | रीं - -, सां | सां नि सां रीं | ध - प -,

न न न न | दी ऽ म, त | न न न न | दी म दी म,

2 | 0 | 3 | ×

प ध नि सां नि म ग प मं

म प ध नि | सां - -, ग | - री - सा | -, गं - गं

ना दिर दिर दिर | तो ऽ म, ता | ऽ दी ऽ नि | ऽ, क्डा न ता

2 | 0 | 3 | ×

गं नि सां नि म म नि

रीं - -, सां | - रीं ध - | -, प - प | ध -; पध मप

धा ऽ ऽ, क्डा | न ता धा ऽ | ऽ, क्डा न ता | धा ऽ; द्रिऽ याऽ

2 | 0 | 3 | ×

राग गांधारी–एकताल (विलंबित)

स्थायी : सिगरे सिंगार किये बन बैठी

या ब्रिज की नव नागरी अत ही भोरी।

अंतरा : हर के हरजैया वे तो ग्वार गुसैंया

पीत की रीत न जाने, अत ही अनारी ॥

स्थायी

पधपप	ग ,री	री सा,सा	रीम,पप	ध ,प	धम,पध	‖ सां सांसां
सिऽगऽ	रे ,सिं	गा र,कि	येऽ,बन	बे ,ठी	याऽ,ब्रिज	‖ की ,नव
	0	३	४	×	0	२

रीं,नि सांरीं	ध प	मम पसां	ध प	धम पग	‖ रीरी,सा; पधपप
ना,ऽ ऽऽ	ग री	अत हीऽ	भो ऽ	ऽऽ ऽऽ	‖ ऽऽ,री; सिऽगऽ
0	३	४	×	0	२

अंतरा

मप	धम ,पध	सां –	सां ,सांसां	रींरीं निनि	सां ,सां	रींरींसांनिसांरीं
हर	केऽ ,हर	जै ऽ	या ,वेतो	ख्याऽ ऽऽ	र ,गु	सैंऽऽऽऽऽ
	४	×	0	२	0	३

ध ‖	प –	नि निनि	निसां प	धम प,ध	सां –सां	सांगं रींरीं ‖
या ‖	ऽ ऽ	पी तकी	रीऽ ऽ	ऽऽ त,न	जा ऽने	अत हीऽ ‖
	४	×	0	२	0	३

सां ,सांरीं	धध प	धम पग	रीरी,सा; पधपप	ग ,री	री सा,सा
ऽ ,अऽ	नाऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ,री; सिऽगऽ	रे ,सिं	गा र,कि
४	×	0	२	0	३

रीम,पप	
येऽ,बन	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
४	

राग गांधारी-लक्षणगीत-चौताल

स्थायी: सुनि लैहो 'सुजान',आछी नीकी रागनी को
दोऊ रिखब धगनि मृदुल,तोडी के भेद मान।

अंतरा : चढ़ते गांधार बरज, धग वादी संवादी
गांधारी नाम मधुर,प्रात समय करत गान
चतुर जाको करे बखान॥

स्थायी

ध	प	ध,	प	ग	री	म,	म	म	प	–	प
सु	नि	ऽ,	लै	ऽ	हो	ऽ,	सु	जा	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
ध	–	पध	प	ग	ग	री	–	री	री	–	सा
आ	ऽ	छिऽ	नी	ऽ	की	रा	ऽ	ग	नी	ऽ	को
×		०		२		०		३		४	
ग	–	री,	री	री	सा,	सा	सा	री,	ध़	ध़	प़
दो	ऽ	ऊ,	रि	ख	ब,	ध	ग	नि,	मृ	दु	ल
×		०		२		०		३		४	
म	प	–	ध	सां	सां,	ग	री	रे,	री	–	सा
तो	ऽ	ऽ	डी	ऽ	को,	भे	ऽ	द,	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	प	प,	ध	–	–	सां	–	सां,	सां	सां	सां
च	ढ़	ते,	गा	ऽ	ऽ	-धा	ऽ	र,	ब	र	ज
×		०		२		०		३		४	

ध ध	– , सां	– सां,	गं –	– , रीं	– सां
ध ग	S , वा	S दी,	सं S	S , वा	S दी
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि सां	– प,	ध म	प, धं	सां सां
गा S	S -धा	S री,	ना S	म, म	धु र
×	०	२	०	३	४

सा –	री , म	प प,	ध ध	ध , नि	सां सां
प्रा S	त , स	म य,	क र	त , गा	S न
×	०	२	०	३	४

सां सां	रीं , धं	– प,	ग ग	ग री	– सा
च तु	र , जा	S को,	क रे	ब खा	S न
×	०	२	०	३	४

राग गोपीवसंत-साधा-झपताल(मध्यलय)

स्थायी : दाता विधाता त्रैलोक नाथा

दीन दुनी के तुम बहू दाता।

अंतरा : लाज शरम मेरी रखियो जगमें

तुम बिन नहीं कोऊ दूजो त्राता॥

स्थायी

नि सा	ग ग,म	प –	प – –, ‖	ध –	ध – ध	नि सां	ध प –
दा S	ता S,वि	धा S	ता SS, ‖	त्रै S	लो S क	ना S	था SS
×	२	०	३ ‖	×	२	०	३

सां –	ध नि,ध	म –	प ग ग ‖	म प	ध नि सां	म प	ग ग सा
दी S	न S,दु	नी S	के SS ‖	तु म	ब हू S	दा S	ता S S
×	२	०	३ ‖	×	२	०	३

अंतरा

म		सां	नि	नि	मं		नि
ग म	ध ध,नि	सां सां	सां - सां	ध नि	सां गं मं	गं सां	ध - प
ला ऽ	ज ऽ,श	र म	मे ऽरी,	र खि	यो ऽऽ	ज ग	में ऽऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

पं	मं मं गं		नि	ध	नि सां	प	म म
मं पं	गं गं,मं	गं सां	ध - म	प ध	नि सां म	म प	ग गसा
तु म	बि न,न	हीं ऽ	को ऽऊ	दू ऽ	जो ऽऽ	त्रा ऽ	ता ऽऽ
×	२	०	३	×	२	०	३

राग गोपीवसंत- साधा - झपताल(मध्यलय)

स्थायीः विधादानी दयानो सरसती माता
महा बाकबानी, सुर सुन्दरी।
अंतराः देव गंधर्व गुनि कर जोर के ठाड़े
माँगत वरदान जय जय करि॥

स्थायी

म म		म	म नि नि	म ग ग		म	म नि
ग ग म	प -	प -,प	ध धनि	प म म	प -	प -,प	ध -
वि ऽ धा	दा ऽ	नी ऽ,द	या नीऽ	वि ऽ धा	दा ऽ	नी ऽ,द	या ऽ
३	×	२	०	३	×	२	०

नि नि	सां	नि	प	नि		म ग ग	ध नि
ध -,ध	नि सां	ध प-,	सां -	ध नि,ध	म -	प म म	प ध
नी ऽ,स	र ऽ	स तीऽ,	मा ऽ	ता ऽ,म	हा ऽ	बा ऽ क	बा ऽ
३	×	२	०	३	×	२	०

सां		म म	
नि सां -,	म प	ग ग म	ग सा
नी ऽऽ,	सु र	सु ऽन्द	री ऽ
३	×	२	०

अंतरा

म म	नि	ध	नि	नि	मं		नि
ग ग	म,ध -	सां -	सां सां सां	ध नि	सां गं मं	गं सां	ध - प
दे ऽ	व,गऽ	-ध ऽ	र्व गु नि	क र	जो ऽ र	के ऽ	ठा ऽड़े
×	२	०	३	×	२	०	३

पं मं मं नि ध नि सां प म म

मं पं | गं गं मं | गं सां | ध - म || प ध | नि सां म | म प; | ग ग म

माँ ऽ | ग ऽ त | व र | दा ऽ न || जे ऽ | जै ऽ ऽ | क रि; | वि ऽ था

× | २ | ० | ३ || × | २ | ० | ३

म

प - | प -,

दा ऽ | नी ऽ, ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार

× | २

राग गोपीवसंत-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायीः ए काहे हो मोहे मनावो बालमवा
तुम जाओ जहाँ पीत लगाई ।

अंतराः देखी पीत न ऐसी नवेली
ना बोलो मोंसो हों हरजाई ॥

स्थायी

निसा नि नि ग नि नि नि सां नि

गगसा,सानि, -,सागमप, - म | प - - मप | ध ध ध निसां | ध - प -

एऽऽ,ऽऽ ऽ,काऽऽऽ ऽ हे | हो ऽ ऽ ऽऽ | मो ऽ ऽ हे,म | ना ऽ वो ऽ

३ | × | २ | ०

प म नि नि म नि सा

सां नि - धम | पम गम - गसा | सा नि ध प | ध -,नि सा निसा

बा ऽ ऽ लम | वाऽ ऽऽ ऽ तुम | जा ऽ ऽ वो | ऽ ऽ,ज हाँ ऽऽ

३ | × | २ | ०

म ग ध नि सां म म म

ग म म - | प ध नि सां | म प - ग,ग | म - ग सा;

पी ऽ त ऽ | ल गा ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ,ऽ | ऽ ऽ ई ऽ;

३ | × | २ | ०

अंतरा

म नि ध नि नि नि नि

पम ग म ध | सां - सां ,सां | सां - गं ,सां | ध - प -

देऽ ऽ खी ऽ | पी ऽ त ,न | ऐ ऽ सी ,न | वे ऽ ली ऽ

३ | × | २ | ०

ध मं नि म पप म म

पधनिसां गंमं गं सां | ध नि ध म | गम पधनिसां म ,मम | प गम ग सां;

नाSSS SS बो S | लो S मों सो | होंS SSSS S ,हर | जा SS ई S;

३ | × | २ | ०

राग गोपीवसंत-होरी-धमार

स्थायी: खेलहु नहीं जाने होरी अहो अनारी

ऐसे नये अनोखे हो खिलारी ।

अंतरा: बाँह पकरे लैहों, पगिया उखार डारों

मींड़ों मुख रंग सों, भाज कहाँ जैहो खेल बिहारी॥

स्थायी

म

नि

खे

नि सा ग म नि ध

ध म ग सा | म – – म ग | प , प | ध –, नि

ल हु न हीं | जा S S ने S | S , हो | री S, ख

३ | × | २ | ०

नि सा म म नि ध

ध म ग सा | म – प प – | –, प | ध –, सां

ल हु न हीं | जा S S ने S | S, अ | हो S, अ

३ | × | २ | ०

सां नि ध प नि नि नि

नि ध प –, | सां – – गं – | –, सां | ध –, म

ना S री S, | ऐ S S से S | S, न | ये S, अ

३ | × | २ | ०

ध नि सां सां नि म म म

प ध नि सां | नि ध म –, प | ग म | ग सा; नि

नो S खे S | हो S S S, खि | ला S | री S; खे

३ | × | २ | ०

अंतरा

प			नि॒			नि॒				नि॒		
म	प	-	ध॒ -	-,	ध॒	सां	सां	-	सां	-	सां	-
बाँ	ऽ	ऽ	ह ऽ	ऽ,	प	क	र	ऽ	ले	ऽ	हों	ऽ
×				2		0			3			
नि॒		मं				नि॒						
सां	सां	-	गं॒ मं	गं॒,	सां	ध॒	-	नि॒	ध॒	-	म	-
प	गि	ऽ	या ऽ	ऽ,	उ	खा	ऽ	र	डा	ऽ	रें	ऽ
×				2		0			3			
मं		मं				नि॒	सां		नि॒			
गं॒	मं	पं	गं॒ मं	गं॒	सां,	ध॒	नि॒	सां	ध॒	-	प	-
मीं	ऽ	ऽ	ड़ों ऽ	मु	ख,	रं	ग	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ
×				2		0			3			
प		म	म			प			नि॒		सां	
म	-	-	प ग॒	-,	म	प	-	-	ध॒	-	नि॒	सां
भा	ऽ	ऽ	ज ऽ	ऽ,	क	हाँ	ऽ	ऽ	जै	ऽ	हो	ऽ
×				2		0			3			
सां	नि॒	ध॒		म म			म		नि॒	ध॒	म	
नि॒	ध॒	म	-, प	ग॒	म	ग॒	सा;	नि॒	ध॒	म	ग॒	सा
छै	ऽ	ल	ऽ, बि	हा	ऽ	री	ऽ;	खे	ल	हु	न	हीं
×				2		0			3			

राग देसी – एकताल (मध्यलय)

स्थायी : हटो हटो जाओ छाँडो अब मोरी गैल
लंगर ढीट छैल, नाहीं मैंतो दूँगी गारी तोको
ना मानूंगी करूंगी लराई देखो।

अंतरा : निपट निडर अत नीलज, बाट घाट रोकत
टोकत, झगरो करत नित,
नाहीं तोसो कोऊ काज देखो ॥

स्थायी

म		ग			सा			म			
री	प	री	ग,	री	नि	सा	सा,	री	म	पध	मप
ह	टो	ह	टो,	जा	ओ	छाँ	डो,	अ	ब	मोS	रीS
×		0		2		0		३		४	
म				सा	सा			म			
ग	-	रीसा,	री	नि	नि	सा	सा,	री	म	पध	मप
गै	S	लS,	जा	S	ओ	छाँ	डो,	अ	ब	मोS	रीS
×		0		2		0		३		४	
म			प			नि			म		
ग	-	री,	म	प	प,	ध	-	प,	ग	-	री
गै	S	ल,	लं	ग	र,	ढी	S	ट,	छे	S	ल
×		0		2		0		३		४	
म				नि			नि	सां		नि	
री	म	प	सां,	सांरीं	गं	रीं,	सां	नि	सां	ध	प
ना	हीं	मैं	तो,	दूँS	S	गी,	गा	S	री	तो	को
×		0		2		0		३		४	
प				नि		नि	म	म		सा	
म	प	सां	नि,	सां	प	ध,	प	ग	री	नि	सा
ना	मा	नूं	गी,	क	रूं	गी,	ल	रा	ई	दे	खो
×		0		2		0		३		४	

अंतरा

प			प			नि		सां		नि	
म	म	प,	सां	सां	सां,	सां	सां	नि	सां	सां	सां
नि	प	ट,	नि	ड	र,	अ	त	नी	S	ल	ज
×		0		2		0		३		४	
नि			नि			सां			नि		
सांरीं	गं	रीं,	सां	-	सां,	नि	सां	-	ध	-	प
बाS	S	ट,	घा	S	ट,	रो	S	S	क	S	त
×		0		2		0		३		४	

म	प	ग	री,	रीं	म	प,	सां	नि	सां	ध	प
टो	ऽ	क	त,	झ	ग	रो,	क	र	त	नि	त
×		०		२		०		३		४	

म	म	प	प,	ध	–	प,	ग	–	री	नि	सा
ना	हीं	तो	सो,	को	ऽ	ऊ,	का	ऽ	ज	दे	खो
×		०		२		०		३		४	

राग देसी – आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी : पिया हम वारी तोरे ब्रिज के बसैया

तुम्हरे कारन बेकल होत जिया।

अंतरा : कब की ठाडी आंगनवा रे, अँसुवन की

झर लाग रही अँखिया ॥

स्थायी

पप	ग	रीग,	रीसा	री	–नि	सा	सा,	रीनि	सा	निनि	सा	प,	म,मप
पिऽ	या	ऽऽ,	हम	वा	ऽऽ	ऽ	री,	तोऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	रे,	ब्रि,जऽ
४		०		×		२		०		३		०	

सा	–	निसा,	सा	री	म	प,	ध	म,	प	ग	–,	री	ग
के	ऽ	ऽऽ,	ब	से	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ,	ऽ	या	ऽ,	ऽ	ऽ
४		०		×		२		०		३		०	

सा	री	नि	सा,	नि	सा	री	,म	प	प	–	मप,	धप	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	तु	म्ह	रे	,का	र	न	ऽ	ऽऽ,	बेऽ	ऽ
४		०		×		२		०		३		०	

मप	पधपप	ग	री	नि	सा	री	प	री	ग	री	नि	सा	सारी;
ऽऽ	कऽलऽ	हो	ऽ	त	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	याऽ;
४		०		×		२		०		३		०	

अंतरा

प नि नि नि
मप | सां − | सां − | निसां सां | सांरीं ,सांरींगं | रींसां रींनि | सां
कब | की ऽ | ठा ऽ | ऽऽ डी | आंऽ ,ऽ | ऽऽ गन | वाऽ ऽ
× 2 0 3 0 ४

सांसां म सा प नि
निनि सां | प ,मप | ग रीग | री सा | निसा ममप | सां प | मपध पमप
ऽऽ ऽ | रे ,अँसु | व ऽऽ | न की | ऽऽ झरऽ | ला ऽ | गऽऽ ,रऽऽ
0 × 2 0 3 0 ४

म री म प सा री नि री म म
ग री, | नि सा | री प | री ग | री नि | सा सारी; | पप ग
ही ऽ, | आँ ऽ | खि ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ साऽ; | पिऽ या
0 × 2 0 3 0 ४

ग सा री
रीग ,रीसा | री नि |
ऽऽ ,हम | वा ऽ | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 ×

राग देसी–एकताल (विलंबित)

स्थायी: माधो मुकुंद मुरारी

राधारमणा गोपी मन हरणा।

अंतरा: मन भाई मोहनी मूरत

अधर धरी मुरली, बजावत लै लै तान॥

स्थायी

सा मपधनि म म नि सा सा
रीनिसा रीमपध,प | ग,रीग रीसा | री निसा | सा निसा | मरी प |
मा,ऽऽ धोऽऽऽ,मु | कु,ऽऽ-द,मु | रा ऽऽ | री ऽऽ | राऽ धा |
3 ४ × 0 2

प प नि म री म म नि सा
− ,मप || सां प | ,मप ,धप | ग री, | निसा रीप | ग,रीग री,सा | री,निसा सा;
ऽ ,ऽऽ || ऽ ऽ | ,ऽऽ ,रम | णा ऽ, | गोऽ पीऽ | म,ऽऽ न,ह | र,ऽऽ णा
0 3 ४ × 0 2 0

अंतरा

प प	सां		नि		सां	नि	
मप	सां –	निसां सां	सांरीं सांरींगं	रीं सां	रींनि सां	ध प,मप
मन	भा ऽ	ऽऽ ई	मोऽ ऽऽऽ	ह नी	मुऽ ऽ	र त,ऽऽ
	×	०	२	०	३	४

प म	ग सा		प प		म री	म	सा
धप ग	रीग री	सा ,मप	सा निसा	री प	गरीग	री सा
अथ र	ऽऽ ध	री ,मुर	ली ऽऽ	ब जा	ऽऽऽ	व त
×	०	२	०	३	४	×

नि	म प	
– ,ध	मप प	मपनिसांरींगंरींसां निधपमगरीसा– ;
ऽ ,लै	ऽऽ लै	ताऽऽऽऽऽऽऽऽ ऽऽऽऽऽऽऽनऽ ;
०	२	०

राग देसी–होरी–धमार

स्थायीः यह देखो आयो है कन्हैया

होरी खेलन ब्रिजबारन संग।

अंतराः ढप की धुकार चहूँ ओर तें गरजत

नाचत गोपी ग्वार, बाजत बीन मृदंग॥

स्थायी

सां सां
नि नि
य ह

नि	नि		म
सां – – प–	– ,ध	प म प	ग री ग,रीसा
दे ऽ ऽ खोऽ	ऽ ,आ	यो ऽ ऽ	है ऽ ऽ,कऽ
×	२	०	३

सा सा नि		सा नि	प
री – – निसा	सा –,	नि नि सा	ध प,म प
न्है ऽ ऽ ऽऽ	या ऽ,	हो री खे	ल न,ब्रि ज
×	२	०	३

सा	–	–	री	म	ध	प	ग	री	ग	री	सा;	नि	नि
बा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	न	सं	ऽ	ऽ	ग	ऽ;	य	ह
×					२		०			३			

अंतरा

													म	प
													ढ	प
सां	–	–	नि	सां	सां,	सां	सां	–	–	नि	सां	सां	–
की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	धु	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
×					२		०			३			
रीं	रीं	गं	रीं	–	सां	–	नि	सां	–	ध	ध	प	प
च	हुँ	ऽ	ओ	ऽ	र	ऽ	तें	ऽ	ऽ	ग	र	ज	त
×					२		०			३			
म	म	प,	प	–	सां	नि	सां	प	प,	री	म	ध	प
ना	च	त,	गो	ऽ	पी	ऽ	ग्वा	ऽ	र,	बा	ऽ	ज	त
×					२		०			३			
ग	री	ग	री	–	–,	सा	री	–	सा	सा	–;	नि	नि
बी	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ,	मृ	दं	ऽ	ऽ	ग	ऽ;	य	ह
×					२		०			३			
सां	–	–	प	–									
दे	ऽ	ऽ	खो	ऽ	---- इत्यादि स्थायी के अनुसार								
×													

राग खट – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बँधा समा सुर लय राग ताल सों
आसमान छायो, गुनी गंधर्व ठाड़े
सुनतहुँ आछी नीकी तान।

अंतरा : शाहे अकबर रसिक गुन-ग्यानी
रिझायो ऐसो महा गुन खानी
कहालों बखान कीजे करतब तुम्हरे
तानसेन गुनि चतुर 'सुजान'॥

स्थायी

प म री	म	नि	नि ध
नि प म री	प – ,प पम	प प, ध –	ध, ध – नि
बँ धा ऽ स	मा ऽ, सु रऽ	ल य, रा ऽ	ग, ता ऽ ल
३	×	२	०
प	नि	नि प नि	
प –, सां –	सां ध – प,	ध – प, नि	ध प म म
सों ऽ, आऽ	स मा ऽ न,	छा ऽ यो, गु	नि गं ध र्व
३	×	२	०
म ग नि	ग म प	ध नि सां	नि नि ध
प म म, सा	सा री ग, म	प ध नि सां,	ध ध नि प
ठा ऽ ड़े, सु	न त हुँ, आ	छी नी ऽ की,	ता ऽ ऽ न
३	×	२	०

अंतरा

प
म
था

नि प		नि सां	नि ध प
प ध नि प	सां – सां, सां	नि सांग, रीं सां	ध नि प, नि
हे अ ऽ क	ब ऽ र, र	सि कऽ, गु न	ग्या ऽ नि, रि
३	×	२	०

धृ प म, प	म म –, म	प धृ नि सां	धृ – प, सा
झा ऽ यो, पे	ऽ सो ऽ, म	हा ऽ गु न	खा ऽ नि, क
३	×	२	०
री ग ग, म	प – प, धृ	– धृ, नि नि	सां सां, गं रीं
हा लो ऽ, ब	खा ऽ न, की	ऽ जे, क र	त ब, तु म्ह
३	×	२	०
सां, रीं – सां	धृ – प, म	म प धृ नि	सां धृ – नि, प
रे, ता ऽ न	से ऽ न, गु	नि च तु र	सु जा ऽऽ, न
३	×	२	०
नि प म री	प –,		
बँ धा ऽ स	मा ऽ,	इत्यादि स्थायी के अनुसार	
३	×		

राग खट – एकताल (विलंबित)

स्थायी : रहे नाम तेरो, रहे गुन चर्चा,

कीरत रहे तानसेन, तान चितहारे।

अंतरा : राग को रहे धरम, रहे ताल को सिंगार

धुरपद रीत रहे जोलो धरनी ध्रुव तारे ॥

स्थायी

नि	पनि, प मरी	प मप	प, प	धृ धृ	धृ, निप	सां सां
र	हे ऽ, ना ऽ म	ते ऽऽ	रो, र	हे ऽ	ऽ, गुन	च र
	४	×	०	२	०	३
धृधृ निप	निधृ प, म	प, मग	म, गम	प – धृ	नि सां	
चाऽ ऽऽ	कीर त, र	हे, ऽऽ	ऽ, ऽऽ	ता ऽ न	से ऽ	
४	×	०	२	०	३	

नि नि म ग नि म री सा नि नि म

ध प, | धप ,मग | म,म ,सारी | ग मप | ग री | सा सा;नि

ऽ न, | ताऽ ,ऽऽ | ऽ,न ,चित | हा ऽऽ | ऽ ऽ | ऽ रे;र

४ × ० २ ० ३

म री म

पनि,प मरी | प ,मप | प

हेऽ,ना ऽम | ते ,ऽऽ | रो ..... इत्यादि

४ × ०

अंतरा

प नि ध प नि नि नि नि नि ध सां

म | प,ध नि,प | सां – | सां सां | सां ,निसां | ध ध | –,सां –गं

रा | ग,को ऽ,र | हे ऽ | ध र | म ,ऽऽ | र हे | ऽ,ता ऽल

४ × ० २ ० ३

नि नि सां सां सां ध नि सां

रींसां ,सां | ध –प | नि नि | नि म | पध निसां | –सां ,रीं

कोऽ ,सिं | गा ऽर | धु र | प द | रीऽ ऽऽ | ऽत ,र

४ × ० २ ० ३

सां नि नि प ध नि सां सां नि प

सां ,निसां | गंरीं सां,सां | ध प | ,मम पध | निनि,सां | –सां –;नि

हे ,ऽऽ | जोऽ लो,ध | र नी | ,ध्रुव ताऽ | ऽऽ ऽ | ऽरे ऽ;र

४ × ० २ ० ३

म री म

पनि,प मरी | प ,मप | प

हेऽ,ना ऽम | ते ,ऽऽ | रो ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार

४ × ०

राग खट-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी: पार नाहीं गुन को अपार नाद सृष्टि जाकी
नाम लेतहु सधे सुर-लय-रस-राग-तान।

अंतरा : हरिदास तें पायो नाद भेद अप्रंपार
बरसायो चहूँ ओर राग-तान-गीत-ध्यान ॥

संचारी: कविकुल मणि कालिदास, भक्तन मणि सूरदास
राजन मणि अकबर, गुणिजन मणि तानसेन॥

आभोग: नायक सब शरण आये गायक गुणि सर नवाये
जाके चरण ऐसो एक तानसेन स्वर वितान ॥

स्थायी

सा	प		म	री							म
नि	प	नि	प	म	री	प	प	-म	प	-	, प
पा	S	र	ना	S	हीं	गु	न	SS	को	S	, अ
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	नि	नि	ध		प			नि	ध	
ध	ध	ध	ध	नि	प,	सां	निध	निध	, ध	नि	प
पा	S	र	ना	S	द,	सृ	SS	ष्टिS	, जा	S	की
×		०		२		०		३		४	

म	प	म	ग	नि	नि	म	म	म	म	म	म
प	ग	ग	, म	ध	धनि	प	ग	ग	ग	ग	ग
ना	S	म	, ले	S	तS	हु	S	S	स	धे	S
×		०		२		०		३		४	

ग	म	नि	नि	म	म	म	म		सा	नि	नि
म	नि	ध	धनि	प	ग,	ग	गम	प	री	सा	सा
सु	र	ल	यS	र	स,	रा	SS	ग	ता	S	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	प		नि			प			नि		
म	म	प	ध	नि	प	सां	-	-नि	सां	-	सां
ह	रि	S	दा	S	स	तें	S	SS	पा	S	यो
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	नि	ध		सां				नि	नि	
ध	ध	ध	सां	-	गं	रीं	सां	-	ध	धनि	पं
ना	ऽ	द	भे	ऽ	द	अ	प्र	ऽ	म्पा	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प		म	म	म	म	प	प		नि	नि	नि
म	प	ग	ग	ग	ग	म	म	प	ध	ध	ध
ब	र	सा	ऽ	यो	ऽ	च	हूँ	ऽ	ओ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां			नि			सां			नि	सां	नि
नि	सां	सां	रीं	सां	सां	म	-	प	ध	नि	सां
रा	ऽ	ग	ता	ऽ	न	गी	ऽ	त	ष्या	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

सां	नि			म	री
नि	ध	प	प	म	री
पा	ऽ	र	ना	ऽ	हीं
×		०		२	

---- इत्यादि स्थायी के अनुसार

संचारी

नि		नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि		
सा	सा	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नि	प
क	वि	कु	ल	म	णि	का	ऽ	लि	दा	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	नि	नि	ध		नि			नि		
ध	ध	ध	ध	सां	सां	सां	-	सां	ध	नि	प
भ	ऽ	क्त	न	म	णि	सु	ऽ	र	दा	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	

म	म			म		प			म	ग	
ग	ग	म	म	नि	प	नि	प	पम	प	म	म
रा	ऽ	ज	न	म	णि	अ	क	ऽऽ	ब	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

नि				म	म						
सा	सा	री	री	ग	ग	म	-	म	प	-	प
गु	णि	ज	न	म	णि	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प						प			नि		
म	—	प	प	निप	निप	सां	सां	सां	सां	—	सां
ना	ऽ	य	क	सऽ	बऽ	श	र	ण	आ	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	ध	सां			नि		नि	नि		
ध	ध	सां	गं	रीं	सां	सां	सांनि	सां	ध	नि	प
गा	ऽ	य	क	गु	णि	स	रऽ	न	वा	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

सां	सां	सां	सां	सां	सां	म		नि	सां		
नि	नि	नि,	नि	नि	नि	प	—	ध,	नि	सां	सां
जा	ऽ	के,	च	र	ण	ऐ	ऽ	सो,	ए	ऽ	क
×		०		२		०		३		४	

सां			नि			म	प	ध	नि	सां	सां
रीं	सां	सां	ध	नि	प	ग	म	प	ध	नि	निसां
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	स्व	र	वि	ता	ऽ	नऽ
×		०		२		०		३		४	

सां	नि		म	री	
नि	ध	प	प	म	री
पा	ऽ	र	ना	ऽ	हीं
×		०		२	

.... इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग खट - होरी - धमार

स्थायी : येहो कैसी होरी मची नवेली रंगीली
माधुरी छाई अनोखी सुरनकी ।

अंतरा : गावत तानसेन तान, सुनै शाह अकबर
लगे बान हिया में, सुर भरी पिचकारी
ऐसी बरनी न जाये गत वाकी ॥

स्थायी

नि
ये

प पनिप मरी | प - - प - | -, प | ध ध, नि
हो केऽ सी ऽऽ | हो ऽ ऽ री ऽ | ऽ, म | ची ऽ, ये
३ | × | २ | ०

पनि प ग ग | ग प - प - | -, प | ध ध, ध
होऽ के सी ऽ | हो ऽ ऽ री ऽ | ऽ, म | ची ऽ, न
३ | × | २ | ०

सां ध नि प, | नि प - ग म | -, म | नि ध -
वे ऽ ऽ ली, | रा ऽ ऽ ग ऽ | ऽ, रं | गी ऽ ऽ
३ | × | २ | ०

नि - प -, | नि प - ग ग | ग, ग | ग ग, म
ली ऽ ऽऽ, | मा ऽ ऽ धु री | ऽ, छा | ऽ ई, अ
३ | × | २ | ०

प ध निसां, | ग ग गमप | ग री | सा -; री
नो ऽ खीऽ, | सु र नकीऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ; ये
३ | × | २ | ०

सा सा ग ग |
हो के सी ऽ | ----- इत्यादि
३

अंतरा

म म प ध ध | नि प | सां - सां | सां - - सां
गा व त ता ऽ | ऽ न | से ऽ न | ता ऽ ऽ न
× | २ | ० | ३

नि नि नि ध सां नि नि ध
ध ध धसां- | - गं | रीं सां - | ध ध नि प
सु नै ऽथाऽ | ऽ ह | अ क ऽ | ब ऽ ऽ र
× 2 0 ३

प म म नि नि नि ध
म म -,प- | ग म, | ध ध ध | नि - प -
ल गे ऽ,बाऽ | ऽ न, | हि या ऽ | में ऽ ऽ ऽ
× 2 0 ३

नि म म म म म नि नि ध
सा सा री गग, | ग ग | री प प, | ध ध नि म
सु र भ रीऽ, | पि च | का ऽ रि, | ऐ ऽ सी ऽ
× 2 0 ३

ध ध सां नि रीं सां नि नि ध
प प धनिसां | - ,सां | रीं सां नि | ध ध नि प
ब र ऽनीऽ | ऽ, न | जा ऽ ऽ | ये ऽ ग त
× 2 0 ३

म म ध नि सां सां नि म म म
प ग मपध | नि सां | नि ध; प | पनि मप ग ग
वा ऽ ऽकीऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ; ये | होऽ केऽ सी ऽ
× 2 0 ३

राग दरबारीकान्हडा–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः कहालो बिनती करूँ तोरी, मैं गई हार
छाँडो छाँडो, अब मोहे जाने दो गिरधारी।

अंतराः छुप छुप निहरत ब्रिज की ये लुगैया
ठोर ठोर ठोर ठठोरी करत अत
जाओ जाओ ना तो अब दूँगी तोहे गारी॥

स्थायी

सा
म
क

सा	सा री धृ पृ	नि़	सा
री सा,नि़ सा	री री धृ,नि़	मृ पृ, धृ नि़	सा – सा,नि़
हा लो,बि न	ति क रूँ, तो	री मैं, ग ई	हा ऽ र,छाँ
2	0	3	×

म म	प नि	म	नि़ सा	सा
सा री म, प	नि म प, ग	म री, सा नि़	री – सा; म
डो छाँ डो,अ	ब मो हे, जा	ने दो, गि र	धा ऽ री;क
2	0	3	×

अंतरा

प
म
छु

प	सां	सां नि नि	प
प नि प, सां	सां सां सां,नि	सां रीं नि, सां	ध नि प, सां
प छु प, नि	ह र त, ब्रि	ज की ये, लु	गे ऽ या,ठो
2	0	3	×

प	म	सा सा	नि़ नि़ पृ
– सां, नि –	प, ग – म,	री सा नि़, सा	धृ नि़ मृ पृ
ऽ र, ठो ऽ	र, ठो ऽ र,	ठ ठो री, क	र त अ त
2	0	3	×

नि़ सा	प प	म	नि़ सा	सा
धृ नि़ सा री	म प, सां सां	ग म री, सा	नि़ री सा; म
जा ओ जा ओ	ना तो, अ ब	दूँ ऽ गी, तो	हे गा री;क
2	0	3	×

सा	
री सा, नि़ सा	री
हा लो, बि न	ति ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
2	0

राग दरबारीकान्हडा–एकताल(विलंबित)

स्थायी : कौन चूक परी मोंसो, जो तुम छाँडी पीत पुरानी
बालम ना जानूँ अब कैसे सहूँ मन की ये बिथा।

अंतरा : जियरा मनाये नहीं मानत, एक छिनहु
घर अंगना न सुहावे, कासे कहूँ ये कथा॥

स्थायी

नि़सारीमरीसा, नि़सा	रीसा, धनि़प़	री –	री,सारी	ग़ग़,	म	पप
कौंऽऽऽनऽ, चूऽ	ऽऽ, कऽप	री ऽ	मों, ऽऽ	सोऽ,	जो	तुम
४		×	०		२	

निनिपम, पनि	ग़ग़,	ग ग	ग़म, री, सा	री –ग़	सा	नि़सा,
छाँऽऽऽ, ऽऽ	डीऽ,	पी ऽ	ऽऽ त, पु	रा ऽऽ	नी	ऽऽ,
०		३	४	×	०	

मग़ ग़म	–री सासा,	नि़सारीमपसां ग़म	री सा,	म़प़	सा
बाऽ ऽऽ	ऽल ऽम,	नाऽऽऽऽऽ जाऽ	नूँ ऽ,	अब	कै
२	०	३	४	×	

नि़सा री,री	ग ,मप	ग़म ,रीसा	री सा;
ऽऽ से,स	हूँ ,मन	कीऽ ,येबि	था ऽ;
०	२	०	३

अंतरा

,मप, धनि,प	सां निसां	सां ,सां	नि सां,	निसांरीं ,रीं	सां निसां
,जिय, राऽ,म	ना ऽऽ	ये ,न	हीं ऽ,	माऽऽ ,न	त ऽऽ
४	×	०	२	०	३

निनि ,सांरीं	ध ध	नि प,	मप निसां	रीं ,सांरीं	गं मं	रीं सां,
एक ,छिन	हु ऽ	ऽ ऽ,	घर अंग	ना ,नसु	हा ऽ	वे ऽ,
४	×	०	२	०	३	४

प सां नि म प म म
मप निसांरीसां | धनि प, | निनिपम,पनि गग | म ,रीसा
काऽ सेऽऽऽ | कऽ हूँ, | येऽऽऽ,ऽऽ ऽऽ | ऽ ,कऽ
× | ० | २ | ०

सा सा नि
री सा, || निसारीमरीसा, निसा, रीसा, धनि,प | री
था ऽ ; || कौंऽऽऽनऽ, चूऽ ऽऽ, कऽ, प | री ...... इत्यादि
३ || ४ | ×

राग अडाणा–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः थेई ता थेई ता थेई थेई ता

निरत करत श्यामसुन्दर।

अंतराः झाँझ मृदंग ढप ताल परन संग

नाचत आनन्दसों दिग दिग ता दिग दिग थेई॥

स्थायी

प
रीं सां
थे ई

सां प नि नि नि नि सां नि
रीं,नि सां प, | नि म प सां | सां – ध – | नि सां,रीं सां
ता, थे ई ता, | थे ई थे ई | ता ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ, थे ई
० | ३ | × | २

सां प नि नि
रीं,नि सां प, | नि म प सांरीं | सां – नि ध | नि – प –,
ता, थे ई ता, | थे ई थे ईऽ | ता ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ,
० | ३ | × | २

प प म प ध म म नि सा
म म प, प | नि नि, ग – | ग म री,सा | री सा ; रीं सां
नि र त, क | र त, श्या ऽ | ऽ ऽ म, सु | न्द र ; थे ई
० | ३ | × | २

अंतरा

प नि सां नि सां सां नि नि ध
म प ध, नि | सां सां सां सां, | नि सां रीं, रीं | सां ध नि प
झाँ ऽ झ, मृ | दं ग ढ प, | ता ऽ ल, प | र न सं ग
0 | ३ | × | २

प सां मं सां सां प
म प नि, सां | गं मं रीं सां, | नि सां रीं, नि | सां निप,रीं सां
ना च त,आ | न ऽ न्द सों, | दिग दिग ता,दिग | दिग थेई, थे ई
0 | ३ | × | २

सां
रीं, नि सां प, |
ता, थे ई ता, | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
0

राग अडाणा – सूलताल (मध्यलय)

स्थायी : कहालों कीजे बखान, गुन को महा प्राण

गायक गुनि सुनि सुनि, देत बधैया।

अंतरा : सुर लय राग ताल रसहुँ भये अधीन

गीत सिंगार सबै साज सजैया॥

संचारी : ग्यानी गुन निधान ऐसो पिया प्रेम

नाद समुन्दर को एक तरैया॥

आभोग : चकित भये 'सुजान', वन्दन किये चरण

गुरु फैयाज़ नाम, राग रिझैया॥

स्थायी

सां सां सां नि सां नि
नि नि | सां – | रीं सां | रीं सां | निध नि || रीं रीं | सां – | रीं सां | रीं सां | धनि प
क हा | लों ऽ | की जे | ब खा | ऽऽ न || क हा | लों ऽ | की जे | ब खा | ऽऽ न
× | 0 | २ | ३ | 0 || × | 0 | २ | ३ | 0

प प प म नि म म प प
म मप | सां –, | नि प | गम री | – सा, || सा – | री री | ग ग | म म | प प
गु नऽ | को ऽ, | म हा | ऽऽ प्रा | ऽ ण, || गा ऽ | य क | गु नि | सु नि | सु नि
× | 0 | २ | ३ | 0 || × | 0 | २ | ३ | 0

रीं - | सां,रीं | सां - | ग म | प सां ||
दे ऽ | त,ब | धै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ ||
× | ० | २ | ३ | ०

अंतरा

म म | प प | धृ - | नि सां | - सां || सांसांनि | रीं - | सां सां | रीं ध | नि प
सु र | ल य | रा ऽ | ग ता | ऽ ल || र सऽ | हुँ ऽ | भ ये | अ धी | ऽ न
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

गं - | गं,मं | रीं - | सां रीं | सां - || ध नि | रीं,रीं | सां - | ध नि | सां -
गी ऽ | त,सिं | गा ऽ | र स | बे ऽ || सा ऽ | ज,स | जै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

संचारी

सां - | ध - | ध ध | ध ध | नि प || म प | ध नि | सां सां | - ध | नि प
ज्या ऽ | नी ऽ | गु न | नि धा | ऽ न || ऐ ऽ | सो ऽ | पि या | ऽ प्रे | ऽ म
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

ग म | नि,प | म प | ग म | री सा || सा री | म प | ध - | नि - | प -
ना ऽ | द,स | मु ऽ | न्द र | को ऽ || ए ऽ | क त | रै ऽ | या ऽ | ऽ ऽ
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

आभोग

नि नि | नि नि | नि नि | सां सां | - सां || नि सां | रीं रीं | सांरींसां | ध,नि | सां सां
च कि | त भ | ये ऽ | सु जा | ऽ न || व ऽ | न्द न | किऽये | ऽ,च | र ण
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

गं गं | गं - | गं गं | मं रीं | सां सां || नि सां | मं रीं | सां - | ग म | प सां
गु रु | फे ऽ | या ऽ | ज़ ना | ऽ म || रा ऽ | ग रि | झे ऽ | या ऽ | ऽ ऽ
× | ० | २ | ३ | ० || × | ० | २ | ३ | ०

टीपः गुरुवर्य 'आफ्ताब-ए-मोसीक़ी' उस्ताद फैयाज़ हुसैन ख़ाँ की पुण्यस्मृति में इस गीत की रचना की गई है।

राग अडाणा–तराना–सूलफाक(मध्यलय)

स्थायीः दिर दिर तनद्रे तनद्रे ताद्रे दीम् दीम्
तदियानारे तदारेदानी द्रियानारे
तोम् तदानी तारे दानी तन तदानी तोम्।

अंतरा : ना दिर दिरदानी तुं दिर दिर दिर दिर दिर
तन तुं दिर दिर दानी, धा किट तक
धुम किट तक धेत्तक धिलांग धा,
तक धिलांग धा, तक धिलांग धा ॥

स्थायी

नि सां	रीं नि	सां, प	नि प,	प सांरीं
दिर दिर	त न	द्रे, त	न द्रे,	ता द्रेऽ
×	०	२	३	०
सां ध	—, नि	प —,	म म	पनि मप
दी ऽ	म्, दी	ऽ म्,	त दि	याऽ नाऽ
×	०	२	३	०
ग, म	री री	सा सा,	नि़ सा	री म
रे, त	दा रे	दा नी,	द्रि या	ना रे
×	०	२	३	०
प नि,	ध नि	सां सां,	गं मं	रीं, सां
तो म्,	त दा	ऽ नि,	ता ऽ	रे, दा
×	०	२	३	०
— सां,	नि सां	रीं नि	ध नि	सां —
ऽ नि,	त न	त दा	ऽ नि	तो म्
×	०	२	३	०

अंतरा

ग	गंमं	रीं	सां	–	सां,	ध	ध	नि	नि		
ना	दिर	दिर	दा	ऽ	नि,	तुं	दिर	दिर	दिर		
×		0		2		3		0			
सां	सां,	नि	सां	रीं	सां	रीं	, ध	नि	प,		
दिर	दिर,	त	न	तुं	दिर	दिर	, दा	ऽ	नि,		
×		0		2		3		0			
नि	सा	मग	, म	प	ध,	नि	सां	रींसां	–रीं		
धा	किट	तक	, धुम	किट	तक,	धे	त्तक	धिलां	ऽग		
×		0		2		3		0			
सां	–,	नि	सांरीं	–रीं	ध	नि,	म	पध	–नि		
धा	ऽ,	तक	धिलां	ऽग	धा	ऽ,	तक	धिलां	ऽग		
×		0		2		3		0			
सां	– ;	रीं	नि	सां,	प	नि	म,	प	सांरीं		
धा	ऽ;	त	न	द्रे,	त्त	न	द्रे,	ता	द्रेऽ		
×		0		2		3		0			
सां	ध	–,	नि	प	–,						
दी	ऽ	म,	दी	ऽ	म,	इत्यादि स्थायीके अनुसार					
×		0		2							

राग अडाणा – एकताल (विलंबित)

स्थायी: हे गिरधारी बिनती यही हमारी

सुन लीजियो बनवारी।

अंतरा: गोकुल छाँडिके और ढिंग ना जैयो

हमरे गुन्हा पर रीस न कीजो

सुन लीजियो बनवारी॥

स्थायी

नि प | नि,मप ,पसां | सां निध | निसां सां | निसांरीं- ,सांरीं
हे ऽ | ऽ,ऽऽ ऽ,गिर | धा ऽऽ | ऽऽ री | बिनतीऽ ,यऽ
३ | ४ | × | ० | २

सांध ,नि || सांध नि | प,म,मप | सां,निप | ग ग | म ,रीसा | री सा
हीऽ ,ह || माऽ ऽ | री,सु,नऽ | ली,जिऽ | यो ऽ | ऽ ,बन | वा री
० || ३ | ४ | × | ० | २ | ०

अंतरा

मप ,धनि | सां निध | नि धनिसां,नि | सां निसां | निसां रीं,सांरीं | सां ध
गोऽ ,कुल | छाँ ऽऽ | ऽ ऽऽऽ,डि | कै ऽऽ | ओर ढिं,गऽ | ना ऽ
४ | × | ० | २ | ० | ३

नि प, | मप नि,सां | गं गंमं | रीं सां | रीं सां,सांरीं | सांध नि ||
जै यो, | हम रे,गु | न्हाऽऽ | प र | री स,नऽ | कीऽ ऽ ||
४ | × | ० | २ | ० | ३

प,म,मप | सां ,निप | ग ग | म ,रीसा | री सा; ||
जो,सु,नऽ | ली ,जिऽ | यो ऽ | ऽ ,बन | वा री; ||
४ | × | ० | २ | ० ||

राग अडाणा - ध्रुवपद - चौताल

स्थायी : तेरो ही नाम रहे, कीरत जसहूँ रहे
अजरामर काज रहे, लोक पालनहार।

अंतरा : परताप प्रबल रहे, ताप हार दीनन को
दुष्टन को ताप करन, दुखियन को आधार॥

संचारी : ग्यानवंत गुनवंत, दयावंत दानवंत
भूपत नरपत, भरन पोखनहार॥

आभोग : राज राज महाराज, चिरंजीव रहो बिराज
जोलो चान्द सूरज, धरनी ध्रुव तार॥

स्थायी

रीं	-	सांरीं	सां	ध	नि,	सां	-	सां,	ध	नि	प
ते	ऽ	ऽऽ	रो	ऽ	ही,	ना	ऽ	म,	र	ऽ	हे
×		0		2		0		3		4	
ग	ग	ग	म	नि	प,	ग	ग	म,	री	-	सा
की	ऽ	ऽ	र	ऽ	त,	ज	स	हूँ,	र	ऽ	हे
×		0		2		0		3		4	
नि़	सा	री	-	सा	सा,	म	प	ध,	नि	सां	-
अ	ज	रा	ऽ	म	र,	का	ऽ	ज,	र	हे	ऽ
×		0		2		0		3		4	
सां	-	सांनि	रीं	-	सां	नि	सां	-,	ध	नि	सां
लो	ऽ	कऽ	पा	ऽ	ल	न	ऽ	ऽ,	हा	ऽ	र
×		0		2		0		3		4	

अंतरा

×		0		2		0		3		४	
(प)म	(प)म	प	(नि)ध	(नि)ध	(सां)नि,	सां	सां	सां ,	(नि)सां	—	सां
प	र	ऽ	ता	ऽ	प,	प्र	ब	ल ,	र	ऽ	हे

×		0		2		0		3		४	
(सां)नि	सां	सां	(नि)रीं	—	सां,	(सां)नि	सांरीं	(नि)ध	(ध)नि	प	—
ता	ऽ	प	हा	ऽ	र,	दी	ऽऽ	न	न	को	ऽ

×		0		2		0		3		४	
(प)म	प	(सां)नि	सां	(मं)गं	मं,	रीं	—	सां ,	रीं	सां	सां
दु	ऽ	ष्ट	न	को	ऽ,	ता	ऽ	प ,	क	र	न

×		0		2		0		3		४	
(नि)ध	नि	रीं	रीं	सां	—,	(सां)नि	सां	—	(नि)ध	(सां)नि	सां
दु	खि	य	न	को	ऽ,	आ	ऽ	ऽ	धा	ऽ	र

संचारी

×		0		2		0		3		४	
(नि)सा	—	सा	(नि)ध	(नि)ध	(नि)ध,	(नि)ध	(नि)ध	(नि)ध	(नि)ध	नि	प
म्या	ऽ	न	व	ऽ	न्त,	गु	न	ऽ	व	ऽ	न्त

×		0		2		0		3		४	
(प)म	(प)म	प	(नि)ध	—	(सां)नि,	सां	—	सां	(नि)ध	नि	प
द	या	ऽ	व	ऽ	न्त,	दा	ऽ	न	व	ऽ	न्त

×		0		2		0		3		४	
(म)ग	(म)ग	(म)ग	(प)म	—	प,	(म)ग	(म)ग	म	(सा)री	—	सा
भू	ऽ	ऽ	प	ऽ	त,	न	र	ऽ	प	ऽ	त

(सा)नि़ सा	(म)री (प)म	प (नि)ध,	(सां)नि सां	सां (नि)ध	नि प
भ र	ऽ न	ऽ ऽ,	पो ख	न हा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

आभोग

(प)म –	प, (नि)ध	– (सां)नि,	(नि)सां सां	–, (नि)सां	– सां
रा ऽ	ज, रा	ऽ ज,	म हा	ऽ, रा	ऽ ज
×	०	२	०	३	४
(सां)नि सां	– (मं)गं	मं रीं,	(नि)सां (सां)सां	रीं (नि)ध	नि प
चि रं	ऽ जी	ऽ व,	र हो	बि रा	ऽ ज
×	०	२	०	३	४
(मं)गं (मं)गं	(मं)गं (पं)मं	– पं,	(मं)गं –	मं, रीं	रीं सां
जो ऽ	ऽ लो	ऽ ऽ,	चा ऽ	न्द, सू	र ज
×	०	२	०	३	४
(सां)नि सां	रीं –,	(नि)सां सां	(सां)नि (सां)सां	रीं (नि)ध	(सां)नि सां
ध र	नी ऽ,	ध्रु व	ता ऽ	ऽ ऽ	ऽ र
×	०	२	०	३	४

राग कौंसीकान्हडा (मालकंस अंग) – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: काहे करत मोंसे बरजोरी
ग्वार गुँसैया परहु पैंया।

अंतरा: बार बार बरजो नहीं माने
जाओ जाओ अब छेडो ना कान्ह
देखो निरखि हँसत सब ब्रिज की नारी॥

स्थायी

नि सां नि ध प म ग ग म ग री नि
, सां – नि | ध प म ग | री – ग, म | ग री सा सा
, का ऽ हे | क र त मों | से ऽ ऽ, ब | र जो ऽ री
0 | 3 | × | 2

नि नि सा ध नि सां
–, ध़ नि़ सा | म – (म) ग | –, म ध नि | सां – गंसां नि
ऽ, ग्वा र् गुँ | से ऽ या ऽ | ऽ, प र हु | पैं ऽ याऽ ऽ
0 | 3 | × | 2

नि
धनि; सां – नि |
ऽऽ; का ऽ हे | --- इत्यादि
0 |

अंतरा

म म नि नि रें सां
ग – ग, म | – म, ध ध | मध निसां सां सां | नि नि सां –
बा ऽ र, बा | ऽ र, ब र | जोऽ ऽऽ न हीं | मा ऽ ने ऽ
0 | 3 | × | 2

नि नि ध प म ग ग नि सा
सां – नि, ध | प म ग री, | री ग मग री | – सा, ध़ नि़
जा ऽ ओ, जा | ऽ ओ अ ब, | छे डो नाऽ का | ऽ न्ह, दे खो
0 | 3 | × | 2

ग म ध नि ध नि सां नि सां नि
सा ग म, ध | म ध, नि सां, | ध नि सां – | सां – सांनि धनि
नि र खि, हँ | स त, स ब, | ब्रि ज की ऽ | ना ऽ रीऽ ऽऽ
0 | 3 | × | 2

नि
सां; सां – नि |
ऽ; का ऽ हे | ---- इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 |

राग कौंसीकान्हडा(मालकौंस अंग) तिलवाडा(विलंबित)

स्थायी: दैया दिन दूने, एक घरी पल छिनहु

नहीं चैन आवे |

अंतरा: बिरम रहे बालम परदेस

हम बिरहन की ये गत कौन सुने, काको सुनावे ||

स्थायी

रीगम- रीसा धनि़ सा, साम | म ग मधनिसां धनि | ध म -

दैsss याs ss s, दिन | दू s नेsss ss | ए कs

३ × २

,गम | री सा - ,नि़सा | ध़ नि़ सा ,साम | म - ग री |

,घरी | प ल s ,छिन | हु s s ,नहीं | चै s s न |

० ३ ×

सा री नि़ सा | सारीगप म ग री; || रीगम- रीसा

आ s s s | वेsss s s s; || दैsss याs ... इत्यादि

२ ० ३

अंतरा

सांसां सां,सां धपमग मधनिसां | सां - निसां सां | सांसां गंमं रीं सां

बिर म,र हेsss ssss | बाs ss लम | पर देs s स

३ × २

निनि सांसां धनि धम || ग म रीसा | धनि़ ,साम म ग |

हम बिर हन कीs || ये s ग त | कौंs ,नसु ने s |

० ३ ×

गमधनि सां धनि ,ध | म गम ग सा; || रीगम- रीसा इत्यादि स्थायी

काsss s कोs ,सु | नाss वे s; || दैsss याs के अनुसार

२ ० ३

राग भैरवी-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ग रे सा नि़,	सा ग म ध	प –, प नि	ध प म, ग
०	३	×	२
– रे सा नि़,	सा ग म ध	प –, प नि	ध प म ग,
०	३	×	२
म प म ग	रे सा, नि़ सा	ग म प ध	नि सां –, सां
०	३	×	२
ग म प ध	नि – –, नि़	सा ग म प	ध –, प म
०	३	×	२

अंतरा

नि ध प, ग	म ध – नि	सां –, सां नि	सां रें सां –,
०	३	×	२
सां रें गं मं	गं रें सां, गं	– रें, सां नि	ध प म, ग
०	३	×	२
– रे सा –,	नि़ सा ग म	प ध नि सां	नि ध प म
०	३	×	२

राग भैरवी-लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : गुनिजन बरनत भैरवी रागनी
सम्पूरन मृदु रिगमधनि युत
मध्यम वादी खरज सुर सहचर।

अंतरा : दिन दूजे पहर गाये सुलच्छन,चतुर बखानत
सुनो 'सुजान', उपजत रस अनुराग सुनत ही
सोहत मोहत मन अत सुन्दर॥

स्थायी

नि		री	नि
सा री ग म	प म ग भ	ग - सा री	सा - ध नि
गु नि ज न	ब र न त	भै ऽ र वी	रा ऽ ग नी
०	३	×	२

नि	ग सा	ग म ध नि	
सा - सा -	री सा,नि सा	री ग म ध	नि (नि) ध प
स ऽ म्पू ऽ	र न,मृ दु	री ग म ध	नि ऽ यु त
०	३	×	२

नि	म री नि	म	म री
ध प म म	ग ग री,सा	सा री ग म	ग ग री सा
म ऽ ध्य म	वा ऽ दी,ख	र ज सु र	स ह च र
०	३	×	२

अंतरा

नि म	नि नि		नि
ध प ग म	ध,ध नि नि	सां - सां,सां	सां - सां सां
दि न द् ऽ	जे, प्र ह र	गा ऽ ये,सु	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२

प सां			नि
नि नि नि,नि	सां - सां सां,	रीं सां नि,सां	ध प - प
च तु र,ब	खा ऽ न त,	सु नो ऽ,सु	जा ऽ ऽ न
०	३	×	२

म	नि	ग	ग ग
प प प प	ध प,म म	प म ग,म	री री सा -
उ प ज त	र स,अ नु	रा ऽ ग,सु	न त ही ऽ
०	३	×	२

सा म	नि	गं नि	म री
नि सा ग म,	प ध नि सां,	रीं सां ध प,	ग ग री सा
सो ऽ ह त,	मो ऽ ह त,	म न अ त,	सु ऽ न्द र
०	३	×	२

राग भैरवी–कहरवा(मध्यलय)

स्थायी : बिन कर्तब कस जीवन तेरो
नर तन अमोल पायो जग मों
कुछ कर काज 'सुजन' उपजूगत।

अंतरा : शुद्ध चरित रखि निर्मल तन मन
कीजो दुःखित कष्ट निवारन
देश समाज विबुध जन सेवा
कर सार्थक मनुख जीवन नित॥

स्थायी

सा	म री	नि	
म म प म	ग ग,री सा	सा री ग ग	म - म -
बि न क र	त ब,क स	जी ऽ व न	ते ऽ रो ऽ
×	0	×	0
म	नि ध	ध	ध नि
प प प प	ध सां - सां	नि - नि (नि)	प ध प -
न र त न	अ मो ऽ ल	पा ऽ यो ऽ	ज ग मों ऽ
×	0	×	0
म नि	म	म	म री
प प ध प	म - म, ग	ग म,प म	ग ग री सा
कु छ क र	का ऽ ज, सु	ज न,उ प	जू ऽ ग त
×	0	×	0

अंतरा

म	म नि नि सां	नि	नि नि
प - प,प	ध ध नि नि	सां सां सां सां	सां सां सां सां
शु ऽ द्ध,च	रि त र खि	नि र म ल	त न म न
×	0	×	0
नि	गं	नि गं	नि
सां रीं गं(गं)	रीं - सां सां	सां - रीं,सां	ध - प प
की ऽ जो ऽ	दुः ऽ खि त	क ऽ ष्ट,नि	वा ऽ र न
×	0	×	0

म प – प, ध	नि नि – नि, नि	सां सां सां रीं सां	नि ध – प –
दे ऽ श, स	मा ऽ ज, वि	बु ध ज न	से ऽ वा ऽ
×	०	×	०

ध प प पध, निसां	सां नि ध प, म	म ग ग, म म	ग प म री ग ग री सा
क र साऽ, ऽऽ	र थ क, म	नु ख, जी ऽ	व न नि त
×	०	×	०

राग भैरवी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सगुन शुभ सोच बिचार कह दे रे बमना

साजन परदेस बिरम रहे

वाहू के आवन घरी पल छिन दिना।

अंतरा : चैन नहीं दिन, निंदिया रैन नहीं

तरपत हूँ मीन जल बिन जैसे

बाट जुहत छिन छिन, नीर झरत नैना ॥

स्थायी

ग री स

सा नि़ सा ग म म	प – प, नि प	नि ध प ग, प ध	म म प ग सा री री
गु न शु भ	सो ऽ च, बि	चा ऽ र, क	ह दे ऽ रे
३	×	२	०
सा नि़ सा ग, म म प	प प, ध प नि	पधनि, सांरीं सां नि	ध प ध प म
ब म ना, सा	ज न, प र	देऽऽ, ऽऽ स बि	र म र हे
३	×	२	०
म प प प, ध	प म, सा ग नि	मप, म ग सा री ग	री सा –; री सा
वा हू के, आ	व न, घ रि	पऽ, ल छि न	दि ना ऽ; स
३	×	२	०

अंतरा

नि म	नि नि सां	सां	नि
ध प ग म	ध ध, नि नि	सां - -, रीं	नि सां सां सां
चै न न हीं	दि न, निं दि	या S S, रै	S न न हीं
0	3	×	2
ध सां	सां गं	सां	नि
प ध नि सां	गं, रीं - सां	नि सां रीं सां	ध - प -
त र प त	हूँ, मी S न	ज ल बि न	जै S से S
0	3	×	2
म री ग	सा	म	सां नि ध म
ग - सा, री	सा सा, नि़ सा	ग म, पध निसां	नि, ध प ग
बा S ट, जु	ह त, छि न	छि न, नीS SS	र, झ र त
0	3	×	2
ग री ग	सा म		
री सा -; री	नि़ सा ग म		
नै ना S; स	गु न शु भ	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार	
0	3		

राग भैरवी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : उनको ले आओ मनाय्, गुजरिया
कहो सखी तरपत निसदिन जिया मोरा
घबराय् अकुलाय्, गुजरिया।

अंतरा : दिन नाहीं चैन, निंदिया न रैन
जाय कहो समझा, मानत नाहीं मनाय्
गुजरिया उनको ले आओ मनाय् ॥

स्थायी

नि़ सा
उ

	री री	नि़	सा नि़
ग साग मप, म	ग - सा, री	सा -, सा री	नि़ सा -, सा
न कोS SS, ले	आ S ओ, म	ना य्, गु ज	रि या S, उ
0	3	×	2

ग॒ साग॒ मप म	ग॒ – सा, री	सा सा –, प	प ध॒ प –
न कोऽ ऽऽ ले	आ ऽ ओ, म	ना य ऽ, गु	ज रि या ऽ
०	३	×	२
ध॒ नि प ध॒	म प ग॒ म	री ग॒ सा री	ग॒ मप ध॒, पम
क हो के से	त र प त	नि स दि न	जि याऽ ऽ, मोऽ
०	३	×	२
(ग॒) –, सा री	(म) –, सा री	सा सा, प ध॒	प (ग॒) –; सा
रा ऽ, घ ब	रा य, अ कु	ला य, गु ज	रि या ऽ; उ
०	३	×	२

अंतरा

सां ध॒ – नि॒	सां – सां, सां	नि॒ सांरीं ग॒ं, सां	(ध॒) – प, ग॒
न ना ऽ हीं	चै ऽ न, निं	दि याऽ ऽ, न	रै ऽ न, दि
३	×	२	०
म ध॒ – नि॒	सां – सां, सां	नि॒ सांरीं ग॒ं, सां	ध॒प मप – प
न ना ऽ हीं	चै ऽ न, निं	दि याऽ ऽ, न	रैऽ ऽऽ ऽ न
३	×	२	०
ग॒ – प प	पध॒ नि, म म	ग॒ –, सा री	ग॒म पध॒ प म
जा ऽ य क	होऽ ऽ, स मु	झा ऽ, म न	माऽ ऽऽ न त
३	×	२	०
ग॒ – सा, री	सा सा, सा री	नि॒ सा –; सा	ग॒ साग॒ मप म
ना ऽ हीं, म	ना य, गु ज	रि या ऽ; उ	न कोऽ ऽऽ ले
३	×	२	०

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग भैरवी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : बार बार बरजो नहीं माने
ऐसो ढीट लंगर कर पकर
पकर मोरी बैंया मरोरी कर बरजोरी।

अंतरा : लाज आवत नहीं नेकहु या गत
निपट निठुर निठुराई करत अत
गारी देत ब्रिज नारी हारी हारी ॥

स्थायी

सा॒ग॒ मप म (ग)	– री, सा री	सा –, ध़ नि़	सारी ग रीसा नि़सा
बाऽ ऽऽ र बा	ऽ र, ब र	जो ऽ, न हीं	माऽ ऽ नेऽ ऽऽ
0	3	×	2
–, सा – सा,	नि़ सा री, सा	ध़ प़, ध़ प़	ध़ ग री, ग
ऽ, ऐ ऽ सो,	ढी ऽ ट, लं	ग र, क र	प क र, प
0	3	×	2
सा री, ग प	ग प ध, सां	नि ध, प म	ग री सा नि़
क र, मो री	बैं या ऽ, म	रो री, क र	ब र जो री
0	3	×	2

अंतरा

सां – ध, नि	सां सां ध नि	सां – सां नि	सांरीं गं रीं सां
ला ऽ ज, आ	व त न हीं	ने ऽ क हु	याऽ ऽ ग त
0	3	×	2
प ध नि, सां	रीं गं, रीं गं	गं(गं) – रीं, सां	रीं सां ध नि
नि प ट, नि	ठु र, नि ठु	राऽ ऽई, क	र त अ त
0	3	×	2

सांरीं गंरींसां ध	- प,ग म	गम प म,ग	म री - सां;
गाऽ ऽरीऽ दे	ऽ त,ब्रि ज	नाऽ ऽरी,हा	री हा ऽ री;
०	३	×	२

राग भैरवी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः फुलगेंदवा अब ना मारो
मैंको न छेरो रे नन्द दुलारो
बस करो अपनी ढिटाई निपट कन्हाई
करूँगी लराई, अब ना मारो।

अंतराः कैसे नीलज निठोर तुम हो
जो मोंसे इतनी ठठोरी करत कुँवर कान्हा
जाओ जाओ जाओ, चित ना लुभाओ
नेहा ना लगाओ, मोहे ना मनाओ, अब ना मारो॥

स्थायी

ध
फु

प ग - म	प - - -,	ध म प ध	सां नि -, ध
ल गें ऽ द	वा ऽ ऽ ऽ,	अ ब ना ऽ	मा रो ऽ, फु
३	×	२	०
प ग - म	प - -, ध	म ग री सा	-, गं सां नि
ल गें ऽ द	वा ऽ ऽ, अ	ब ना मा रो	ऽ, मैं को ना
३	×	२	०
ध प - नि,	ध प म री	- सा, सा गं	रीं गं -, रीं
छे रो ऽ रे,	न न्द दु ला	ऽ रो, ब स	क रो ऽ, अ
३	×	२	०

सां धृ – नि | सां – सां, री | सा धृ – नि़ | सा – सा, धृ
प नी ऽ ढि | टा ऽ ई, नि | प ट ऽ क | न्हा ऽ ई, क
३ | × | २ | ०

प ग – म | प – – प, | ध म प ध | सां नि – ; ध
रूँ गी ऽ ल | रा ऽ ऽ ई, | अ ब ना ऽ | मा रो ऽ ; फु
३ | × | २ | ०

प ग – म | प
ल गें ऽ द | वा .... इत्यादि
३ | ×

अंतरा

नि़ सा –, ग | म ध –, नि | सां – – गं, | सां नि ध –
के से ऽ, नि | ल ज ऽ, नि | ठो ऽ ऽ र, | तु म हो ऽ
० | ३ | × | २

– –, नि सां | सां रीं गं, रीं | सां प –, ध | प – – ध
ऽ ऽ, जो ऽ | मों से ऽ, इ | त नी ऽ, ठ | ठो ऽ ऽ री
० | ३ | × | २

–, रीं सां नि | ध प म री | – सा –, सा | ग, म ध, नि
ऽ, क र त | कुँ व र का | ऽ न्हा ऽ, जा | ओ, जा ओ, जा
० | ३ | × | २

सां – –, रीं | सां ध –, नि | सां – सां, री | सा धृ –, नि़
ओ ऽ ऽ, चि | त ना ऽ, लु | भा ऽ ओ, ने | हा ना ऽ, ल
० | ३ | × | २

सा – सा, ध | प ग –, म | प – – प; | ध म प ध
गा ऽ ओ, मो | हे ना ऽ, म | ना ऽ ऽ ओ; | अ ब ना ऽ
० | ३ | × | २

ध़ ध़ नि़	म		
सां नि –,ध	प ग – म	प	
मा रो ऽ,फु	ल गें ऽ द	वा.....	इत्यादि स्थायी के अनुसार
0	3	×	

राग भैरवी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: देखो कन्हैया बरजोरी करो ना अब

गारी दूँगी, जाय जसोदा रानी से कहूँगी

ना डरूँगी तोसे लरूँगी आज।

अंतरा: ना माने बरजो बार बार कान्ह

तुम अतही निपट निडर धीट लंगर

नाहीं नाहीं काहू की तनिकहुँ तोको लाज॥

स्थायी

म नि	म	नि प	म
,ध प ध	म प, ग म	पध निसां नि, ध	म प ग म
, दे खो क	न्है या, ब र	जोऽ ऽऽ री, क	रो ना अ ब
0	3	×	2
ग	सा	नि सां	रीं नि
पध निम मग, री	– सा, सां –	ध, नि सां रीं	ग – म ध
गाऽ ऽऽ रीऽ, दूँ	ऽ गी, जा ऽ	य, ज सो दा	रा ऽ नी से
0	3	×	2
सां	नि	ध नि	ग ग
– नि सां रीं,	सां – –, प	ध नि, ध प	री ग म री
ऽ क हूँ गी,	ना ऽ ऽ, ड	रूँ गी, तो से	ल रूँ गी आ
0	3	×	2

प	प
सासा; ध प ध	म प
ऽज; दे खो क	न्है या..... इत्यादि
0	3

अंतरा

रीं सां धृ, ग | म ध – नि | सांरीं गंमं गं, रीं | सां सां, प गं
ना मा ने, ब | जौं बा ऽ र | बाऽ ऽऽ र, का | ऽ न्ह, तु म
0 | 3 | × | 2

रीं मं गं, सां | गं रीं, नि रीं | सां, प नि धप | ग प म, नि
अ त ही, नि | प ट, नि ड | र, धी ऽटऽ | लं ग र, ना
0 | 3 | × | 2

री ग प, ध | सां गं, रीं सां | ध प म गरी | गम पम गरी सासा
हीं ना हीं, का | हूँ की, त नि | क हुँ तो कोऽ | लाऽ ऽऽ ऽऽ ऽज
0 | 3 | × | 2

–; ध प ध | म प
ऽ; दे खो क | न्है या ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0 | 3

राग भैरवी–झूमरा (विलंबित)

स्थायी: हे उधो रे जाय कहो, गोकुल बिंद्राबन
ब्रिज-बासिन को इतनो संदेसवा मोरा
देहो बताय।

अंतरा: पीत पुरानी ग्वार गुपालन ब्रिज नारिन की
बिसुरत नाहीं परदेसी कान्ह, निसदिन तरपत
जियरा हमरो, देहो समझाय ॥

स्थायी

सारी म,री सा री नि | सा – ,धपध | नि धनिसा– सारीग– ,सारी |
हेऽ ऽ,उ धो ऽरे | जाऽ ,ऽऽऽ | ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ,यक |
3 | × | 2

सा – , सा ‖ रीरी नि़ सारी गम | म गग , मप | मगम– –
हो ऽ , गो ‖ ऽऽ ऽ कुल बिंद | रा बन , ब्रिज | बाऽऽऽ ऽ
0 ‖ 3 | × | 2

रीरी सा, | सासा रीसा,नि़सागम पध,प ‖ प –ध प – |
सिन को, | इत नोऽ,ऽऽऽऽ ऽऽ,सं ‖ दे ऽस वा ऽ |
| 0 ‖ 3

धपमगरीसानि़सा ग(ग) रीसा | धसा –री गम प,म | री नि़ सा; ‖
मोऽऽऽऽऽऽऽ राऽ ऽऽ | देऽ ऽऽ होऽ ऽ,ब्र | ता ऽ य; ‖
× | 2 | 0

अंतरा

संरींगं,सांरीं सां,धनि | गं(गं) – सांरीं | सां – धनिसां– सांसां |
पीऽऽ,त पु रा,नीऽ | ख्वाऽ ऽ र,गु | पाऽ ऽऽऽऽ लन |
| × | 2

पध निसांरीं– निसां ‖ ध प ,पप धध | पम प म | गग सागमपध– – –
ब्रिज नाऽऽऽ रिन ‖ की ऽ ,बिस रत | नाऽ ऽ हीं | पर देऽऽऽऽऽऽऽ
0 ‖ 3 | × | 2

– –,पम गमपम | री – सा, ‖ रीनि़ सारी गग मम | गमधनि सां,रींसां धप
ऽऽ,सीऽ ऽऽऽऽ | का ऽ न्ह, ‖ निस दिन तर पत | जियराऽ ऽ,हम रोऽ
| 0 ‖ 3 | ×

गमपनि ,धपमग म,गम ,पम | री – सा; ‖ रीसा,नि़सारीप –,म
देऽऽऽ ,होऽऽऽ ऽ,ऽऽ ,सम | झा ऽ य; ‖ हेऽ,ऽऽऽऽ ऽ,उ
2 | 0 ‖ 3

री सा,रीनि़ | सा
धो ऽ,ऽरे | जा ..... इत्यादि स्थायी के अनुसार
| ×

राग भैरवी–वर्णम्–आदिताल

पल्लवी : श्वेताम्बरा केयं ध्यानस्था
कोमलांगिणी घोरं तप आचरंती।

अनुपल्लवी: कः सौभाग्यशाली नायकोऽस्याः
यदालिंगनोत्सुका देहं कष्टयन्ती॥

चरणम् : धन्येयं भैरवी भैरवार्धांगी॥

पल्लवी

सां––,रीं सांनिधप, धनिधप मग,मप | मगरीसा निसा,गम | प,गमध निसां,धनि
श्वेऽऽ,ता ऽऽऽऽऽ, ऽऽम्बरा ऽऽ,केऽ | ऽऽयंऽ ऽऽ,ध्याऽ | ऽ,नऽऽ ऽऽ,स्थाऽ
× | 2 | 3

सांरींगंरीं सां,धनिसां निधपम, धपमग | –,निधप मप,सांनि | धप,धनि गंरींसांनि॥
कोऽऽम ऽ,लंऽऽ गिणीऽऽ,घोऽऽरं | ऽ,तपआ ऽऽ,चरं | ऽऽ,ऽऽ तीऽऽऽ॥
× | 2 | 3

अनुपल्लवी

गं––,रीं सांनि,धनि सां,पधनि, मपध,ग | मप,मग रीसानिसा, | मगसाग,धपमप
कःऽऽ,सौ ऽऽ,भाऽ ग्य,शाऽऽ, लीऽऽ,ना | ऽऽ,ऽय कोऽ ऽऽ, | स्याःऽऽऽ,यदाऽऽ
× | 2 | 3

सांनिधनि,सांरींगंरीं सां––,नि धपधनि, | धपम,प म,गमग | रीसा,रीग मपधनि॥
लिंऽऽऽ ऽऽऽग नोऽऽ,त्सु काऽऽऽ, | देऽऽ,हं ऽ,कऽष्ट | यंऽ,तीऽ ऽऽऽऽ॥
× | 2 | 3

मुक्तायंपू

धप,धनि प,धनिप, धनिसां,प धनिसां,म | पधनि,ग मपध,रे | गमप,सा रेगमग
× | 2 | 3

धपम,नि धप,रेंसां नि,गंरेंसां, मं––,गं | मंसां–,रें गंनि–,सां | रेंध–,नि सांप–,ध
× | 2 | 3

निम–,म पधनिसां, गमपध नि,रेगम | पध,सारे गमप,सा | –सा,ग– ग,म–म
× | 2 | 3

प–प,ध –ध,नि–, निगंरेंमं गंरें,धरें | निगंरेंनि, मनिधसां | निध–,नि सांरेंगंरें॥
× | 2 | 3

चरणम्

सां-रीं,मं -गं,मंपं मंगं,सांरीं मंगंरीसां | -,सारीम गपम-, | रीं--,गं रीसांधनि ||
धऽऽ,न्ये ऽऽ,यंऽ ऽऽ,भैऽ ऽऽरवी | ऽ,भैऽऽ ऽरवाऽ, | र्धीऽऽ,गी ऽऽऽऽ ||
× | २ | ३

चिट्टस्वरम्

१. ध-प-म-ग- रे-सा- -,ग--, | म--,प --,ध- | -,नि-- -,सांधनि ||
× | २ | ३

२. रेंसां-,नि धपमग रे--,ग मपमग | सा-,गम -,पध-, | निसां-,नि सांरेंसांनि
× | २ | ३

ध---,ध निसांनिध प--,म पनिधप | मगरेसा, पमगरे, | धपम,ग मपधनि ||
× | २ | ३

३. धनि. . -रेंसांनि धपमग रेसा-,ग | मपधनि सां--,प | धनि-,म पध-,ग
× | २ | ३

मप-,ग म,मप,प ध,धनि,नि सां--,प | धनिसां-,मपधनि | सां-,गम पधनिसां
× | २ | ३

--,सा- साग-म,पमगम मप-,ध | निधप-, धनि-,सां | गंरेंसांनि धपधनि ||
× | २ | ३

४. सागमप ध,मधम, धमधनि सांरेंगंमं | गंरेंसांनि सां,निसांनि | सांनिसांरें सांनिधप
× | २ | ३

म--,नि धपमग रे--,ग रेसानिध | सा---,निसागम | प,गमध निसां,निसां
× | २ | ३

गंमंपंमं गं-,रेंगं मंगंरें-,सांरेंगंरें | सां--,ध पमगरे | सा--,ध निसाग-
× | २ | ३

ग,रेगम ध-ध,प धनिरें- -,सां-नि | -ध-प -म-ग | -म-प -ध-नि ||
× | २ | ३

५. प--,प धनिप-,पधनिप -,मपध | म--,ग मप-,प | धनि-,नि सांरें-,सां
× | २ | ३

निधपम गरेसा-, मग-,प म-धप | -,निध-,पधपम | प,गमप -,मपम
× | २ | ३

गम,रेग म--,सा --,धनि धसानिरे | सामग,ग पम,मध | प,पनिध, धरेंसां-
× | २ | ३

-,ध-नि सां--,सा ग-,गम -,मप-, | पध-,ध नि-,निसां | धनिसां,ध निसां,धनि ||
× | २ | ३

राग भैरवी-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी : कहे कोऊ राम नाम, अल्ला नाम कोऊ कहे
रूप देखि कोऊ मगन, तरे कोऊ नामही सों ।

अंतरा : परब्रह्म परमेश्वर, दूजो नाहीं पालनहार
नाम रूप गुन सकल दुःख द्वंद्व हरे जासों ॥

संचारी : रच्यो अखिल संसार, जाही अपनी इच्छा सों
लिपट रह्यो पामर नर, माया भरम जाल सों ॥

आभोग : जीवात्म परमात्म, अप्रंपार प्रकट गुपत
भेद आप पर ताको मिटे साचे ग्यान सों ॥

स्थायी

नि	म		ग	नि	
ध प	—, ग	— म,	री ग	री, सा	— सा
क हे	S, को	S ऊ,	रा S	म, ना	S म
×	०	२	०	३	४

सा सा	नि		म	ग	
री नि	—, सा	— री,	ग —	म, म	म —
अ ल्ला	S, ना	S म,	को S	ऊ, क	हे S
×	०	२	०	३	४

नि	म		ध		
सा —	ध, प	— ध,	नि ध	पम, प	म म
रू S	प, दे	S खि,	को ऊ	SS, म	ग न
×	०	२	०	३	४

नि	म		म	ग	
सा सा	री, ग	प म,	ग म	ग री	— सा
त रे	S, को	S ऊ,	ना S	म ही	S सों
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म म	नि			नि	नि
प ग	म ध	— नि	सां सां	सां —	सां सां
प र	S ब्र	S ह्म	प र	मे S	श्व र
×	०	२	०	३	४

सां नि सां नि नि
नि − | नि, सां | − सां, | रीं सां | सां, ध | − प
दू ऽ | जो, ना | ऽ हीं, | पा ल | न, हा | ऽ रे
× | ० | २ | ० | ३ | ४

ग ध नि म
प − | प, प | ध नि, | ध प | म, प | म म
ना ऽ | म, रू | ऽ प, | गु न | ऽ, स | क ल
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि म ग ग ग
सा सा | री ग | − म, | री री | ग, री | − सा
दु ख | ऽ दं | ऽ द, | ह रे | ऽ, जा | ऽ सों
× | ० | २ | ० | ३ | ४

संचारी

नि नि म नि
सा सा | ध, प | प प, | ध − | − प | − प
र च्यो | ऽ, अ | खि ल, | सं ऽ | ऽ सा | ऽ र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

म नि सां सां नि
प − | ध, नि | सां सां, | रीं सां | − ध | प −
जा ऽ | हि, अ | प नी, | इ च्छा | ऽ सों | ऽ ऽ
× | ० | २ | ० | ३ | ४

म म ग
प ध | पम प | म −, | ग म | री री | सा सा
लि प | टऽ र | ह्यो ऽ, | पा ऽ | म र | न र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

सा सा ग म
नि − | नि, सा | सा री | ग − | ग म | − −
मा ऽ | या, भ | र म | जा ऽ | ल सों | ऽ ऽ
× | ० | २ | ० | ३ | ४

आभोग

म नि नि नि नि
ध − | ध म | ध नि, | सां सां | सां − | सां सां
जी ऽ | वा ऽ | त म, | प र | मा ऽ | त म
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि नि	– सां	– गं,	रीं रीं	सां, सां	ध प
अ प्र	ऽ म्पा	ऽ र,	प्र क	ट, गु	प त
×	०	२	०	३	४

गं –	गं, मं	– मं,	गं रीं	गं, रीं	– सां
भे ऽ	द, आ	ऽ प,	प र	ऽ, ता	ऽ को
×	०	२	०	३	४

सा सा	री, ग	– म,	री ग	री सा	– –
मि टे	ऽ, सा	ऽ चे,	ग्या ऽ	न सों	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

राग आसावरीतोडी – तिलवाडा (विलंबित)

(कोमल रिखब आसावरी)

स्थायी : कहो जी कहो कैसे के करिये, सहिये बिरहा
बिथा ये सखि, जियरा अब अत बेकल होत।

अंतरा : लगन लगी नित आस मिलबे की, नैना नीर झरे
घरी पल छिन छिन, कासे कहूँ गत
करिये कौन उपाव रीत॥

स्थायी

री	सा सा,सा ध प़प़	सा सा,सा री सा	सासा री म प
क	हो जी,क हो कैऽ	से के,क रि ये	सहि ये ऽ ऽ
	३	×	२

ध ध प धधपमपध,ध	ग – री सासा	मप ध सां धप
बि र हा ऽऽऽऽऽऽ,बि	था ऽ ये सखि	जिय रा ऽ अब
०	३	×

प म म ग नि सा ग नि नि नि
मपध,पप ग - रीसा | ध़ सा ग ;री | सा सा,सा ध़
अऽऽ,तऽ बे ऽ कल | हो ऽ त ;क | हो जी,क हो...इत्यादि
२ | ० | ३

अंतरा

ग ग नि सा नि गं नि सां नि
रीरी सा निसा ,सा | सां - - ,सांसां | रीं - - सां,सां | रीं ध - प
लग न ऽऽ ,ल | गी ऽ ऽ,नित | आऽऽ स,मि | ल बे ऽ की
३ | × | २ | ०

प नि नि नि ध प म म म म ग
म प ध सां | ध ध प - | म म प पधपप | ग ग री सा,
नै ना नी ऽ | र झ रे ऽ | घ री ऽ पऽलऽ | छि न छि न,
३ | × | २ | ०

नि सा गं गं नि प नि नि ध ध म ग
सा गं रीं,रीं सां धप, | म प ध सां | धप पधम,पध ग रीसा |
काऽ से,क हूँ गत, | क रि ये ऽ | कोंऽ नऽऽ ,उऽ पा ऽव |
३ | × | २

नि सा ग नि नि नि म प
ध़ सा ग ,री | सा सा,सा ध़ ,पप | सा
री ऽ त ,क | हो जी,क हो ,कैऽ | से....इत्यादि स्थायी के अनुसार
० | ३ | ×

राग आसावरीतोडी-एकताल(विलंबित)

स्थायी: जागो रे जगजीवन जागो

भोर भई ठाड़े सब ग्वाल गोपाल

दरस के प्यासे।

अंतरा: बाट जुहत ब्रिखभान नंदिनी

नीर तीर जमुना, ब्रिख बेली, खग मृग धेनु

सबै तुम्हरी बाँसुरी की धुन माधुरी के

रास रस के प्यासे॥

स्थायी

नि म ग नि सा म नि नि

धु प | धमपध ग | री ,सासा | रीम ,पप | धु धु | प –,

जा ऽ | ऽऽऽऽ गो | रे ,जग | जीऽ ,वन | जा ऽ | गो ऽ,

2 | 0 | 3 | ४ | × | 0

म म नि प नि

ध म | प ,प | ध प | धम प | ध म | पध सां,सांसां |

भो ऽ | र ,भ | ई ऽ | ऽऽ ऽ | ठा ऽ | ड़ेऽ ऽ,सब |

2 | 0 | 3 | ४ | × | 0

सां सां नि प प ध म ग ग ग

रीं सां,रीं | ध – | प ध,म | पध सां | गरी रीरी | सा –;

ग्वा ल,गो | पा ऽ | ऽ ल,द | रस के | प्याऽ ऽऽ | से ऽ;

2 | 0 | 3 | ४ | × | 0

अंतरा

प म नि नि प नि नि नि ध

म पप | धध मप | सां –सां | सां – | सां सां, | ध ध,सां

बा टजु | हत ब्रिख | भा ऽन | नं ऽ | दि नी, | नी र,ती

3 | ४ | × | 0 | 2 | 0

नि सां गं नि नि प नि ध सां नि प

–सां सांसां | गं, रींसां | सां धप, | धम पध | सां सां,रीं | धप धम

ऽर जमु | ना, ब्रिख | बे लीऽ, | खग म्रिग | धे नु,स | बेऽ तुम्ह

3 | ४ | × | 0 | 2 | 0

म ग ग ग सा प ध

पधमप ग | रीरी री,सासा | री म | प – | धम पध | सां –,

रीऽऽऽ बाँ | सुरी की,धुन | मा ऽ | ऽ ऽ | ऽऽ धुरि | के ऽ,

3 | ४ | × | 0 | 2 | 0

प ध म ग ग ग नि म

धम पप | पधमप ग | री रीरी | सा –; | ध प | धमपध ग |

राऽ ऽस | रऽसऽ के | प्या ऽऽ | से ऽ; | जा ऽ | ऽऽऽऽ गो |

3 | ४ | × | 0 | 2 | 0

ग नि सा म

री ,सासा | रीम पप |

रे ,जग | जीऽ वन | ....इत्यादि स्थायी के अनुसार

3 | ४

राग आसावरीतोडी–ध्रुवपद–चौताल

स्थायी : बिना नीर कैसे जीवे मीन
बिन समीर कौन रीत जियजंत धरे प्राण।

अंतरा : हरी अधरतें प्राण लिये बाँसुरी बजे
हरिदास मुखतें लिये प्राण गावे तान॥

संचारी : राग ताल रस गीत नेम धरम ग्यान ध्यान
गुन समुद्र अप्रम्पार तारनहार॥

आभोग : हरिदास गुरु चरण छाँडिके कहाँ जाऊँ
कहाँ पाऊँ ऐसो महाग्यान गुननिधान॥

स्थायी

नि	नि		नि			धृ		म			
धृ	धृ	—	,धृ	प	प,	प	धृ	म	प	—	—
बि	ना	S	,नी	S	र,	के	S	S	से	S	S
×		0		2		0		३		४	
प		प	म			ग			नि		
म	प	धृ	ग	—	—,	री	—	—	सा	—	सा
जी	S	S	वे	S	S,	मी	S	S	S	S	न
×		0		2		0		३		४	
नि	सा	नि				प		नि	धृ		
सा	सा	री	धृ़	—	प़,	म़	प़	धृ़	सा	—	सा
बि	न	स	मी	S	र,	कौ	S	न	री	S	त
×		0		2		0		३		४	
प		नि			म	म	ग	ग			
म	प	नि	धृ	म	पधृ	ग	ग	री	,री	—	सा
जि	य	S	जं	S	तS	ध	रे	S	,प्रा	S	ण
×		0		2		0		३		४	

अंतरा

प	प		म	नि	नि	धृ			नि		
म	म	प	,प	धृ	धृ	सां	—	—	,सां	—	सां
ह	रि	S	,अ	ध	र	तें	S	S	,प्रा	S	ण
×		0		2		0		३		४	

रीं रीं | — , रीं | — रीं | सां — | — , रीं | ध प
लि ये | ऽ , बाँ | ऽ सु | री ऽ | ऽ , ब | जे ऽ
× 0 2 0 3 ४

म प | गं , रीं | — सां, | म प | — ध | सां —
ह रि | ऽ , दा | ऽ स, | मु ख | ऽ तें | ऽ ऽ
× 0 2 0 3 ४

सां सां | रीं , ध | — प, | ग — | री , री | — सा
लि ये | ऽ , प्रा | ऽ ण, | गा ऽ | वे , ता | ऽ न
× 0 2 0 3 ४

संचारी

सा — | सा , ध | — ध, | ध ध | — , ध | प प
रा ऽ | ग , ता | ऽ ल, | र स | ऽ , गी | ऽ त
× 0 2 0 3 ४

म — | प , ध | सां सां, | सां — | सां , ध | प प
ने ऽ | म , ध | र म, | ग्या ऽ | न , ध्या | ऽ न
× 0 2 0 3 ४

सा सा | सा री | म म, | प प | नि ध | प प
गु न | स मु | ऽ द्र, | अ प्र | ऽ म्पा | ऽ र
× 0 2 0 3 ४

प गं | — रीं | — सां, | सां रीं | नि ध | प प
ता ऽ | ऽ र | ऽ न, | हा ऽ | ऽ ऽ | ऽ र
× 0 2 0 3 ४

आभोग

रीं रीं | — , रीं | — रीं, | रीं रीं | — , सां | सां सां
ह रि | ऽ , दा | ऽ स, | गु रु | ऽ , च | र ण
× 0 2 0 3 ४

सां - | गं रीं | - सां, | सां सां | रीं , ध | - प
छाँ ऽ | डि के | ऽ ऽ, | क हाँ | ऽ , जा | ऽ ऊँ
× | ० | २ | ० | ३ | ४

म प | सां , ध | - प, | ग - | - री | - सा
क हाँ | ऽ , पा | ऽ ऊँ, | पि ऽ | ऽ सो | ऽ ऽ
× | ० | २ | ० | ३ | ४

सा री | म प | ध सां, | नि ध | प ग | री सा
म हा | ऽ ध्या | ऽ न, | गु न | नि धा | ऽ न
× | ० | २ | ० | ३ | ४

राग मालकोंस-सरगम-झपताल(मध्यलय)

स्थायी

सां सां | ध नि ध | म ग | सा नि़ सा || ध़ नि़ | सा ग म | ध - | नि ध म
× | २ | ० | ३ || × | २ | ० | ३

ग - | म ध नि | सां - | नि सां - || मं गं | सां नि ध | म ग | म ध नि
× | २ | ० | ३ || × | २ | ० | ३

अंतरा

म ग | म नि ध | सां -, | नि सां -, || ध नि | सां गं सां | ध नि | ध - म
× | २ | ० | ३ || × | २ | ० | ३

गं सां, | गं सां नि | ध म | ग -, म || ग -, | सा ग म | नि ध | म ग सा
× | २ | ० | ३ || × | २ | ० | ३

राग मालकोंस–लक्षणगीत–एकताल (मध्यलय)

स्थायी: भैरवी के मेलनसों रिप सुर नित वर्जित करि
मध्यम वादी खरज समवादी सोहत मध निस गत।

अंतरा: मालकौंस राग मधुर अत गंभीर शास्त्र सुमत
गान रसिक रंजन सुन रे 'सुजान' चतुर मत॥

स्थायी

नि		नि				ग		ग			
सां	–	सां	धु	नि	धु,	म	ग	म	ग	सा	–
भै	S	र	वी	S	के,	मे	S	ल	न	सों	S
×		०		२		०		३		४	

म				नि		नि	म		नि	सां	
ग	म	ग	सा,	धु	नि	सा	ग	म	धु	नि	सां
रि	प	सु	र,	नि	त	ब	र	जि	त	क	रि
×		०		२		०		३		४	

मं				नि			नि			नि	
गं	मं	गं	सां,	धनि	सां	सांनि,	गं	सां	सां,	धु	नि
म	S	ध्य	म,	वाS	S	दीS,	ख	र	ज,	स	म
×		०		२		०		३		४	

			म			नि					
धु	म	म,	सां	सां	सां,	धु	नि	धु	म	ग	सा
वा	S	दी,	सो	ह	त,	म	ध	नि	स	ग	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

नि		नि				नि			नि		
सां	–	सां	धु	–	नि,	सां	–	सां,	सां	सां	सां
मा	S	ल	कौं	S	स,	रा	S	ग,	म	धु	र
×		०		२		०		३		४	

मं						नि				म	म
गं	मं	गं	सां	–	सां,	धु	नि	धु,	म	ग	ग
अ	त	गं	भी	S	र,	शा	S	स्त्र,	सु	म	त
×		०		२		०		३		४	

मं गं	मं	गं	, सां	सां	सां,	नि	सां	गं	सां	नि	धृ
गा	ऽ	न	, र	सि	क,	रं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नि धृ	नि	धृ	, म	ग	—	सा	, सां	धृ	नि	धृ	म
सु	न	रे	, सु	जा	ऽ	न	, च	तु	र	म	त
×		०		२		०		३		४	

राग मालकोंस—त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : नाद बेद अप्रम्पार, गुनि गंधर्व हारे कर बिचार
श्रुति सुर मूर्छना मेल जाति राग बिस्तार
मार्ग अति कठिन ग्यान।

अंतरा : वादी संवादी अनुवादी बेवादी श्रुति अंतर बरनत
साम ग्राम गत पंचम अंतर, मानत शास्त्रकार
श्रुति प्रमान॥

स्थायी

ग	म	ग	सा	—	सा,	धृ	नि	सा	म	—	म	—	म,	ग	ग
ना	ऽ	द	बे	ऽ	द,	अ	प	र	ऽ	ऽ	म्पा	ऽ	र,	गु	नि
०				३				×				२			
म	धृ	नि,	सां	—	सां,	धृ	नि	धृ	म	—	म,	ग	ग	म	म
गं	ध	र्व,	हा	ऽ	रे,	क	र	बि	चा	ऽ	र,	श्रु	ति	सु	र
०				३				×				२			
धृ	—	नि	नि	सां	—	—	,सां	—	सां,	गं	मं	गं	,सां	—	सां
मू	ऽ	र	छ	ना	ऽ	ऽ,	मे	ऽ	ल,	जा	ऽ	ति,	रा	ऽ	ग
०				३				×				२			

नि – सां गं	सां, ध नि ध,	ग ग म म	ध, नि सां सां
बि ऽ स्ता ऽ	र, मा ऽ र्ग,	अ ति क ठि	न, ग्या ऽ न
०	३	×	२

ग म ग सा	– सा,
ना ऽ द बे	ऽ द, इत्यादि
०	३

अंतरा

ग – ग –,	म म ध –	नि –, सां सां	नि सां सां –
वा ऽ दी ऽ,	स म वा ऽ	दी ऽ, अ नु	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२
गं मं गं –	सां –, सां सां	नि सां गं सां,	ध नि ध म
बे ऽ वा ऽ	दी ऽ, श्रु ति	अ ऽ न्त र,	ब र न त
०	३	×	२
गं – गं, गं	मं मं गं मं,	गं – सां सां	नि सां सां सां
सा ऽ म, ग्रा	ऽ म ग त,	पं ऽ च म	अ ऽ न्त र
०	३	×	२
सां – ध नि	ध – म ग	– ग, म म	ध नि सां सां
मा ऽ न त	शा ऽ स्त्र का	ऽ र, श्रु ति	प्र मा ऽ न
०	३	×	२

ग म ग सा	– सा,
ना ऽ द बे	ऽ द, इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३

राग मालकौंस–आडाचौताल(मध्यलय)

"चतुर-प्रशस्ति"

स्थायीः गाऊँ गुन गाऊँ, सीस निवाऊँ चरननतें
गुरु चतरा को मन ध्याऊँ।

अंतराः ग्यान चतुर ध्यान चतुर, पुनि गीत चतुर
जेहि रीत चतुर, वाक चतुर रस राग चतुर
बरनी न जाय चतुराई, ऐसो महा पुरुख साचो
सब गुनियन में गुन ग्यानी, जिन चरन कृपा फल पाऊँ॥

स्थायी

सा	ग	म	ध	नि	सां	ध़	नि़	ध	म	ग	म	ग	सा
गा	S	S	S	S	S	ऊँ	S	गु	न	गा	S	ऊँ	S
×		२		०		३		०		४		०	
सा	–	ध़	नि़	सा	ग	म	ध	ग	म	ध	नि	सां	–
सी	S	स	नि	वा	S	ऊँ	S	च	र	न	न	तें	S
×		२		०		३		०		४		०	
गं	सां	ध	नि	ध	म	मध	निसां	सां	धनि	ध	म	ग	सा
गु	रु	च	त	रा	S	कोS	SS	म	नS	ध्या	S	S	ऊँ
×		२		०		३		०		४		०	

अंतरा

ग	म	ग	सा	सा	सा	सां	–	सां	सां	नि	सां	सां	सां
ग्या	S	न	च	तु	र	ध्या	S	न	च	तु	र	तु	म
×		२		०		३		०		४		०	
ग	म	ग	सा	सा	सा	सां	–	सां	सां	सां	सां	नि	सां
ग्या	S	न	च	तु	र	ध्या	S	न	च	तु	र	प्र	नि
×		२		०		३		०		४		०	

मं		नि				नि	सां		नि				
गं	मं	गं	सां	सां	सां	ध	नि	सां	ध	नि	ध	म	म
गी	ऽ	त	च	तु	र	जे	हि	री	ऽ	त	च	तु	र
×		२		०		३		०		४		०	

नि़			म		नि	म		नि		नि			
सा	ग	सा	ग	म	ध	ग	म	धनि	सां	सांनि	गं	सां	सां
बा	ऽ	क	च	तु	र	र	स	राऽ	ऽ	गऽ	च	तु	र
×		२		०		३		०		४		०	

नि	नि							म					
गं	सां	ध	नि	ध	म	–	म	ग	म	ग	–	सा	–
ब	र	नी	ऽ	न	जा	ऽ	य	च	तु	रा	ऽ	ई	ऽ
×		२		०		३		०		४		०	

नि़				सा	म		ग	म	म			नि	
सा	नि़	ग	सा	म	ग	–	ध	ध	म	नि	ध	सां	–
ऐ	ऽ	सो	ऽ	म	हा	ऽ	पु	रु	ख	सा	ऽ	चो	ऽ
×		२		०		३		०		४		०	

नि	मं					नि		नि		नि			
सां	गं	मं	गं	सां	सां	ध	नि	सां	सां	ध	नि	ध	म
स	ब	गु	नि	य	न	में	ऽ	गु	न	न्या	ऽ	नी	ऽ
×		२		०		३		०		४		०	

नि		नि			ग	म		सा		सा		नि़	
सां	सां	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	सा	नि़	सा	ध़	नि़
जि	न	च	र	न	कृ	पा	ऽ	फ	ल	पा	ऽ	ऊँ	ऽ
×		२		०		३		०		४		०	

राग मालकौंस – रूपक (मध्यलय)

स्थायीः फूली सुगंधित रातरानी, मंद शीत समीर लहलहरात

रस की बात करत, लुभात मन को भात प्यारी।

अंतराः गगन चढ़ि आयो चन्दा, कहत रानी कौन चेटक किये

तुंव जो महकते मन मोहि बसकर लिये आज

रैन रानी, नैन रानी, चैन रानी॥

स्थायी

म नि़ नि़ नि़ म म ध नि सां
ग म ग | सा – | ध़ नि़ || सा ग ग | म ध | नि सां
फू ली सु | ग ऽ | न्धि त || रा ऽ त | रा ऽ | नी ऽ
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

नि ग ग सा म
ध नि ध | म – | ग म || ग – सा, | नि़ सा | ग म
म ऽ न्द | शी ऽ | त स || मी ऽ र, | ल ह | ल ह
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

नि म नि नि नि मं गं नि
ध नि नि, | ग म | ध ध || सां – सां, | गं मं | गं ,सां
रा ऽ त, | र स | की ऽ || बा ऽ त, | क र | त ,लु
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

नि नि म ध म
ध – नि, | ध म | ग – || मध निसां सां | ग म | ग सा
भा ऽ त, | म न | को ऽ || भाऽ ऽऽ त | प्या ऽ | री ऽ
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

अंतरा

सा ग म ध नि सां नि नि नि
नि़ सा ग | म ध | नि सां || सां – –, | सां – | सां –
ग ग न | च ढ़ | आ ऽ || यो ऽ ऽ, | च ऽ | न्दा ऽ
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

नि सां नि नि मं नि
सां सां सां | नि सां | ध नि || सां गं मं | गं सां | ध नि
क ह त | रा ऽ | नी ऽ || को ऽ न | चे ऽ | ट क
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

नि नि म
ध म –, | गं सां | ध नि || ध म म | ग म, | ग सा
कि ये ऽ, | तुं व | जो ऽ || म ह क | ते ऽ, | म न
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

सा नि़ सा ग म ध नि ध
नि़ सा सा, | ध़ नि़ | सा ग || म ध – | सां – | – सां
मो ऽ हि, | ब स | क र || लि ये ऽ | आ ऽ | ऽ ज
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

ग - सां | ध नि | ध म, || ग म ग | सा - | ध़ नि़
रै ऽ न | रा ऽ | नी ऽ, || नै ऽ न | रा ऽ | नी ऽ
⊗ | २ | ३ || ⊗ | २ | ३

सा ग ग | म ध | नि सां; || ग म ग | सा - | ध़ नि़
चै ऽ न | रा ऽ | नी ऽ; || फू ली सु | ग ऽ | न्धि त
⊗ | २ | ३ || ⊗ | २ | ३

राग मालकौंस – त्रिताल (मध्यलय)

(प्रथम स्वातंत्र्य दिवस पर रचित)

स्थायी : गाऊँ जस गान मंगल गाऊँ आनन्द सों
स्वातंत्र्य देवि विशाल भाल तिलक लगाऊँ
जय जय जय जय शब्द जगाऊँ।

अंतरा-१: काव्य विनोदिनी वाग् विहारिणी
कला कुशलिनी गीत निनादिनी
विश्वप्रेम सुधा रस मोहिनी
लाख कोटि गुनगान सुनाऊँ॥

अंतरा-२: जय हिंद मात जय वीर मात
जय जन्म भूमि जय आर्य भूमि
वीर हृदय का सार सरोजिनी
भाग्य लक्ष्मी जननी मन ध्याऊँ॥

स्थायी

सां - सां -, | ध नि ध म | म, म ग म | ग - सा -
गा ऽ ऊँ ऽ, | ज स गा ऽ | न, मं ग ल | गा ऽ ऊँ ऽ
× | २ | ० | ३

म	नि॒ नि॒	म ध नि सां	नि॒
ग म ग सा	ध॒ नि॒, सा –	ग म ध नि	सां – सां, सां
आ ऽ न न्द	सों ऽ, स्वा ऽ	तं ऽ ऽ त्र्य	दे ऽ वि, वि
×	२	०	३

मं		नि नि॒	नि
गं – मं गं	सां – – सां,	सां सां गं, सां	ध नि ध म
शा ऽ ऽ ल	भा ऽ ऽ ल,	ति ल क, ल	गा ऽ ॐ ऽ
×	२	०	३

म म	नि नि सां सां	नि नि	नि नि
ग ग म म	ध ध नि नि	सां – सां, सां	ध म धनि सां
ज य ज य	ज य ज य	श ऽ ब्द, ज	गा ऽ ॐऽ ऽ
×	२	०	३

अंतरा-१

नि सां	नि	नि ग म	
सां – सां नि	सां – ध नि,	ध म म, म	ग म ग सा
का ऽ व्य वि	नो ऽ दि नि,	वा ऽ ग, वि	हा ऽ रि णि
×	२	०	३

म म म	म	नि सां सां	
ग ग म ग	सा सा ग म	ध – नि, नि	सां – सां सां
क ला ऽ कु	श लि नी ऽ	गी ऽ त, नि	ना ऽ दि नि
×	२	०	३

नि	नि गं मं	मं मं	
सां नि ध नि	सां – मं, मं	गं – गं मं	गं – सां सां
वि ऽ श्व ऽ	प्रे ऽ म, सु	धा ऽ र स	मो ऽ हि नि
×	२	०	३

नि नि॒	नि॒ नि	ध नि॒	नि॒
सां – सां, सां	– सां, गं सां	ध – नि, नि	ध म धनि सां
ला ऽ ख, को	ऽ टि, गु न	गा ऽ न, सु	ना ऽ ॐऽ ऽ
×	२	०	३

अंतरा-२

म म	नि	सां सां	नि
ग ग म –	म ध – ध,	नि नि सां –	सां सां – सां
ज य हि ऽ	न्द मा ऽ त,	ज य वी ऽ	र मा ऽ त
×	२	०	३
नि नि	नि	नि नि	नि
सां सां सां –	सां सां – गं,	सां सां ध –	नि ध – म
ज य ज ऽ	न्म भू ऽ मि,	ज य आ ऽ	र्य भू ऽ मि
×	२	०	३
नि नि नि		मं गं	मं
सां – सां,सां	ध नि सां –	गं – मं, मं	गं मं गं सां
वी ऽ र, ह्व	द य का ऽ	सा ऽ र, स	रो ऽ जि नि
×	२	०	३
म म	नि नि सां सां	नि	नि ध
ग – ग, म	ध ध, नि नि	सां – , ध नि	ध म मध निसां
भा ऽ ग्य, ल	छ मि, ज न	नी ऽ , म न	ध्या ऽ ॐऽ ऽऽ
×	२	०	३

राग मालकौंस-ध्रुवपद-चौताल

स्थायी : नभ मण्डल प्रकाशत पूर्ण चन्द्र ज्योत
मंद मंद शीत पवन अत सुगन्ध भर्यो बहत।

अंतरा : वृख वेली झूमि रहे मोद भरे मुसकात
कलियन सों करत केलि मदमातो भँवर गूँजत॥

संचारी : एक चन्द्रमा गगन नाहिं और कोऊ लसत
भक्तन में मीरा एक धरनीतल बिलसत॥

आभोग : गिरिधर गोपाल नाम जपत अहर्निस ध्यान
धरत रूप ब्रह्म-ज्योत चन्द्र-ज्योत संग रजत॥

स्थायी

नि			नि			नि		नि			
सां	सां	—,	गं	सां	सां,	ध	नि	ध	—	म	म
न	भ	ऽ,	म	ण्ड	ल,	प	र	का	ऽ	श	त
×		०		२		०		३		४	

म			नि			ग			म		
सां	—	—	ध	नि	ध,	म	ग	म,	ग	सा	सा
पू	ऽ	ऽ	र	ऽ	न,	च	ऽ	न्द्र,	ज्यो	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

म			नि			नि	सा		म	ध	नि
ग	म	ग,	सा	—	सा,	ध़	नि़	सा,	ग	म	ध
म	ऽ	न्द,	म	ऽ	न्द,	शी	ऽ	त,	प	व	न
×		०		२		०		३		४	

सां	नि	नि				म	म		म		
नि	सां	सां	ध	नि	ध,	ग	ग	म,	ग	सा	सा
अ	त	सु	ग	ऽ	न्ध,	भ	ज्यो	ऽ,	ब	ह	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	म		म			सां			नि		
ग	ग	म,	नि	ध	ध,	नि	सां	सां,	सां	सां	—
वृ	क्ष	ऽ,	बे	ऽ	लि,	झू	ऽ	मि,	र	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सां			नि			नि	नि		नि		
नि	—	सां	गं	सां	—,	सां	ध	नि	ध	म	म
मो	ऽ	द	भ	रे	ऽ,	मु	स	ऽ	का	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

नि	सां	गं	सां गं			मं	मं		मं		
ध	नि	सां	मं	मं	—,	गं	गं	मं,	गं	सां	सां
क	लि	य	न	सों	ऽ,	क	र	त,	के	ऽ	लि
×		०		२		०		३		४	

सां	नि					म	म		म		
गं	सां	ध	नि	ध	म,	ग	ग	म,	ग	सा	सा
म	द	मा	ऽ	तो	ऽ,	भँ	व	र,	गूँ	ज	त
×		०		२		०		३		४	

संचारी

नि़			नि	नि	नि	नि	नि				
सा	—	सा,	ध	ध	ध	ध	ध	नि,	ध	म	म
प	S	क,	च	S	न्द्र	मा	S	S,	ग	ग	न
×		0		२		0		३		४	

म			म			सां			नि		
ग	—	म,	नि	ध	ध,	नि	सां	सां,	सां	सां	सां
ना	S	हिं,	ओ	S	र,	को	S	ऊ,	ल	स	त
×		0		२		0		३		४	

म		नि	नि	ध		नि	नि				
ग	म	ध	ध	नि	—,	ध	ध	नि,	ध	म	म
भ	S	क्त	न	मों	S,	मी	रा	S,	प	S	क
×		0		२		0		३		४	

नि़	सा	ग	म			नि	नि				
ध़	नि़	सा	ग	म	म,	ध	ध	नि	ध	म	म
ध	र	नी	S	त	ल,	बि	ल	S	स	S	त
×		0		२		0		३		४	

आभोग

मं	मं	मं	मं	मं		मं			नि		
गं	गं	गं	गं,	गं	—	गं	मं	गं,	सां	—	सां
गि	रि	ध	र,	गो	S	पा	S	ल,	ना	S	म
×		0		२		0		३		४	

सां	सां					नि	नि				
नि	नि	सां,	गं	सां	—सां	ध	ध	नि,	ध	म	म
ज	प	त,	अ	ह	Sर	नि	स	S,	ध्या	S	न
×		0		२		0		३		४	

म	म		नि	सां		मं					
ग	ग	म,	ध	नि	सां,	गं	—	सां,	नि	ध	म
ध	र	त,	रू	S	प,	ब्र	S	ह्म,	ज्यो	S	त
×		0		२		0		३		४	

म			नि			म					
सां	—	सां,	ध	नि	ध,	गं	—	म,	ग	सा	सा
च	S	न्द्र,	ज्यो	S	त,	सं	S	ग,	र	ज	त
×		0		२		0		३		४	

राग बिलासखानीतोडी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : वही जाओ जाओ जाओ बालम
जिन जुवति संग कीन्ही रंगरलिया।

अंतरा : देखी देखी तोरी नेहा की रीत
भली जो अकेली बिरहा की माती
अब ना मनाओ बनाओ न बतियाँ॥

स्थायी

सां
व

सां धृ नि धृ	म ग री री,	ग प -, धृ	सां सां -, धृ
ही जा ऽ ओ	जा ऽ ऽ ओ,	जा ओ ऽ, बा	ल म ऽ, जि
३	×	२	०
धृ सां रीं गं	रीं - सां, गं	रीं नि, धृ म	ग री सा; सां
न जु व ति	सं ऽ ग, की	ऽ न्ही, रं ग	र लि या; व
३	×	२	०

अंतरा

रीं
दे

नि धृ म ग	री - -, री	ग प - धृ	सां - सां, धृ
खि दे खि तो	री ऽ ऽ, ने	ऽ हा ऽ की	री ऽ त, भ
३	×	२	०
गं रीं -, गं	रीं - सां, सां	सां धृ नि धृ	म ग रीसा, धृ
ली जो ऽ, अ	के ऽ ली, बि	र हा ऽ की	मा ऽ तीऽ, अ
३	×	२	०
नि सा -, री	ग - ग, म	म ग री, ग	री री सा; सां
ब ना ऽ, म	ना ऽ ओ, ब	ना ऽ ओ, न	ब ति याँ; व
३	×	२	०

राग बिलासखानी तोडी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः होवे का किये लाखों तीरथ

नहीं अंतर जोलों निर्मल 'सुजनवां'।

अंतराः जप तप नहीं, नहीं साधना

नहीं जोग जाग कछु काम आवे

मन मैल ना मिटाये नसाये ॥

स्थायी

सां
हो

सां ध नि ध	म ग री –,	ग प –, ध	सां सां –, ध
वे का ऽ कि	ये ऽ ऽ ऽ,	ला खों ऽ, ती	र थ ऽ, न
३	×	२	०
नि सां रीं गं	रीं – नि, गं	रीं नि ध, म	ग री सा; सां
हीं अं त र	जो ऽ लों, नि	र म ल, सु	ज न वा; हो
३	×	२	०

अंतरा

रीं
ज

नि ध म ग	री – –, री	ग प – ध	सां – –, ध
प त प न	हीं ऽ ऽ, न	हीं सा ऽ ध	ना ऽ ऽ, न
३	×	२	०
गं रीं – गं	रीं – सां, सां	सां ध नि ध	म ग रीसा, ध
हीं जो ऽ ग	जा ऽ ग, क	छु का ऽ म	आ ऽ वेऽ, म
३	×	२	०
नि सा – री	ग – –, म	म ग री, ग	री – सा; सां
न मे ऽ ल	ना ऽ ऽ, मि	टा ऽ ये, न	सा ऽ ये; हो
३	×	२	०

राग बिलासखानी तोडी-तिलवाडा(विलंबित)

(लक्षणगीत)

स्थायी : बिलसै अत न्यारी सुरागनी
भैरवी होत निराली रंग रस की खानी।

अंतरा : सुन 'सुजाना' सुरन की मृदुता अत
धैवत अंश गंधारहु सहचर
द्वितीय पहर दिन तोडी बखानी ॥

स्थायी

नि॒ सा री नि॒ सा री री ग ग नि॒ नि॒ सा
सासा री नि॒,सारी | ग - ग,म | री ग री सा, | सा - रीनि॒,सारी
बिल से ऽ,अत | न्या ऽ री,सु | रा ऽ ग नि, | भै ऽ ऽऽ,रवी
३ | × | २ | ०

री नि॒ नि॒ नि॒ री ग ग म ग ग ग
ग रीनि॒ ध॒,ध॒ | ध॒ ग ग-, | रीरी गम मग रीग | री - सा - ;
हो तऽ ऽ,नि | रा ऽ लीऽ, | रंग रस कीऽ ऽऽ | खा ऽ नी ऽ ;
३ | × | २ | ०

अंतरा

नि नि सां नि नि सां नि सां रीं
धध नि | सां - सां,सां | सांसां रीं नि,सांरीं | गं - रींगं रींसां
सुन सु | जा ऽ ना,सु | रन की ऽ,मृदु | ता ऽ ऽऽ अत
| × | २ | ०

नि गं नि ग ग ग ग नि ग म नि
सां,रींगं रींनि ध म,ग | री रीग रीरी सासा, | धनि॒ सा,री गप धसां |
धै,ऽऽ वत अं श,गं | धा रहु सह चर, | द्विती य,प हर दिन |
३ | × | २

सां रीं नि ध म ग री ग
रींनि धम गरी-,ग री सा; ||
तोऽ ऽऽ डीऽऽ,ब खा नी; ||
०

राग भूपाल तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : भनक परी कान आगम बालम की
अत ही आनन्द भयो सखी मन धायो।

अंतरा : गूँध लावोरी मालनियाँ बेगी हरवा
गरेडारूँ मंगल गुन गाऊँ
आज सुदिन शुभ मुहूरत आयो॥

स्थायी

री
भ

ग री सा सा	ध – ध, सां	ध प, प रीग	री री सा –
न क प री	का ऽ न, आ	ग म, बा ऽऽ	ल म की ऽ
३	×	२	०
सा सा री, री	ग ग प प,	ध ध सां सां	ध – प; री
अ त ही, आ	न न्द भ यो,	स खी म न	धा ऽ यो; भ
३	×	२	०

अंतरा

ध
गूँ

ध सां सां सां	रीं – सां सां	सां, रीं गं रीं	सां सां ध –
ध ला वो री	मा ऽ ल नि	याँ, बे ऽ गि	ह र वा ऽ
३	×	२	०
ध ध सां, ध	– प, प –	री री, ग ग	री – सा –
ग रे ऽ, डा	ऽ रूँ, मं ऽ	ग ल, गु न	गा ऽ ऊँ ऽ
३	×	२	०
री – री, ग	ग ग, प प	ध ध सां सां	ध – प; री
आ ऽ ज, सु	दि न, शु भ	मु हू र त	आ ऽ यो; भ
३	×	२	०

राग भूपाल तोडी–एकताल (विलंबित)

स्थायी : माँगन माँगत आयो दर तोरे कर जोर जोर
आज 'सुजनवा' हे जग जीवन।

अंतरा : इतनी बिनत मोरी सुन लीजे महाराज
सदा रहे सुमिरन तेरे नाम की घरी पल छिन॥

स्थायी

धसां धप	रीग रीसा	री –	सा –,	रीरी गग	,पप ध
माँS गन	माँS गत	आ S	यो S,	दर तोरे	,कर जो
३	४	×	०	२	०
ध,सां –सां,	सांरींगं रीं,सां	धध प,	रीगपध सां,धप	री ग	री सा;
र,जो Sर,	आSS ज,सु	जन वा,	हेSSS S,जग	जी S	व न;
३	४	×	०	२	०

अंतरा

, धध	सां ,सांसांसां	रीं –	सां –,	सांसां रींगं	रीं सां
, इत	नी ,बिनत	मो S	री S,	सुन लीS	जे S
३	४	×	०	२	०
,सां रींसां	ध –ध,	ध ध	सां ,सां	ध प,	पप रीग
,म हाS	रा Sज,	स दा	S ,र	हे S,	सुमि,रन
३	४	×	०	२	०
री सा	री गग	पधसां– –,	ध प	री ग	री सा;
ते रे	ना Sम	कीSSS S,	घ री	प ल	छि न;
३	४	×	०	२	०

राग मलयमारुतम्

यह एक राग स्वरूप दाक्षिणात्य संगीत में प्रचलित है, जिसे आजकल हिंदुस्तानी संगीत प्रणाली में भी पर्याप्त गाया-बजाया जा रहा है। इस राग का मेलकर्ता (१६वाँ) "चक्रवाक" नाम से जाना जाता है, जिसके स्वर इस प्रकार हैं: सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

'मलयमारुतम्' में मध्यम वर्ज्य है। आरोह में निषाद का प्रयोग भी अल्प है। दिन के प्रथम प्रहर में गाया जानेवाला राग है। इसका वादी स्वर पंचम तथा संवादी षड्ज है।

उठाव

प, गप, धनिधप, धपग, रेसा, रेगप।

स्वर-विस्तार

१. धपग, रेसा, (प)गप, पध, निधप, धग, प, निधपग, धपग, रेसा।

२. सा, रेसा, रेगप, ध, निसांनिधप, गपधसां, निधप, गप, रेगप, धपग, रेसा।

३. सा, धसा, पधसा, रेग, प, धपग, रेसा, सारेगप, ध, सां, निधप, धसां, रेंगंरेंसां, पसां, निधप, धपग, रेगप, धनिधप, गप, गरेसा।

४. अंतरा: पपधपधसां, रें, सां, रेंगं, रें, सां, गंरेंसां, धनिधप, गपधसां, धप, निधप, धपग, रेगप, धप, गप, गरेसा।

५. तानें: पपधपगरे सारेगप, रेगपगरेसा रेगप, धनिधप धपगरे सारेगप, सांरेंगंरेंसां रेंसांधप धनिधपगप, रेगपधपगरेसा।

६. पपगरेसा, धनिधप गपगरेसा, धसांधप गपधनिधप गपगरेसा, गंगंरेंसां रेंसांधप धनिसांनिधप गपधप गरेसा, सारेगपधसां-निधपध पगरेसा।

राग मलयमारुतम्–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : मलय समीर बहे अत सुखकर
कुसुम सुगंधित शीत शीत मंद मंद
चहूँ दिस आनन्द छायो।

अंतरा : कूक कोयल अरु टेर पपीहा
उमंग भरी सुनि जिया हुलसत मेरो
रोम रोम सखी हरख भरायो॥

स्थायी

प प	प	प नि	ग
नि ध प, ध	प ग प, ग	री सा, सा सा	री ग प प
म ल य, स	मी ऽ र, ब	हे ऽ, अ त	सु ख क र
०	३	×	२
प		नि प	नि
ग प ध, प	ग री सा सा,	सा – री, ग	प प, ध –
कु सु म, सु	ग ऽ न्धि त,	शी ऽ त, शी	ऽ त, म ऽ
०	३	×	२
नि	प सां		प
नि, ध – प,	ग प ध सां	नि ध प प,	गप धप गरी सा;
न्द, म ऽ न्द,	च हूँ दि स	आ ऽ न न्द,	छाऽ ऽऽ योऽ ऽ;
०	३	×	२

अंतरा

प सां	नि	गं	नि सां
ग – प, ध	सां सां, सां सां	रीं – सां, सां	नि सांनि ध प
कू ऽ क, को	य ल, अ रु	टे ऽ र, प	पी ऽऽ हा ऽ
०	३	×	२
प सां	सां	प	
ग प ध, सां	नि ध प प,	ध प, ग प	ग री सा सा
उ मं ग, भ	री ऽ सु नि,	जि या, हु ल	स त मे रो
०	३	×	२

सा – री, ग	प प ध सां	नि ध प, ध	प ग री सा;
रो S म, रो	S म स खि	ह र ख, भ	रा S यो S;
०	३	×	२

राग मलयमारुतम्–एकताल (विलंबित)

(लक्षणगीत)

स्थायी : सुन रे 'सुजान' अनुपम राग रूप
रंग रस भरे मलयमारुत नाम सुंदर।

अंतरा : बिन मध्यम खाडव जात सप संवाद करत
अति सुस्वर गावत प्रात समय परम मनोहर॥

स्थायी

निध प	धपगप ध,प	ग री	सा निसा,सा	सारी गप	ध ,धनिसांनि
सुन रे	SSSS S,सु	जा S	S SS,न	अनु पम	रा SSSS
३	४	×	०	२	०

धप प	गप प,	गप धसां	रीं सां	धसां –,	रीं सां ‖	सां धप,गपधसां
गS रू	SS प,	रंग रस	भ रे	SS S,	म ल ‖	य माS,SSS
३	४	×	०	२	० ‖	३

निनि धप,	धपगप ध	धध –प,	धपगप धप	गरी सा;
SS रुत,	नाSSS S	SS Sम,	सुSSS SS	न्दS र;
४	×	०	२	०

अंतरा

							गप
							बिन
धसां ,सांसां	सांरींगंपं गंरीं	सां निसां,सां,	सांसां रींसां	निध प,ध	पप गप		
मS ,ध्यम	खाSSS डव	जा SS,त,	सप सम	वाS द,क	रत अति		
३	४	×	०	२	०		

गरी सासा, सारी ,गप | गपधसां रीं | सां,नि धप | धप ग,प | गरी सासा;
सुऽ स्वर, | गाऽ ,वत | प्राऽऽऽ ऽ | त,स मय | पर म,म | नोऽ हर;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

निध प |
सुन रे | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग वसंतमुखारी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: उठत जिया हूक सुनि कोयल कूक
बिरहा अगन जरि रैन दिना
नहीं चैन परे मोहे कारी करूँ।

अंतरा: लगन लगी मिलबे को चाहे
जिया नहीं मानत, निस दिन
नीर झरे नैननसों, कारी करूँ ॥

स्थायी

म प ग म | प – प, प | प ध नि सां | ध – प, नि
ठ त जि या | हू ऽ क, सु | नि को य ल | कू ऽ क, बि
३ | × | २ | ०

ध प म, प | ग म रीसा, | रीं – नि, सां | ध नि, ध प
र हा ऽ, अ | ग न ज रि, | रै ऽ न, दि | ना ऽ, न हीं
३ | × | २ | ०

पध निसां नि, ध | प मप ग म, | रीग मप मग, म | री – सा; ध
चैऽ ऽऽ न, प | रे ऽऽ मो हे, | काऽ ऽऽ रीऽ, क | रूँ ऽ ऽ; उ
३ | × | २ | ०

अंतरा

प ध –,नि | सां – –, प | ध निसां रीं सां | ध प –, म
ग न ऽ,ल | गी ऽ ऽ, मि | ल बेऽ ऽ को | चा हे ऽ, जि
३ | × | २ | ०

री –,मप म | री – सा सा, | सा सा म मग | प – ध, ध
या ऽ,नऽ हीं | मा ऽ न त, | नि स दि नऽ | नी ऽ र, झ
३ | × | २ | ०

सां –,नि ध | पम प म ग, | रीग मप मग,म | री – सा; ध
रे ऽ, नै ऽ | नऽ न सों ऽ, | काऽ ऽऽ रीऽ,क | रूँ ऽ ऽ; उ
३ | × | २ | ०

म प ग म |
ठ त जि या | ----- इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग वसंतमुखारी – एकताल (विलंबित)

स्थायी : मालनियाँ लावो री गूँध लावो री हरवा
सरस सुगन्धित अत सुन्दर।

अंतरा : साजन घर आइला भईलो आनन्द अत
लागूँ गरवा डारूँ हरवा सरस सुगन्धित अत सुन्दर॥

स्थायी

पध,प म,मप | मग,म पप | ध ,पध | रीं सां | निसां,रींसां | ध प
माऽ,ऽ ऽ,ऽऽ | ऽऽ,ऽ लनि | याँ ,लाऽ | वो री | ऽऽ ,गूँध | ला ऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

ध	म ग	सा मेप	नि ग	
पधनिसां निधप-	पपमग,म रीसा,	निसाम- ग,म	प,ध प,मप	मग म(म)
वोऽऽऽ रीऽऽऽ	हऽऽऽ,ऽ रवा,	सरसऽ ऽ,सु	गं,धि त,अत	सुऽ ऽऽ
३	४	×	०	२

ग	ध प	म म	
री सा;	‖ पध,प मप,म	गम ,पप	
न्द र;	‖ माऽ,ऽ ऽऽ,ऽ	ऽऽ ,लनि	---- इत्यादि
०	३	४	

अंतरा

म नि सां सां	नि	सां सां नि		प
गमध- ,निनि	सां ,रींसां,	निनिसां- रींसां	निसां,नि धप,	मपम-
साजनऽ ,घर	आ ,इला,	भईलोऽ आन	ऽऽ,न्द अत,	लाऽगूँऽ
४	×	०	२	०

म म	ध	म ग	सा सा म प
गम,पप	‖ पधनिसां निधप-,	पपमग,म रीसा,	निसाम- ग,म
ऽऽ,गर	‖ वाऽऽऽ डाऽरूँऽ,	हऽऽऽ,ऽ रवा,	सरसऽ ऽ,सु
	३	४	×

नि ग		ग	ध प	म म	नि
प,ध प,मप	मग म(म)	री सा;	‖ पध,प मप,म	गम ,पप	ध---
गं,धि त,अत	सुऽ ऽऽ	न्द र;	‖ माऽ,ऽ ऽऽ,ऽ	ऽऽ ,लनि	याँ
०	२	०	३	४	×

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग चारुकेशी

चारुकेशी यह दाक्षिणात्य संगीत प्रणाली में एक अति मनोरंजक राग-स्वरूप है, जो कि चारुकेशी (२६वाँ मेलकर्ता) का जन्य है। अतएव इसमें दाक्षिणात्य परिभाषा के अनुसार क्रमशः षड्ज, चतुःश्रुति ऋषभ, अंतर गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, शुद्ध धैवत, कैशिक निषाद, ये स्वर लगते हैं। हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में यही स्वर क्रमशः षड्ज, शुद्ध ऋषभ, शुद्ध गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, कोमल धैवत, कोमल निषाद अर्थात् सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां ये स्वर लगते हैं।

यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी पंचम तथा संवादी षड्ज है। दिन के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। इसका चलन भी सरल ही है।

स्वर – विस्तार

१. सा, नि, धप, धमपध सा, गरे, रे, रे, गम प, मग, ग, ग, रे ग म प, धप, मपम ग, ग, रे, रे, गमप म, ग ग, रे, रे, सा।

२. सा, रे ग, गमप, पध नि, धप, मग रे, रे, गम प, सा रे ग म प ध, प, ध नि सां, नि ध प, नि, ध प म ग, ग ग, रे रे, गम प, म ग, ग, रे, रे, सा, नि, ध प, ध निसा, रेगमप।

३. प, म ग ग, रे ग म प, प ध, निसांरें, सां, रेंसां, निधप, म प ध नि सां, रें रें, गंमंगं रें, सां, पध, निसां, रेंसां, निधप, मप, मग रे, गमप, धनिसां, निधप, मग, ग, रे ग म प, ध निसा, रेंगंमंगंरेंसां, रें, रें, सांनिधप, धनिसां, निधप, मप, मगग, रे ग मप, धनिधप मग रे, गमप, मग रे, सा।

४. अंतरा: पपधसां, सां, रेंगंमं, रेंसां, रें रें, गंमंपं, मंगं रें, सां, रें रें, सांनिधप, मगरेगमप धनिसां, निधपमग, मपमग रे, सा।

टिप्पणी: चारुकेशी के ही समान एक धुन उर्दू गज़लों में गायी हुई प्रायः सुनाई देती है।

राग चारुकेशी-त्रिताल (मध्यलय)

(संस्कृत में रचित)

स्थायीः प्रिये चारुकेशी मनसिज मनोहारिणि
चन्द्रमुखि सुन्दरी नैव विद्यते
उपमा ते हृद्यतायाः।

अंतराः व्याकुलोऽयं रजनी वरो हत गर्वोम्लान मुखः
संकुचित कलः शिवशेखराश्रित
स्रस्तस्ते रमणीयतरतायाः॥

स्थायी

				Pickup
				सा
				प्रि
री ग - म	प - - -	पध निसां रींसां निध	पम प प, ध	
ये चा ऽ रु	के ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ शि, म	
३	×	२	०	
नि ध प म	ग - मप म	ग म री सा	नि ध प सा	
न सि ज म	नो ऽ ऽऽ हा	ऽ ऽ रि णि	च ऽ न्द्र मु	
३	×	२	०	
री, ग - म	प, ध - नि	सां - रीं सांरीं	सांनि धप -, मप	
खी, सु ऽ न्द	री, नै ऽ व	वि ऽ द्य तेऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ, उऽ	
३	×	२	०	
मग रीसा निसा, निध	प, म - प	पध निसां -, निध	पम गरी सा; सा	
पऽ माऽ ऽऽ, तेऽ	ऽ, हृ ऽ द्य	ताऽ ऽऽ ऽ, याऽ	ऽऽ ऽऽ ह; प्रि	
३	×	२	०	

अंतरा

			ध़ प व्या
– ध़ सां –	– सां –, मं	पं मं – रीं	सां – –, रीं
ऽ कु लो ऽ	ऽ यं ऽ, र	ज नी ऽ व	रो ऽ ऽ, ह
3	×	2	०
रीं रीं – सां	–, म प मग	री सा –, सा	– री ग म
त ग ऽ वीं	ऽ, म्ला ऽ नऽ	मु खः ऽ, सं	ऽ कु चि त
3	×	2	०
प ध़ –, नि	सां रीं – रीं	रींगं मं रीं सां	–, सा – री
क लः ऽ, शि	व शे ऽ ख	राऽ ऽ श्रि त	ऽ, स्त्र ऽ स्त
3	×	2	०
– ग –, ग	म प – ध़	नि सांरींरीं सांनि	धप मग रीसा; सा
ऽ स्ते ऽ, र	म णी ऽ य	त र ताऽ याऽ	ऽऽ ऽऽ ऽह; प्रि
3	×	2	०
री ग – म			
ये चा ऽ रु	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार		
3			

राग चारुकेशी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः बनरा बनि आयो री बनरी को ब्याहन
अत सुन्दर सज सीस सेहरा नीको।

अंतराः सरस सुगन्ध बेला चमेली
बनरे के गरे हरवा सोहत
बनरी के हाथ कंगनवा नीको॥

स्थायी

म नि ध प	म ग री	सा ग	प
,नि ध प	म ग री सा	री,नि सा री	ग म प म
, ब न रा	ब नि आ यो	री, ब न री	को ब्या ह न
×	2	0	3
म प ध नि सां नि		सां नि ध प नि ध नि ध	
–, ग म प	ध नि,सां सां	नि ध प, नि	ध प, ध प
ऽ, अ त सु	न्द र,स ज	सी ऽ स, से	ह रा, नी को
×	2	0	3
प) म नि ध प	म ग री		
म; नि ध प	म ग री सा		
ऽ; ब न रा	ब नि आ यो	----- इत्यादि	
×	2		

अंतरा

म नि ध		मं गं	नि नि
प प प, ध	सां – सां, गं	मं रीं –, सां	ध – – प
स र स, सु	ग ऽ न्ध, बे	ऽ ला ऽ, च	मे ऽ ऽ ली
×	2	0	3
प नि ध	प	म	सां
–, नि ध प	– म – प	म – –, ग	म पध निसां, नि
ऽ, ब न रे	ऽ के ऽ ग	रे ऽ ऽ, ह	र वाऽ ऽऽ, सो
×	2	0	3
नि ध प		नि सां रीं सां	नि नि ध
ध प, म प	म ग –म री	सा, सां रीं सां	नि ध, ध प
ह त, ब न	री के ऽऽ हा	थ, कं ग न	वा ऽ, नी को
×	2	0	3
प) म नि ध प	म ग री		
म; नि ध प	म ग री सा		
ऽ; ब न रा	ब नि आ यो	----- इत्यादि स्थायी के अनुसार	
×	2		

राग चारुकेशी–तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : नैया परी मजधार, तोहरे बिना को लगाइहैं पार।

अंतरा : ना कोऊ संग ना साथी कोऊ न खेवैया

जो लेहैं सम्हार॥

स्थायी

नि़ प़ म़ नि़	म प	ग	
रीसा, नि़सारीसा धनि़ ध़प़ ,ध़	सा – – ,गम	प –म ग –म	री – सा नि़सा
नैS, SSSSS याS SS Sप	रीSS ,मज	धाSS SSS	S S र, SS
3	×	2	0
नि़ ग नि़ ध़	नि	ध	नि ध प म ग री
,सासा रीग ,मपध़ प,	रीं –सां धप –म	प –,पधनि– –	धप मग री सा;
,तोह रेS ,SSबि ना,	को Sल गाS Sइ	हैं S, पाSSS S	SS SS S र;
3	×	2	0

अंतरा

प मप ध		मं गं	नि. नि.
धम ,पध	सां निसां रीं, सां	गं –मं रींसां	सां सां – रीं,सां
नाS ,कोऊ	सं SS ग, ना	सा SS थी S	को ऊ S न,खे
3	×	2	0
नि	ग	नि मपधप	निधपम ग री
ध – प –,	म – पधनिसां –	धप ,म गम पनि	धप मग री सा;
वे S याS,	जोS लेSSS S	हैंS ,स म्हाS SS	SS SS S र;
3	×	2	0

राग चारुकेशी–तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : बालमुवा परदेस गये, अनत बिलम रहे,

ना जानूँ कौन सुने, मोरी बिरहा बिथा, सजनी अब।

अंतरा : जाय कहो कोऊ, पियासों इतनी बिनती

बेग लिआओ, राह तकत हूँ, बिरहा की माती,

दिन-रजनी अब॥

स्थायी

म सा म ग ग म नि
गमपम,गरी सा री,सानि ,सारी | ग म म ,म | गमपधनि ,धप
बाऽऽऽ,लमु वा ऽ,ऽऽ ,पर | दे ऽ स ,ग | येऽऽऽऽ ,अन
३ × २

प प ग प म ग म प नि
धु,पम मप,मग | म,गरी रीम गरी सा, || गमप- मपधनिसां-
त,बिऽ लऽ,ऽऽ | म,रऽ हेऽ ऽऽ ऽ, || नाऽऽऽ जाऽऽऽऽऽ
० ३

सां नि प सां नि प ध नि सां नि
नि धु प, | रींसां -,निधु प,-म | पधनि- धनिसां- निधु प, |
नूँऽ ऽ, | कोऽ ऽ,नसु ने, ऽमो | रीऽऽऽ ऽऽऽऽ बिर हा, |
× २

प नि ध प म ग म ग री
निधपम ग,पम ग रीसा; ||
बिथाऽऽ ऽ,सज नी अब; ||
०

अंतरा

म म प ध नि नि नि गं सां नि ध
प,पधु | सां ,निसां रींसां ,सां | सांरींगंमं रींसां ,रींसां निधप-, |
जा,यक | हो ,ऽऽ कोऊ ,पि | याऽऽऽ सोंऽ ,इत नीऽऽऽ, |
× २

ध प ध प नि ध नि सां नि ध म नि
पधु धनि निसां ,निसां || मप धु,सां सांरींसां- निधप-, | रीम प,धु
बिन तीऽ ऽऽ ,ऽऽ || बेऽ ग,लि आऽऽऽ ओऽऽऽ, | राऽ ह,त
० २ ×

सां नि नि धु प म म धु सां नि ध
निसां धुप, | धुपमग गमप- पधनिसां निधप- |
कत हूँऽ, | बिरहाऽ कीऽऽऽ माऽऽऽ तीऽऽऽ |
२

प नि ध प म ग प म ग री
निधुपम ग,रीगमप मग रीसा; ||
दिन रज नी,ऽऽऽऽ ऽऽ अब; ||
०

राग दाक्षिणात्य वसंत

कर्नाटक संगीत प्रणाली में यह राग केवल 'वसंत' के ही नाम से जाना जाता है। चूँकि हिन्दुस्तानी संगीत प्रणाली में भी इसी नाम का राग प्रचलित है, जो इस राग-स्वरूप से भिन्न है। अतएव इस राग को स्वतंत्र रूप से पहिचानने हेतु 'दाक्षिणात्य वसंत' इस नाम से हिन्दुस्तानी प्रणाली में इसे जाना जाता है। गत कुछ वर्षों से यह राग हिन्दुस्तानी प्रणाली में रूढ़ हुआ है।

इस राग को हटकाम्बरी(१८ वाँ मेलकर्ता) का जन्य माना गया है आरोह में रिखब-पंचम ये दो स्वर तथा अवरोह में केवल पंचम वर्ज्य होने के कारण इसकी जाति औड़व-षाडव मानी गई है। वादी स्वर मध्यम एवम् संवादी षड्ज माना गया है। कर्नाटक संगीत की प्रथानुसार इस राग को किसी भी समय गाया जा सकता है।

आरोह – अवरोह

सा ग म ध, नि ध, सां। सां नि ध म, ग, रे सा॥

स्वर – विस्तार

१. सा, मग, मध, नि ध, धनि, धम, धम, ग, मग, रेसा।

२. सा, ऩिध़, साग, म, गमध, धनि, धम, धनिसांरेंसां, सांनि, धनि, धम, गमध, निध, मधनिसां, रेंसां, निध, मध, निधम, धम, ग, रेसा।

३. सा, म, धम, गम, धम, निध, निध, म, गमधनि, धनिधम, धमधनिसां, रेंसां, निध, निध, म, गमधनि, सांनिधम, धम, गम, ग, रेसा।

४. मग, मधनिध, सां, धनिसां, रेंसां, मं, गंमं, गंरेंसां, सांनि, धनिसां, मं, गंरेंसां, गं, रेंसां, निध, मधसां, निध, धनि, धम, धम, गम, गरेसा।

५. सागमग मगरेसा, ध़ऩिसाग सागमगरेसा, ऩिसागम गमधम धनिसांनि सांनिधनिधम धमगमगरेसा, सागमग मधमधनिध निसांरेंसां धनिसांमं गंरेंसांनि धनिधम गमधनि धसांनिध निधमधमग मगरेसा, ध़ऩिसाग मधनिसांमं – गंरेंसांनिधम गरेसा।

राग दाक्षिणात्य वसंत — दाक्षिणात्य रूपक (मध्यलय)

ऋतु आयो अत सुखकर, नव पल्लव हरियालो ॥टेक॥

नव कुसुम सुपरिमलयुत, मंद मंद शीत पवन

अनंग दूत लहलहरत बढ़ि आयो ॥१॥

याहु समे बिंदराबन ब्रिज-नन्दन रास रच्यो

अत सुन्दर मन भावन, ब्रिज-गोपी बिच राजत राधा हरि

निहरि निहरि सब सुध बुध बिसरायो ॥२॥

मृदंग झाँझ मुरली धुन गरजत चहुँ ओर

परम घन गंभीर शब्द उठ्यो नभ मण्डल, यातें

सुर नर मुनि जन मन धाये, निरखि निरखि यह लीला

दास 'सुजन' लीन भयो, जस गायो ॥३॥

टेक

ग	ग	नि	नि	ध	
म म	म ध ध –,	धनि धम	धनि सांरीं सांनि ध,	नि नि	ध म म म
ऋ तु	आ ऽ यो ऽ,	अऽ तऽ	सुऽ खऽ कऽ र,	न व	प ऽ ल्ल व
×	२	×	२	×	२

नि	नि		
धनि धम	धनि सांरीं सांनि सां	– –	– – – –
हऽ रिऽ	याऽ ऽऽ लोऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	×	२

(१)

ग	नि̣			ध	ग
म म	सा सा सा, सा	म म	म म ध ध,	नि सांनि	ध, म – म
न व	कु सु म, सु	प रि	म ल यु त,	मं ऽऽ	द, मं ऽ द
×	२	×	२	×	२

ग		ग	म	नि	
म –	म, ग ग ग,	म म	म, ध – ध,	धनि नि	ध ध म म
शी ऽ	त, प व न,	अ नं	ग, दू ऽ त,	लऽ ह	ल ह र त
×	२	×	२	×	२

नि नि

धनि धम | धनिसांरीं सांनि सां || – – | – – – – ||

बS ढ़िS | आS SS योS S || S S | S S S S || ऋतु आयो

× | 2 || × | 2

(२)

नि नि नि ध ग

सां – | सां, सां सां –, || सां सां | नि ध ध ध, || म म | म – म म

या S | हु, स मे S, || बिं द | रा S ब न, || ब्रि ज | न S न्द न

× | 2 || × | 2 || × | 2

म नि नि सा ग ध

गम गरी | सा सा सा –, || सा सा | म – म म, || म ध | नि सांनि धम

राS SS | स र च्यो S, || अ त | सु S न्द र, || म न | भा SS व न

× | 2 || × | 2 || × | 2

नि नि ग ग

ध नि | सां रीं सां – || सां सां | नि – ध ध, || म – | म – ग ग

ब्रि ज | गो S पी S || बि च | रा S ज त, || रा S | धा S ह रि

× | 2 || × | 2 || × | 2

नि सा म ध नि नि

सा री | सा, म म म, || ध ध | सां सां नि ध || धनि धम | धनिसांरीं सांनिसां

नि ह | रि, नि ह रि, || स ब | सु ध बु ध || बिS सS | राS SS योS S

× | 2 || × | 2 || × | 2

– – | – – – – ||

S S | S S S S || ऋतु आयो

× | 2

(३)

नि नि नि नि

सां सां | सां, सां – सां, || ध नि | सां मं मं मं, || गं रीं | सां सां, सां सां

मृ दं | ग, झाँ S झ, || मु र | ली S धु न, || ग र | ज त, च हूँ

× | 2 || × | 2 || × | 2

ग नि सा ग

नि ध | ध, म ग ग, || री री | सा सा – सा, || म – | म म म –

ओ S | र, प र म, || घ न | गं भी S र, || श S | ब्द उ ठ्यो S

× | 2 || × | 2 || × | 2

ग   म   नि   नि
म म | ध - ध ध, || सां रीं | सां -, सां सां || नि नि | ध ध म म
न भ | म ऽ ण्ड ल, || या ऽ | तें ऽ, सु र || न र | मु नि ज न
× | 2 || × | 2 || × | 2

म   ध   ध   ग   म   नि
ग ग | री - सा -, || नि नि | ध, नि नि ध, || म म | ग म ध नि
म न | धा ऽ ये ऽ, || नि र | खि, नि र खि, || य ह | ली ऽ ला ऽ
× | 2 || × | 2 || × | 2

नि   ध   ध
सां रीं | सां, नि ध ध, || नि नि | ध म म -, || धनि धम | धनि सांरीं सांनि सां
दा ऽ | स, सु ज न, || ली ऽ | न भ यो ऽ || जऽ सऽ | गाऽ ऽऽ योऽ ऽ
× | 2 || × | 2 || × | 2

- - | - - - - ||
ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ || ऋतु आयो.....
× | 2

राग दाक्षिणात्य वसंत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सरस सुगन्ध फूल खिले
या प्रात समे बहे मलय समीर
शीत मंद अतही मन भावन।

अंतरा: चिरियाँ चुहचुहात अंबुवा डार
ऋत बसंत को आगम भयो है
रसिक मन मोहन मदन जगावन॥

स्थायी

म   नि   ध
ग म ध नि | सां - - सां, | नि ध ध, नि | ध - म -
स र स सु | ग ऽ ऽ न्ध, | फू ऽ ल, खि | ले ऽ ऽ ऽ
3 | × | 2 | 0

ग म ध नि	सां (सां) — सां,	नि ध ध,नि	ध —,म —
स र स सु	ग ऽ ऽ-ध,	फू ऽ ल,खि	ले ऽ,या ऽ
३	×	२	०
ग म ग री	सा —,ध़ नि़	सा ग म,ध	नि सां नि ध
प्रा ऽ त स	मे ऽ,ब हे	म ल य,स	मी ऽ ऽ र
३	×	२	०
नि ध म धनि	सांरीं सां,नि ध	गम धनि,नि ध	ग मग री सा;
शी ऽ त मंऽ	ऽऽ द ,अ त	हीऽ ऽऽ,म न	भाऽऽ व न;
३	×	२	०

अंतरा

सां सां ध नि,	सां सां सां गं	मं मं, गं रीं	सां, नि ध ध
चि रि यँा ऽ,	चु ह चु हा	ऽ त, अं बु	वा, डा ऽ र
३	×	२	०
ध नि सां रीं	— सा नि ध,	ग ग म म	ग री सा—
रु त ब स	ऽ न्त को ऽ,	आ ग म भ	यो ऽ है ऽ
३	×	२	०
ध़ नि़ सा,ग	म म ध नि,	सां नि ध,म	ग मग, री सा;
र सि क,म	न मो ह न,	म द न,ज	गा ऽऽ, यो ऽ;
३	×	२	०

राग दाक्षिणात्य वसंत–एकताल (विलंबित)

स्थायी : कासे कहूँ अपनी बिथा ये, कहालों सहूँ
बिरहा की ये गत सखी री।

अंतरा : गये परदेस बालम मेरे, कल ना मोहे इक छिन
तबतें दिन रैन तरपत हूँ सखी री॥

स्थायी

म धम	धनि सां	निसां ,सांरीं	सां निध	नि ,ध	म गम
का सेक	हूँS S	SS ,अप	नी SS	S ,बि	था SS
४	×	०	२	०	३

री सा,	धनि सा	–,री ग	म –	गम ,गम	गमध निसांरीं
ये S,	कहा लों	S,स हूँ	S S	SS ,बिर	हाSS SSS
४	×	०	२	०	३

सां निसां,	नि ध	नि –ध	–म –म	ग म	री सा;
की SS,	ये S	S Sग	Sत S,स	खी S	री S;
४	×	०	२	०	३

अंतरा

,म धनिसां	–,निध	सां निसां,सां	धनिरींगं,रींसां	सां (सां)	नि ध
,ग, येSS	S,पर	दे SS,स	बाSSS ,लम	मे S	रे S
३	४	×	०	२	०

मम धनिसांरींसां	नि ध	नि ध	म ग,	निसा गम	गम ,मम
कल नाSSSS	मो हे	इ क	छि न,	तब तेंS	SS दिन
३	४	×	०	२	०

गमधनि सांसां	– निध	नि ध	निध मग	गमधनि –ध	म गम
रैSSS SS	S SS	S न	तर पत	हूँSSS Sस	खी SS
३	४	×	०	२	०

(ग)री	सा;	(ग)म	(नि)धम	धनि	सां		
री	ऽ;	का	सेक	हूँऽ	ऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार
२		४		×		

राग परमेश्वरी

राग परमेश्वरी का यह मनोरंजक राग-रूप लगभग ३०-३५ वर्षों से पं.रविशंकर के योगदान स्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत प्रणाली में प्रविष्ट हुआ है। पूर्वांग में भैरवी तथा उत्तरांग में काफी थाटों के स्वरों के संमिश्रण से इस राग की संकल्पना की गई है, ऐसा जान पड़ता है।

दाक्षिणात्य संगीत प्रणाली के अनुसार, इस राग का मेल(थाट) १०वाँ मेलकर्ता 'नाटकप्रिया' हो सकता है। इस मेलकर्ता के अंतर्गत आता हुवा जन्य राग 'अलंकारप्रिया' का षाडव-षाडव राग-रूप बहुतांश में इसी परमेश्वरी राग से मिलता-जुलता पाया जाता है। पंचम स्वर इसमें वर्ज्य है। गान समय दिन का दूसरा प्रहर माना जायेगा। इसमें वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज होगा।

आरोह-अवरोह स्वरूप

सा रे ग म, ध निसां। सां नि ध, म, गम, रेगरेसा ॥

स्वर-विस्तार

१. सा, म, गम, रेगरेसा, धनिसा, गमरे, मध, ग, मग, रेगरे, सा।

२. सा, गमरे, सा, निसा, धनिगरे, सा, मधनिसा, गरे, गमधम, धमगरे, गरेनिध, निसा।

३. सानि धनिसारेगम, गरे, गम, रेगमग मध, म, गमधग मध, म, धमगरे, गमनिध, निध, म, मधनिध, निध मधमगरे, गरे मग धम गमरे, गरेसा, निसा, धनिसा।

४. सारेगमरे, गम, ध, निगरे, गम, गमधनिध, निधमगरे, गम, रेगमध, मधनिसां, निधमधनिध निरें, सां, धनिसांरेंगंरें, निगंरेंसां, धनिसां धनिध, निधनिधम गमरे, निगरेनिध, निसा।

५. सा, गरेनि़ध़, नि़गरेगरेसा, ध़नि़, रेगम, धनिध, ग, मरे, गरेसा, ध़नि़गरे, गमनिध, मधनिरें-सां, रेंनिसां, धनिध, मधनिगं, रेंगंरेंसां, धनिगंरेंनिध, मधनिधम, गमरे, गरेनि़ध़, म़ध़नि़सा, रेगमध, मधनिसां, निध, मधम, गम, रेगरेसा।

६. अंतरा: निधम, गमरे, गमध, निसां, धनिसांरेंगंरें, निगंरेंसां, धनि गंरेंनि धनिध, निधनिधम गमरे, मग धमगरे, गरे, सा।

७. सां, निध, निरें, सां, सामगरे, गमनिध, मधनिरें, सां, धनिसांरें गंरें, गंमंरें, गंरेंनि, धनिरेंसां, धनि गंरेंनि, धनिसां, मधनि, गमध, रेगम, ध़नि़सा, ध़नि़सारेगमधनिसांरें गंरेंनिध, मधम गमरे, सा।

८. तानें: सारेग रेग नि़सारे ध़नि़सानि़ सारेगरे गरेसा, सानि़ ध़नि़गरे गम रेगमग रेगरेसा, नि़सारेगमग मध गमधम धनिध मध गमग रेगमग रेगरेसा, धनि़ ध़नि़सारे सारेगम गमधनि धनिसांनिधम निधमग, रेगमधनिसां गंरेंसांनिधम गमधनि सांनिधमग रेगरेसा।

राग परमेश्वरी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: कौन अनोखे अनारी खिलारी
कहाँते आयो खेलहु न जाने
बरजोरी करत एकहु न माने।

अंतरा: जानूँ नाहीं नाम गाम ठाँव-ठौर
ऐसन संग कैसे खेल खेलें
वाको मरम 'सुजन' पहचाने॥

स्थायी

म						नि़	सा			नि़	सा			म	
ग	म	ग	,री	सा	–	ध़	,नि़	सा	–	ध़	,नि़	सा	–	गमध	निसां
को	ऽ	न	,अ	नो	ऽ	खे	,अ	ना	ऽ	रि	,खि	ला	ऽ	रीऽऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

ग म ग,री	सा – ध़,नि़	सा – ध़,नि़	सा – सा,ग
को ऽ न,अ	नो ऽ खे,अ	ना ऽ रि,खि	ला ऽ री,क
३	×	२	०
म – धनि सांरीं	सां – सां –,	सां रीं गं,सां	सां – सां –
हाँ ऽ तेंऽ ऽऽ	आ ऽ यो ऽ,	खे ल हु,न	जा ऽ ने ऽ
३	×	२	०
म म मध निसां	रीं, सां नि ध,	नि सां नि,ध	ग म री सा;
ब र जोऽ ऽऽ	री, क र त,	प क हु,न	मा ऽ ने ऽ;
३	×	२	०

अंतरा

सां
जा

सां, ध नि ध	सां – सां,रीं	गं मं,रीं –	सां,नि – ध
नूँ, ना ऽ हिं	ना ऽ म,गा	ऽ म,ठाँ ऽ	व,ठौ ऽ र
३	×	२	०
ध नि सां रीं	सां नि,ध –	नि,ध –म,	ग म री सा
ऐ ऽ स न	सं ग,के ऽ	से, खे ऽ ल,	खे ऽ लें ऽ
३	×	२	०
ध़ नि़ सा री	ग म ध,नि	सां सा,ध नि	ध म गम रीसा;
वा ऽ को ऽ	म र म,सु	ज न,प ह	चा ऽ नेऽ ऽऽ
३	×	२	०

राग परमेश्वरी-एकताल(विलंबित)

स्थायी: कित गये चितचोर वे, गोवन के चरवैया
लगन लगी मोहनी मूरतसों
सुध बुध हार गई आली री।

अंतरा: दरस बिना जियरा अत बेकल
तरपत निस दिन, मैंतो चेरी भई आली री॥

स्थायी

,गमरी	सा,निसा ,धनि	सा निसा,सा	म ग	मधनिसां ,निध	म ,गम
,कितग	ये,SS ,चित	चो SS,र	वे S	गोSSS ,वन	के ,चर
	४	×	०	२	०

री -	सा -	धनि सा,री	ग म	,गम मम	धनि सां	,सां निसां
वे S	या S	लग न,ल	गी S	,SS मोह	नीS S	,मू रत
३	४	×	०	२	०	३

नि ध	गम ,धनि	धम ,गम	री सा,	धनिसारी गम	गमधनिसां ;गमरी
सों S	सुध ,बुध	हाS,रग	ई S,	आSSS लीS	रीSSSS ;कितग
४	×	०	२	०	३

अंतरा

धनि सां,रीं	सां ,निसां	रींगं रींसां,	नि सां	निसांरींसां निध,
दर स,बि	ना ,SS	जिय राS,	अ त	बेSSS कल,
४	×	०	२	०

गम रीसा	निसा धनि	सा ,निसा	गमधनिसां, धम	ग,म रीसा,
तर पत	निस दिन	मैं ,SS	तोSSSS, चेS	री,भ ईS,
३	४	×	०	२

धनिसारी, गम | गमधनिसां ;गमरी | सा,निसा ,धनि
आऽऽऽ लीऽ | रीऽऽऽऽ ;कितग | ये,ऽऽ ,चित
0 | 3 | ४

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग तोडी-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ध मं ग रे | सा, नि सा रे | ग -,रे ग | मं प ध नि
0 | 3 | × | 2

सां रें गं रें | सां -,मं ध | नि ध प -, | रे ग मं ग
0 | 3 | × | 2

रे -,सा नि | सा रे ग रे, | ग मं ध नि | सां -,रें गं
0 | 3 | × | 2

-, रें सां -, | नि ध -,मं | ग -, रे ग | -; मं ध नि
0 | 3 | × | 2

अंतरा

सां नि ध प, | मं ग मं ध | सां - -,रें | सां -,धनि
0 | 3 | × | 2

सां रें गं -, | रें सां -,नि | ध -, धगं | रें गं सां रें
0 | 3 | × | 2

नि सां धनि, | मं ध निसां, | रें नि ध मं | ग रे सा -,
0 | 3 | × | 2

सा रे -,रे | ग -,ग मं | -, मं ध -, | ध नि -;नि
0 | 3 | × | 2

राग तोडी- लक्षणगीत-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः मृदु रिधग तीवर मनि सुरसों सज्यो
ठाठ नाम तोडी, तासों निकस्यो राग तोडी
रसिक गुनी प्रिय, सम्पूरन, धग संवाद मधुर करि।

अंतराः द्वितीय प्रहर दिन गाये गुनीजन
मन मोहत नित सुस्वर मंडित
अनुलोम अल्प पंचम बरनत
राजत अत गम्भीर नाद भरि॥

स्थायी

			री ग
			मृ दु
री सा सा, ध	म ध नि सां	नि ध पम, प	म ग, री ग
रि ध ग, ती	व र म नि	सु र सोंऽ, स	ज्यो ऽ, ठा ऽ
०	३	×	२
री सा – सा,	ध़ – नि़ सा,	री – री, ग	ग ग, म –
ठ ना ऽ म,	तो ऽ डी ऽ,	ता ऽ सों, नि	क स्यो, रा ऽ
०	३	×	२
म, ध – ध,	म ध नि, सा	नि ध प प,	म – धनि सांरीं
ग, तो ऽ डी,	र सि क, गु	नी ऽ प्रि य,	स ऽ म्पूऽ ऽऽ
०	३	×	२
नि ध, ध गं	रीं – सां –	नि, ध म ग	री सा; री ग
र न, ध ग	सं ऽ वा ऽ	द, म धु र	क रि; मृ दु
०	३	×	२

अंतरा

री री ग,ग	म म ध ध,	नि सां सां,सां	नि सां सां सां
द्वि ती य,प्र	ह र दि न,	गा ऽ ये,गु	नी ऽ ज न
०	३	×	२
रीं गं रीं -	सां सां सां सां,	नि - सां रीं	नि ध ध ध
म न मो ऽ	ह त नि त,	सु ऽ स्व र	म ऽ ण्डि त
०	३	×	२
म ध नि सां	रीं नि - ध	मप धप म ग	री री सा सा
अ नु लो ऽ	म अ ऽ ल्प	पंऽ ऽऽ च म	ब र न त
०	३	×	२
री - ग ग	म म ध ध	ध,निसां रींसां निध	म ग; री ग
रा ऽ ज त	अ त गं भी	र,नाऽ ऽऽ दऽ	भ रि; मृ दु
०	३	×	२
री सा सा,ध	म ध नि सां		
रि ध ग,ती	व र म नि	..... इत्यादि स्थायी के अनुसार	
०	३		

राग तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः सुनि सुमिर मन राम राम नाम

जपतहू कटत भव बन्ध सब।

अंतराः पतित पावन जग वन्दन रघुनन्दन

भव भंजन, कृपा करत ही

हरत पाप ताप दुख दंद सब॥

स्थायी

–; नि ध,प	म ग म म	ध – ध, नि	म ध,नि सां
–; सु नि,सु	मि र म न	रा ऽ म,रा	ऽ म,ना ऽ
0	3	×	2
रीं, म ध नि	ध प –,री	ग म,ध नि	सां रीं गं रीं
म, ज प त	ह ऽ ऽ,क	ट त,भ व	ब ऽ न्ध स
0	3	×	2
सां; नि ध प	म ग म म		
ब; सु नि सु	मि र म न	....इत्यादि	
0	3		

अंतरा

म ध नि ध	म ग,री सा	री – ग ग,	म म ध –
प ति त पा	व न,ज ग	व ऽन्द न,	र घु न ऽ
0	3	×	2
नि नि,सां सां	रीं – सां सां,	सां रीं गं रीं	सां सां नि ध
न्द न,भ व	भं ऽ ज न,	कृ पा ऽ क	र त ही ऽ
0	3	×	2
–,म ध नि	ध प प,री	ग म,ध नि	सां रीं गं रीं
ऽ,ह र त	पा ऽ प,ता	ऽ प,दु ख	द ऽ न्द स
0	3	×	2
सां; नि ध प	म ग म म		
ब; सु नि सु	मि र म न	....इत्यादि स्थायी के अनुसार	
0	3		

राग तोडी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी : सियरि पवन बहे मन्द मन्द अति
सुगन्ध चहूँ ओर या प्रात समे
हुलसै जिया सुख चैन पावे।

अंतरा : सुर लय सुरस सिंगार सजावे
गाये बजाये रिझाये गुनीवर
सुनत 'सुजन' मन मोद भरायो
गीत माधुरी बरनी न जावे॥

स्थायी

री ग री,सा	सा नि सा री	ग – ग,म	प ध,म ग
सि य रि,प	व न ब हे	म ऽ न्द,म	ऽ न्द,अ ति
०	३	×	२
म री ग री,	सा सा नि,सा	री ग,म ध	निसां रींसां नि,ध
सु ग ऽ-ध,	च हूँ ऽ,ओ	ऽ र,या ऽ	प्राऽ ऽऽ त,स
०	३	×	२
प –,री ग	री –,सा सा,	म ध नि सां	नि,ध प प;
मे ऽ,हु ल	सै ऽ,जि या,	सु ख चै ऽ	न,पा ऽ वे;
०	३	×	२

अंतरा

नि ध म ग,	म म ध,ध	सां – सां,सां	नि सां सां –
सु र ल य,	सु र स,सिं	गा ऽ र,स	जा ऽ वे ऽ
०	३	×	२
नि ध ध,ध	नि सां सां,सां	सांरीं गंरीं सां	निसां रींसां नि ध
गा ऽ ये,ब	जा ऽ ये,रि	झाऽ ऽ ये गु	नीऽ ऽऽ व र
०	३	×	२

म ध नि,सां	नि नि ध प,	मं ग ग,मं	री ग री सा
सु न त,सु	ज न म न,	मो ऽ द,भ	रा ऽ यो ऽ
०	३	×	२
रीं गं रीं,सां	नि सां नि ध,	मं ध निसां रींसां	नि,ध प प;
गी ऽ त,मा	ऽ धु री ऽ,	ब र नीऽ ऽऽ	न,जा ऽ वे;
०	३	×	२

राग तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : 'सुजन' सुन हरि हर में नहीं भेद
सुजन सुन हरि में हर, हर में हरि
पहचान लेहो बौरे अनारी।

अंतरा : हरि चिंतन रत हर हर घरि पल
ध्यान मगन हर के हरि
गुपत एक दोऊ रूप प्रकट भये
गंगाधर गिरधारी॥

स्थायी

			मं ध
			सु
मं ग री सा,	री ग री सा	नि –,सा री	ग – ग,मं
ज न सु न,	ह रि ह र	में ऽ,न हीं	भे ऽ द,सु
२	०	३	×
प ध मं ग,	री ग री –	सा सा,री री	ग – मं मं
ज न सु न,	ह रि में ऽ	ह र,ह र	में ऽ ह रि
२	०	३	×

नि सां	रीं	ध	नि नि
ध ध नि सां	रीं नि - ध,	म ध नि, सां	नि ध नि; ध
प ह चा ऽ	न ले ऽ हो,	बो ऽ रे, अ	ना ऽ रि; सु
२	०	३	×

ध म ग री	
म ग री सा	
ज न सु न	इत्यादि
२	

अंतरा

ग ध	नि नि	नि	सां
म ग म -	ध ध नि नि,	सां सां, सां सां	नि सां सां सां
ह रि चि ऽ	न्त न र त,	ह र, ह र	घ रि प ल
०	३	×	२

गं नि	सां		ध ध
रीं गं रीं, सां	सां सां, नि नि	सां रीं नि ध,	म म ग, म
ध्या ऽ न, म	ग न, ह र	के ऽ ह रि,	गु प त, ए
०	३	×	२

सां	प ग		
ध ध, नि सां	नि, ध प प,	म री ग री	सा - - -
ऽ क, दो ऽ	ऊ, रू ऽ प,	प्र क ट भ	ये ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ग म	ध ध नि नि	सां नि	ध म ग री
री - ग -	म म, ध ध	नि सां नि; ध	म ग री सा
गं ऽ गा ऽ	ध र, गि र	धा ऽ रि; सु	ज न सु न
०	३	×	२

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग तोडी-एकताल(मध्यलय)

स्थायी : द्रौपदी के लाज रखन गजमोचन गिरिधारन
कृपा सिंधु आप किये दीन जनोद्धरन काज।

अंतरा : आयो शरन तोरे द्वार दीन 'सुजन' हाथ जोर
बिनति करहुँ बार बार टेक रखियो नेक आज॥

स्थायी

(सां)नि	सां	नि	ध	प	प,	म॑	ग	ग,	म॑	(ध)ध	ध
द्रौ	S	प	दी	S	के,	ला	S	ज,	र	ख	न
×		०		२		०		३		४	
(ध)म॑	ध	(सां)नि	सां	नि	ध,	(ध)म॑	ग	(ग)री	–	सा	सा
ग	ज	मो	S	च	न,	गि	रि	धा	S	र	न
×		०		२		०		३		४	
(नि)सा	री	ग	(ग)री	–	(सा)सा,	ध	–	ध,	नि	(ध)म॑	ध
कृ	पा	S	सि	S	न्धु,	आ	S	प,	कि	ये	S
×		०		२		०		३		४	
(सां)नि	सां	रीं,	सां	(नि)नि	ध	प	म॑	ग,	म॑ध	निसां	सां
दी	S	न,	ज	नो	S	द्ध	र	न,	काS	SS	ज
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

(नि)सां	रीं	गं	रीं	सां	सां,	ग	(म॑)म॑	ध	(सां)नि	सां	सां
आ	S	यो	श	र	न,	ते	रे	S	द्वा	S	र
×		०		२		०		३		४	
(सां)नि	–	सां	रीं	सां	सां,	(सां)नि	–	सां	नि	ध	ध
दी	S	न	सु	ज	न,	हा	S	थ	जो	S	र
×		०		२		०		३		४	

(नि)ध ग॑	रीं, गं	रीं सां,	(सां)नि सां	सां, नि	ध ध
बि न	ति, क	र हुँ,	बा ऽ	र, बा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

(ध)म॑ ध	नि, ध	(नि ध)म॑ (म॑)ग,	(ग)री –	ग, (ध)मध	निसां रीं
टे ऽ	क, र	खि यो,	ने ऽ	क, आऽ	ऽऽ ज
×	०	२	०	३	४

राग तोडी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: गरज उठ्यो त्रिभुवनमों ऐसो
पावन नाम तिहारो मोहन
दस दिस जयजयकार भयो है।

अंतरा १: प्रेम कियो तुंवे शत्रु मित्र सों
दीन जनोद्धर साचि भये हो
आत्मज्योत प्रकाशित तुम्हरो
जीवन जग आदर्श भयो है ॥

अंतरा २: दया क्षमा शांति अरु विश्वप्रेम
सिखायो है सब जन को
जन्म भूमि दारिध्र दास्य को भार उठायो
गोवर्धन गिरधारी चरित करि दिखलायो है ॥

अंतरा ३: धन्य धन्य जय हिंद मुकुट मणि
धन्य महात्मन् जय सत्यव्रत
देश पिता बापूजी सार्थक
भारत दुःख निवारण कारण
जन्म जीवन निर्वाण भयो है ॥

टीप: यह रचना देश पिता बापूजी की पुण्यस्मृति में की गई है।

स्थायी

ग नि़ सा सा री
री ग री सा | सा –, नि़ धृ | नि़ नि़ सा री | ग – ग –
ग र ज उ | ठ्यो ऽ, त्रि भु | व न मों ऽ | ऐ ऽ सो ऽ
0 | ३ | × | २

ध म ग म ग ग
मध नि ध म | ग – री, री | ग म री ग | री – सा सा
पाऽ ऽ व न | ना ऽ म, ति | हा ऽ रो ऽ | मो ऽ ह न
0 | ३ | × | २

नि़ ध ध म ध
सा री ग ग | म – ध – | मध निसां नि, ध | प प म ग;
द स दि स | जै ऽ जै ऽ | काऽ ऽऽ र, भ | यो ऽ है ऽ;
0 | ३ | × | २

अंतरा १

ध म ध म नि नि नि
म – ग ग | म –, ध ध | सां – सां, सां | – सां सां –
प्रे ऽ म कि | यो ऽ, तुं वे | श ऽ त्रु, मि | ऽ त्र सों ऽ
0 | ३ | × | २

नि नि नि नि
ध – ध, ध | नि सां सां सां, | सांरीं गं रीं, सां | निसां रींसां नि ध
दी ऽ न, ज | नो ऽ द्ध र, | साऽ ऽ चि, भ | येऽ ऽऽ हो ऽ
0 | ३ | × | २

ध सां ध नि ध ध
म – ध – | निसां रींसां नि, ध | म – ध नि | म म ग –
आ ऽ त्म ऽ | ज्योऽ ऽऽ त, प्र | का ऽ शि त | तु म्ह रो ऽ
0 | ३ | × | २

ग ध ध ध
री – ग ग, | म म, ध – | मध निसां नि, ध | प धप म ग;
जी ऽ व न, | ज ग, आ ऽ | दृऽ ऽऽ री, भ | यो ऽऽ है ऽ;
0 | ३ | × | २

अंतरा २

ध ध -,नि	ध -,प -	म ग,म म	ध - ध -
द या ऽ,क्ष	मा ऽ,शा ऽ	न्ति ऽ,अ रु	वि ऽ श्व ऽ
०	३	×	२
म ध नि,सां	रीं - सां -	नि - ,सां रीं	नि नि ध -
प्रे ऽ म,सि	खा ऽ यो ऽ	है ऽ ,स ब	ज न को ऽ
०	३	×	२
सां रीं गं रीं	- सां,सां -	नि - सां,रीं	- नि ध -
ज ऽ न्म भू	ऽ मि,दा ऽ	रि ऽ द्र,दा	ऽ स्य को ऽ
०	३	×	२
म ध नि,ध	म ग री सा,	री - ग -	म म, ध ध
भा ऽ र,उ	ठा ऽ यो ऽ,	गो ऽ व ऽ	र्ध न,गि र
०	३	×	२
नि - सां,रीं	नि नि, ध ध	म ध मध निसां	नि ध म ग;
धा ऽ रि,च	रि त,क रि	दि ख लाऽ ऽऽ	यो ऽ है ऽ;
०	३	×	२

अंतरा ३

म - ग,म	- म,ध -	सां - सां,सां	नि सां सां सां
ध ऽ न्य,ध	ऽ न्य,जै ऽ	हि ऽ न्द,मु	कु ट म णि
०	३	×	२
रीं - गं,मं	रीं गं रीं सां,	नि - सां रीं	नि - ध ध
ध ऽ न्य,म	हा ऽ त्म न,	जै ऽ स ऽ	त्य ऽ व्र त
०	३	×	२
म ध नि सां	नि ध,प -	मप धप म ग	री - सा सा
दे ऽ श पि	ता ऽ,बा ऽ	पूऽ ऽऽ जी ऽ	सा ऽ र्थ क
०	३	×	२

री – ग ग	म – ध, ध	नि – सां सां,	रीं – सां सां
भा ऽ र त	दुः ऽ ख, नि	वा ऽ र ण,	का ऽ र ण
०	३	×	२

रीं गं रीं, गं	रीं सां, नि ध	मंध निसां नि, ध	प धप मं ग;
ज ऽ न्म, जी	व न, नि ऽ	वीऽ ऽऽ ण, भ	यो ऽऽ है ऽ;
०	३	×	२

राग तोडी – ध्रुवपद – चौताल

स्थायी: श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक
विभत्स अद्भुत रस अष्ट भेद कवि सम्मत।

अंतरा: मानत कोऊ और एक शान्त नवम रस भेद
भक्तिहुँ पुनि वात्सल्य रसहुँ करि कोऊ गिनत॥

संचारी: रस बीजतें उपजत भाव नाम मन विकार
विभाव अनुभावरु व्यभिचार भाव भेद कहत॥

आभोग: प्रेम हास्य रंज कोप हुलास अरु भीति हीक
अचरज मिलि अष्ट भाव ठायी नाम शास्त्र विहित॥

स्थायी

नि सां	नि ध	प प,	म ग	ग, म	ध ध
सिं ऽ	ऽ गा	ऽ र,	हा ऽ	स्य, क	रु ण
×	०	२	०	३	४

म ध	नि, ध	प प,	प री	ग री	सा सा
रौ ऽ	द्र, वी	ऽ र,	भ या	ऽ न	ऽ क
×	०	२	०	३	४

ग		री				ध				सां	
री	—	—	ग	—	ग,	म	—	ध	ध	नि	सां
बी	S	S	भ	S	त्स,	अ	S	द्रु	त	र	स
×		०		२		०		३		४	

सां						म	ध	नि			
नि	सां	रीं,	नि	ध	प,	ग	म	ध	नि	सां	रीं
अ	S	ष्ट,	भे	S	द,	क	वि	स	S	म्म	त
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

ध		ध				सां		नि			
म	ग	म	म	ध	ध,	नि	सां	सां,	सां	—	सां
मा	S	न	त	को	ऊ,	औ	S	र,	प	S	क
×		०		२		०		३		४	

नि		गं				सां		रीं			
सां	रीं	गं,	रीं	सां	सां,	नि	सां	रीं,	नि	ध	ध
शा	S	न्त,	न	व	म,	र	स	S,	भे	S	द
×		०		२		०		३		४	

ध						म	प		प		
म	ध	नि	सां	नि	ध,	प	री	ग	म	प	ध
भ	S	कि	हुँ	पु	नि,	वा	S	S	त्स	S	ल्य
×		०		२		०		३		४	

सां		गं				म	ध		सां		
नि	सां	रीं	गं	रीं	सां,	ग	म	ध,	नि	सां	रीं
र	स	हुँ	S	क	रि,	को	ऊ	S,	गि	न	त
×		०		२		०		३		४	

संचारी

री	नि	म				ध		सां			
सा	सा	ध	ध	—	ध	म	ध	नि	सां	नि	ध
र	स	S	बी	S	ज	तें	S	उ	प	ज	त
×		०		२		०		३		४	

(ध)मं ध	नि, (नि)सां	रीं सां,	नि ध	(ध)नि ध	— ध
भा ऽ	व, ना	ऽ म,	म न	वि का	ऽ र
×	0	२	0	३	४
(ग)री (ग)री	ग ग,	(ध)मं (ध)मं	प —	(प)प मं,	(नि)ध (नि)ध
वि भा	ऽ व,	अ नु	भा ऽ	व रु,	व्य भि
×	0	२	0	३	४
(नि)ध गं	रीं सां	नि ध,	मं ग	ग, (ध)मं	ध ध
चा ऽ	रि भा	ऽ व,	भे ऽ	द, क	ह त
×	0	२	0	३	४

आभोग

(प)मं —	ध, (ध)सां	— सां,	(नि)सां —	(नि)सां, सां	— सां
प्रे ऽ	म, हा	ऽ स्य,	रं ऽ	ज, को	ऽ प
×	0	२	0	३	४
(गं)रीं (गं)रीं	गं रीं,	(नि)सां सां,	(सां)नि —	सां, नि	ध ध
हु ला	ऽ स,	अ रु,	भी ऽ	ति, ही	ऽ क
×	0	२	0	३	४
(नि)ध नि	सां रीं	(रीं)गं गं,	(गं)रीं —	गं, (गं)रीं	सां सां
अ च	र ज	मि लि,	अ ऽ	ष्ट, भा	ऽ व
×	0	२	0	३	४
(सां)नि सां	रीं, (रीं)नि	ध प,	(मं)ग मं	ध, (सां)नि	सां रीं
ठा ऽ	यि, ना	ऽ म,	शा ऽ	स्त्र, वि	हि त
×	0	२	0	३	४

राग तोडी-वर्णम्-आदिताल

पल्लवी : हे श्रीसीते देवि रामप्राणप्रिये
रामानन्दविरामस्त्वद्दते।

अनुपल्लवी: निष्प्रकृतिः किं कुर्यात्पुरुषो
दुर्निवार्यं वियोगदुःखं रामस्य।

चरणम् : रामाश्रुसिंचनेन शोकाशोकः संवर्धते॥

पल्लवी

सां--नि	धम॑,धनि	धप,म॑प	धप,म॑ग	रीसा,सारी	गम॑-,री	गम॑ध-,	गम॑धनि,
हेSS,श्री	SS,सीS	तेS,SS	SS,देS	ऽवि,राS	SमS,प्रा	SSणS,	प्रियेSS,
×				2		3	

सांरींगं,रीं	सांनिधप,	निधम॑ग	रीसानिसा,	रीगम॑ध	नि,म॑धनि	सांरींसां-,	गम॑धनि ॥
राSS,मा	SSSS,	नSSS	SSSन्द,	विराSS	S,मSS	SSस्त्वS,	द्दतेSS ॥
×				2		3	

अनुपल्लवी

नि---,	--,सांरीं	गंरींसांनि	सांरीं सांनि	धम॑,धनि	सां,रीगम॑	गम॑ध,म॑	धनिसांरीं,
निSSS	SS,ष्प्रकृ	तिःSSS	SS किंS	SS,कुS	S,र्याSS	SSS,त्पु	रुषोSS,
×				2		3	

सां--रीं	गंम॑गंरीं	सांनिध,म॑	धनि,रीग	म॑धनिसां	रीं-सां-	निध-,म॑	गम॑धनि, ॥
दुSSर्नि	वाSSS	SSS,र्यं	Sवि,योS	गदुःSS	SSखS	राSS,S	SमSस्य ॥
×				2		3	

मुक्तायंपू

धध-,नि	धपम॑ग	रेगरेसा,	निसारेग	म॑निधनि	धम॑,धनि	सांरेंगं,नि	सांरें,म॑ध
×				2		3	

सां,गम॑रे	गसारे,नि	-सा-रे	-ग-म॑	-,धनिरें,	म॑धनि,ग	म॑ध,रेग	-,म॑धनि
×				2		3	

म॑गंम॑,रें	गंनिरें,ध	निम॑ध,ग	म॑रे-,म॑	धग-,ध	निम॑-,नि	रेंध-,नि	सांरेंगंरें ॥
×				2		3	

चरणम्

रीं--गं रींसांनिसां रीं,सांनिध मं,गरीग | मंधनि,ध मंध-,नि | सांरींसांनि ध,मंधनि
राऽऽमा ऽऽ,श्रुसि ऽ,चनेऽ न,शोऽका | ऽऽऽ,शो ऽकःऽ,सं | ऽऽवऽ धं,तेऽऽ
× | 2 | 3

चिट्टस्वरम्

१. नि--,ध --,मं- -,ग--,रे--,ग | --,मं- -,प--, | ध--,नि ---सां ||
× | 2 | 3

२. धमंमंग गरेरे,नि निसासारे ग-,मंप | प,धधनि नि,सांसांरें | रें,गं-रें -नि-सां ||
× | 2 | 3

३. निसां,निरें सां,निरेंसां, निगंरेंसां, धगंरेंसां, | मंगंरेंसां, गमंधनि | सांगंरेंसां, धरेंनि,मं
× | 2 | 3

निध,गध मं,रेमंग, पमंध-, धमंनि-, | निधरें-, रेंनिगं-, | मंप-,ध -नि-सां ||
× | 2 | 3

४. धनिध,मं धनिध,ग मंधनिध, निसांरेंसां, | धनिसांरें सां,मंधनि | सांरेंसां,गं रें गंरेंसां,
× | 2 | 3

निगंरेंगं रेंसां,मंनि धनिधप, रेमंगमं | गरेसानि, मंगरेसा, | पमंगरे, धपमंग,
× | 2 | 3

निधपमं, रेंसांनिध, गंरेंसांनि, मंगंरेंसां | निध-,ध मं-,मंध | -,धनिध -,धमं-,
× | 2 | 3

मंग-रे, गमंरेग, मंधगमं, धनिमंध, | निरेंधनि, गंरें-,सां | नि-,धमं, -,धनिसां ||
× | 2 | 3

राग गूजरीतोडी-रूपक (मध्यलय)

स्थायीः नीर जमुना तीर बिलसे, साँवरी अति माधुरी

छबि श्याम सुन्दर नन्द-नन्दन

देखि मैं भई बावरी सखि।

अंतराः मुकुट माथे करन कुण्डल, काछे पीताम्बर बिराजे

बैजयन्ती माल साजे, नेत्र कमल विशाल सोहे

अधर फरके बाँसुरी पे, धुन सुनत

भई चेरि मैं सखि॥

स्थायी

(नि)धनि	सां	सां	नि	ध	(ध)म	ग	(ध)म	ध	ध	(सां)नि	सां	नि	ध
नीऽ	ऽ	र	ज	मु	ना	ऽ	ती	ऽ	र	बि	ल	से	ऽ
⊗			2		3		⊗			2		3	
(ध)म	ध	नि	ध	-,	(ध)म	ग	(ग)री	-	री	(ग)री	-	सा	सा
साँ	ऽ	व	री	ऽ,	अ	ति	मा	ऽ	धु	री	ऽ	छ	बि
⊗			2		3		⊗			2		3	
(ग)री	-	री	(म)ग	-	ग	ग,	(ध)म	-	म	(नि)ध	-	ध	ध
श्या	ऽ	म	सु	ऽ	न्द	र,	न	ऽ	न्द	न	ऽ	न्द	न
⊗			2		3		⊗			2		3	
(सां)नि	सां	रीं	(नि)सां	नि	ध	ध	(ध)म	ग	ग	(ध)म	-	ध	ध
दे	ऽ	खि	मैं	ऽ	भ	ई	बा	ऽ	व	री	ऽ	स	खि
⊗			2		3		⊗			2		3	

अंतरा

(ध)म	(ध)म	ध	(सां)नि	सां	(नि)सां	-,	(नि)सां	सां	सां	(नि)रीं	-	सां	सां
मु	कु	ट	मा	ऽ	थे	ऽ,	क	र	न	कु	ऽ	ण्ड	ल
⊗			2		3		⊗			2		3	

धृ – धृ, नि सां सां – रीं गं, रीं नि – धृ –
का ऽ छे, पी ऽ ता ऽ म्ब र, बि रा ऽ जे ऽ
⊗ 2 3 ⊗ 2 3

धृ गं गं रीं – सां नि, धृ मं ग मं धृ धृ –
बै ऽ ज य ऽ न्ती ऽ, मा ऽ ल सा ऽ जे ऽ
⊗ 2 3 ⊗ 2 3

मं धृ नि धृ मं ग, री सा – ऩि, सारी ग ग –
ने ऽ त्र क म ल, वि शा ऽ ल, सोऽ ऽ हे ऽ
⊗ 2 3 ⊗ 2 3

री री री ग ग मं धृ, नि सां सां रीं गं गं –
अ ध र फ र के ऽ, बाँ ऽ सु री ऽ पे ऽ
⊗ 2 3 ⊗ 2 3

रीं गं रीं सां सां, नि धृ मं धृ धृ मं – धृ धृ
धु न सु न त, भ ई चे ऽ रि में ऽ स खि
⊗ 2 3 ⊗ 2 3

राग मुलतानी-सरगम-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी

ऩि सा रे़, ऩि | सा ग मं प | सां – –, सा | – मं ग प
0 3 × 2

–, प़ – ऩि, | सा प –, मं | नि –, सां गं | –, ग मं प
0 3 × 2

नि सां रें़ सां, | ऩि सा रे़ सा, | मं प धृ प, | नि सां रें़ सां;
0 3 × 2

अंतरा

नि सां नि ध	प मं ग रे	सा, ग मं प	सां – –, मं
2	0	3	×
गं रें सां, ग	रे सा, प मं	ग, ध प मं,	नि ध प, रें
2	0	3	×
सां नि, गं रें	सां, नि सां रें	नि सां, मं प	ध मं प, ग
2	0	3	×
मं प ग मं,	नि सा रे, नि	सा ग मं प	सां... इत्यादि
2	0	3	×

राग मुलतानी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: नैना नीर झरत निस दिन सखी
तकत हूँ राह उनके आवनकी।
अंतरा: दरस की आस कासे कहूँ अब
लगी लगन नित उठ पियासों मिलनकी ॥

स्थायी

पमं
नै

मंग री निसा सा,	नि सा सा, पमं	ग पमं प, प	मं ग –, सानि
ना नी ऽ र,	झ र त, नि	स दि न, स	खी ऽऽ, त
3	×	2	0
सा मं ग –,	गरी सा सा, ग	मं प –, निसां	नि ध प; पमं
क त हूँ ऽ,	रा ऽ ह, उ	न के ऽ, आ	व न की; नै
3	×	2	0
मंग री सा सा			
ना नी ऽ र	इत्यादि		
3			

अंतरा

म॑ प द

ग म॑ प नि	सां – सां, नि	– सां –, गं	रीं सां सां, नि
र स की ऽ	आ ऽ स, क	ऽ से ऽ, क	हूँ अ ब, ल
३	×	२	०
सां रीं नि सां,	नि ध प प,	नि सा ग, म॑	प ध प; म॑
गी ल ग न,	नि त उ ठ,	पि या सों, मि	ल न की; नै
३	×	२	०
ग री सा सा			
ना नी ऽ र			
३			

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग मुलतानी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : कट सोहे पीताम्बर, गरे बैजयन्ती माल।

अंतरा : माथे किरीट मुकुट अत सोहे

सदा मधुर धुन मुरली अधर धरे॥

स्थायी

म॑ प क

प ग – री	सा – – निसा	नि सा म॑ग, म॑	प ग –, प
ट सो ऽ हे	पी ऽ ऽ ऽऽ	ता ऽ ऽऽ ऽ	म्ब र ऽ, क
३	×	२	०
प ग – री	सा – नि सा	नि सा म॑ग, म॑	प – प, प
ट सो ऽ हे	पी ऽ ऽ ऽ	ता ऽ ऽऽ, ऽ	म्ब ऽ र, ग
३	×	२	०

धु प – धु | (प) मग म ग | नि़ सा ग म | प नि धुप; प
र बे ऽ ज | य ऽऽ न्ती ऽ | मा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ळऽ; क
३ | × | २ | ०

प ग – री |
ट सो ऽ है | इत्यादि
३ |

अंतरा

प म प धु | (प) मग, म प | नि –, सां नि | सां – सां –
मा ऽ थे कि | री टऽ, मु कु | ट ऽ, अ त | सो ऽ है ऽ
० | ३ | × | २

नि सां गं, रीं | रीं रीं सां सां, | नि सां नि, धुप | (प) मग म, ग
स दा ऽ, म | धु र धु न, | मु र लि, अऽ | ध रऽ ऽ, ध
० | ३ | × | २

गम पनि धुप; प | प ग – री |
रेऽ ऽऽ ऽऽ; क | ट सो ऽ है | इत्यादि स्थायी के अनुसार
० | ३ |

राग मुलतानी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: कैसे कैसे आऊँ तिहारे पास
ननदिया जागे दौरानी जेठानिया
ठठोरी करत नित कहाँ करूँ।

अंतरा: रुणझुण रुणझुण पायलिया बाजे
चलत फिरत अत जिया डर पावे
रखियो लाज अब, बिनति करत
कर जोर जोर॥

स्थायी

प
कै

नि ध प -मं | मं ग री,सा | ऩि सा मं ग | प -मं गमं,प
से कै से ऽऽ | आ ऽ ऊँ,ति | हा ऽ रे ऽ | पा ऽऽ ऽस,कै
3 | × | 2 | 0

नि ध प -मं | मं ग री,सा | ऩि सा मं ग | प - मंग,मं
से कै से ऽऽ | आ ऽ ऊँ,ति | हा ऽ रे ऽ | पा ऽ ऽस,न
3 | × | 2 | 0

ग री सा - | ऩि - सा -, | प़ ऩि सा,ग | मं पधप ग -
न दि या ऽ | जा ऽ गे ऽ, | दो रा नि,जे | ठा निऽऽ या ऽ
3 | × | 2 | 0

ग मं प,नि | सां गं रीं सां, | नि धपमं,प | ग - मं; प
ठ ठो री, क | र त नि त, | क हाँऽऽ,क | रूँ ऽ ऽ; कै
3 | × | 2 | 0

अंतरा

सां
रु

नि ध प,मं | ग री सा,ग | मं प नि सां | रीं - सां -
ण झु ण,रु | ण झु ण,पा | य लि या ऽ | बा ऽ जे ऽ
2 | 0 | 3 | ×

प नि सां,गं | रीं रीं,सां सां | नि नि सां रीं | (सां) -नि ध प
च ल त,फि | र त,अ त | जि या ड र | पा ऽऽ वे ऽ
2 | 0 | 3 | ×

नि ध प मं | ग री सा सा, | प़ ऩि सा,ग | मं प,नि सां
र खि यो ला | ऽ ज अ ब, | बि न ति,क | र त,क र
2 | 0 | 3 | ×

रीं सां नि,(प)	-म म -;प	नि ध प -म	
जो ऽ र,जो	ऽऽ र ऽ;कै	से कै से ऽऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार
२	०	३	

राग लाचारी तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः सत बचन कहो अहो 'सुजनवा'
कौन ऐसी प्यारी चतुर सुघर सुन्दर
जापे तन मन वारो।

अंतराः चाल चलत डगमगे आये हो भोर भये
पहली पीत के वे बचन बिसारे
जरत जासों जियरा हमारो॥

स्थायी

री
स

नि़ सा री म	पध प -म,ग	री - -,म	ग री सा,री
त ब च न	कऽ हो ऽऽ,अ	हो ऽ ऽ,सु	ज न वा,कौ
३	×	२	०
-नि़ सा - री	ग - रीग म	म - -,री	म प -,गं
ऽन ऐ ऽ सी	प्या ऽ ऽऽ ऽ	री ऽ ऽ,च	तु र ऽ,सु
३	×	२	०
रीं सां,रीं सां	नि,सा - प,	री ग म प	ग री ग;री
घ र,सुन्द	र,जा ऽ पे,	त न म न	वा ऽ रो;स
३	×	२	०
नि़ सा री म			
त ब च न	इत्यादि		
३			

अंतरा

प म चा

सां सां सां सां
प नि सां, नि | सां - सां - | - -, मं गं | रीं सां -, नि
ऽ ल ऽ, च | ल ऽ त ऽ | ऽ ऽ, ड ग | म गे ऽ, आ
३ | × | २ | ०

नि म म सा
- सां - रीं | सां - नि - | ध प -, प | ग री ग, री
ऽ ये ऽ हो | भो ऽ ऽ ऽ | र ऽ ऽ, भ | ये ऽ ऽ, पह
३ | × | २ | ०

सा ग म प
नि सा - री | ग - रीग म | म - -, री | म प -, गं
ली पी ऽ त | के ऽ ऽऽ ऽ | वे ऽ ऽ, ब | च न ऽ, बि
३ | × | २ | ०

सां सां नि ग म म सा
रीं सां, रीं सां | नि, सां - प, | री ग म, प | ग री ग; री
सा रे, ज र | त, जा ऽ सों, | जि य रा, ह | मा ऽ रो; स
३ | × | २ | ०

सा म
नि सा री म
त ब च न | इत्यादि स्थायी के अनुसार
३

राग लाचारी तोडी–एकताल(विलंबित)

स्थायी : बहुत या जग मों अब अवगुन कीन्हे
एक पलहुँ तेरो नाम नाहीं लीनो हे।

अंतरा : रखियो लाज अब मेरी, आयो शरनहूँ
आज तेरे, कीजो पावन मोको हे ॥

स्थायी

नि
;सासा
;बहु

म प ध म री नि म सा सा नि प

रीम पध | ग री | मग रीसा | सारीग- री | निसा सा | निप सासा

तS SS | या S | जग मोंS | अSSS S | SS ब | अव गुन

३ | ४ | × | ० | २ | ०

नि री ग प नि प म म मप म

सारी ग | गम म | मप धप | मप गरी | निध प | धधपमपध गरी

कीS S | SS न्हे | एक पS | SS लS | हूँS S | तेSSSSS रोS

३ | ४ | × | ० | २ | ०

ग म ग म म म सा सा नि

रीग मसा | रीमपनिसां प,म | गम म, | गमप- गरी | ग री | निसा ;सासा

नाS Sम | नाSSSS S,S | SS हीं, | लीSSS नोS | हे S | SS ;बहु

३ | ४ | × | ० | २ | ०

अंतरा

प सां नि प मं सां सां

मप निसां | सां निसां | सां ,मप | गं - | रीं सां, | निसांरीं निसां

रखि योS | ला SS | ज ,अS | ब S | मे री, | आSS SS

४ | × | ० | २ | ० | ३

सां सां सां सां नि नि म

पनि प, | निनि निसां | रींसां निसां | धप ,ध | मप प ||

SS यो, | शर नहूँ | आS SS | जS ,ते | SS रे ||

४ | × | ० | २ | ०

म ग म म ग ग सा

रीमपनिसां पम | गम म | गमप- गरी, | रीग,रीगम- सा, | रीग री |

कीSSSS S,S | SS जो | पाSSS वन, | मोS,SSSS को, | हेS S |

३ | ४ | × | ० | २

सा नि म प ध म

निसा ;सासा || रीम पध | ग री |

SS ;बहु || तS SS | या S | इत्यादि स्थायी के अनुसार

० || ३ | ४

राग लक्ष्मी तोडी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: जा जारे जारे जारे पतंगवा
इतनो संदेसवा कह देहो मोरा।

अंतरा : बिरह अगन जरि तरपत निसदिन
गिनत घरि पल छिन नाहीं चैन
अत घबराये न माने मोरा जियरा॥

स्थायी

ग री सा री	नि, सा – री,	ग मग म, प	ग पम धम प
जा ऽ जा ऽ	रे, जा ऽ रे,	जा ऽऽ रे, प	तं गऽ वाऽ ऽ
०	३	×	२
म म प ध	नि सां ध प,	पध मप ग –	री, री – सा;
इ त नो स	न्दे स वा ऽ,	कऽ हऽ दे ऽ	हो, मो ऽ रा;
०	३	×	२

अंतरा

म प धनि प	सां सां सां सां,	ध ध सां गं	रीं सां ध प
बि र हऽ अ	ग न ज रि,	त र प त	नि स दि न
०	३	×	२
सां नि सां, प	ध म प ग	म, पध निसां सां	ध – प, री
गि न त, घ	रि प ल छि	न, नाऽ ऽऽ हीं	चै ऽ न, अ
०	३	×	२
नि सा री ग	म, प ध नि	सां, ध – प,	ग ग री सा;
त घ ब रा	ये, न मा ऽ	ने, मो ऽ रा,	जि य रा ऽ;
०	३	×	२

राग लक्ष्मी तोडी- झपताल (मध्यलय)

स्थायी : साँवरे बादर महेश्वर कण्ठ बरन साँवरो
नीर जमुना साँवरो।

अंतरा : कुँवर कन्हैया घन नील साँवरो
सबहूँ दयाघन दीन दुख हरन
लच्छन धरे न्यारो॥

स्थायी

नि़	ग	ग	ग	ग म	म	नि	नि
सा –	री ग म	म –	म म,म	ग प	प – प,	ध –	ध नि,प
साँ ऽ	व रे ऽ	बा ऽ	द र,म	हे ऽ	श्व ऽ र,	क ऽ	ण्ठ ऽ,ब
×	2	0	3	×	2	0	3

म	नि	नि	म	म		ग	
ग म	ध – प	ध पम	प ग म	नि पम	प – ग,	म ग	री सा –;
र न	साँ ऽ व	रो ऽऽ	नी ऽ र	ज मुऽ	ना ऽ ऽ,	साँ ऽ	व रो ऽ;
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

म	नि		नि़	नि नि	सां सां		नि
प प	ध नि,प	सां –	सां – –,	ध ध	नि सां गं	रीं सांनि	सां ध प
कुँ व	र ऽ,क	न्है ऽ	या ऽ ऽ,	घ न	नी ऽ ल	साँ ऽऽ	व रो ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

ध	सां	प	म ग	म	नि नि	प	नि
प ध	नि सां,म	म प	ग म म,	प –	ध, ध प	सां सां	रीं, सां –
स ब	हूँ ऽ,द	या ऽ	घ ऽ न,	दी ऽ	न, दु ख	ह र	न, ल ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

सां	म		सा
म म	प ग मग	री सा	ग री सा
च्छ न	ध रे ऽऽ	न्या ऽ	रो ऽ ऽ
×	2	0	3

राग लक्ष्मी तोडी – एकताल (विलंबित)

स्थायीः सियरी पवन बहे, नई ऋतु आयी
जियरा अतही हुलसे सुख पावे।

अंतरा : प्रात पहर की धुन सुन री, भई बौरी सजनी
ऐसो को गावे रिझावे मनभावे॥

स्थायी

नि̣ म ग ग म नि̣ नि̣
सारी ग | म गम,मम | मग॒ प | मप ,प | ध॒ ध॒ | नि॒ प
,सिय री | ऽ ऽऽ,पव | नऽ ऽ | ऽऽ ,ब | हे ऽ | ऽ ऽ
३ | ४ | × | ० | २ | ०

म म नि मम ग नि̣ म प
ग म,गम | नि प | धमप ग॒ग॒ | मग॒ रीसा | सारी ग | म गम,मप
न ई,ऽऽ | ऋ त | आऽऽ ऽऽ | ऽऽ यीऽ | जिय रा | ऽ ऽऽ,अत
३ | ४ | × | ० | २ | ०

नि नि नि म म म ग॒
ध॒ सां | निसां ,सांरीं | ध॒ प | मप ,पध॒ | ग॒ ग॒ | री सा ;
ही ऽ | ऽऽ ,हुल | से ऽ | ऽऽ ,सुख | पा ऽ | ऽ वे ;
३ | ४ | × | ० | २ | ०

अंतरा

म नि नि नि सां सां गं सां
प ध॒,ध॒ | सां सां | सां – | निनि सांसां | रीं ,सां || नि सां | पध निसां
प्रा त,प | ह र | की ऽ | धुन सुन | री ,भ || ई ऽ | बौऽ रीऽ
४ | × | ० | २ | ० || ३ | ४

नि नि प नि गम ग ध नि नि
ध॒ ध॒ | प – | म प | ध॒ सां || पपमग॒ म | म ,प | ध॒ ध॒ |
स ज | नी ऽ | ऐ सो | को ऽ || गाऽऽऽ ऽ | वे ,रि | झा ऽ |
× | ० | २ | ० || ३ | ४ | × |

ध॒ ध म म ग॒
सां ,पध॒ | ग॒ ग॒ | री सा ||
वे ,मन | भा ऽ | ऽ वे ||
० | २ | ०

राग लक्ष्मी तोडी-होरी-धमार

स्थायी : कौन ये रीत अनोखी खेलन की
कहो होरी के खिलैया कन्हैया।
अंतरा : जाने न दूँगी अब, फेंट गह राखूँगी
और मींड़ोंगी मुख, भाज कहाँ जैहो कन्हैया॥

स्थायी

(नि)सा
कौ

३	×	२	०
– री (म)ग म	(ग)म – – (ग)म –	–, (ग)म	(म)ग प –
ऽ न ये ऽ	री ऽ ऽ त ऽ	ऽ, अ	नो ऽ ऽ
(म)प – –, (म)प	(नि)ध (नि)ध नि प –	–, (नि)ध	प – म
खी ऽ ऽ, खे	ल न ऽ की ऽ	ऽ, क	हो ऽ ऽ
(म)प (म)ग म –	(ध)प (नि)ध (सां)नि (नि)सां –	–, म	(प)म प –
हो ऽ री ऽ	के ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ, खि	लै ऽ ऽ
(म)प (म)ग –, (ग)री	(ग)री – – सा –	(ग)री सा	(सा)ग (ग)री ; (नि)सा
या ऽ ऽ, क	न्है ऽ ऽ ऽ ऽ	या ऽ	ऽ ऽ ; कौ
– री (म)ग म			
ऽ न ये ऽ	इत्यादि		

अंतरा

×	2	0	3
कण: म नि	नि	ध	नि नि
प – – ध –	– , ध	सां – –	सां – सां सां
जा ऽ ऽ ने ऽ	ऽ , न	दूँ ऽ ऽ	गी ऽ अ ब
कण: नि सां	नि	गं	नि
ध – – नि सां	सां सांगं	रीं – सां	ध – प –
फें ऽ ऽ ट ऽ	ग हऽ	रा ऽ खूँ	गी ऽ ऽ ऽ
कण: म ध गं		सां	गं
प प गं रीं –	सां –	नि सां रीं	रीं – सां –
औ र ऽ मीं ऽ	ड़ों ऽ	गी ऽ ऽ	मु ऽ ख ऽ
कण: प म म		प	नि सां
म – – प ग	– , म	प – –,	ध – नि सां
भा ऽ ऽ ज ऽ	ऽ , क	हाँ ऽ ऽ,	जै ऽ हो ऽ
कण: सां प म	ग	सा ग नि	म
म म प ग –	री सा	ग री ; सा	– री ग म
क न्है ऽ या ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ; को	ऽ न ये ऽ
कण: ग म			
म – – म –			
री ऽ ऽ त ऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार		

पं. भातखण्डे द्वारा स्वीकृत

दस थाट सम्बन्धी लक्षणगीत-त्रिताल (मध्यलय)

(रागमाला में निबद्ध)

बिलावल : प्रथम बिलावल मेल सुनिश्चित
शुद्ध सुरनसों मंडित सोहत।

कल्याण : दूजो कल्याण गुनि सुसम्मत
ऐमन सोही कहावत राजत
एक विकृत मध्यम तीवर युत ॥

खमाज : तापर खम्माज तीजो बरनत
मृदु निखाद एक विकृत चमकत ॥

भैरव : भैरव दुविकृत रिध कोमल स्थित
तुरिय मेल अत जन मन भावत ॥

पूर्वी : त्रिविकृत मृदु रिध तीवर मध्यम
पूर्वी मेल पंचम पुनि विलसत ॥

मारवा : मारवा छठहि मेल कहावत
द्विविकृत मृदु रि तीवर मध्यम गत॥

काफी : द्विविकृत गनि कोमल सुर सिंगार
सप्तम काफी मेल गुनि मानत ॥

आसावरी : आसावरी मेल अठम सुमधुर
त्रिविकृत मृदु निधग सों सुसज्जित॥

भैरवी : चतुर्विकृत भैरवी नवम मेल
रिगधनि कोमलसों मन रीझत ॥

तोडी : तोडीहूँ दशम मेल सुन्दर
मृदु रिधग तीवर मध्यम संगत
दस मेल राग जनक सब कहत
चतुर मुनि सुन सुन 'सुजन' या गत॥

राग बिलावलः

ग ग	प नि	नि	नि
म ग म,री	ग प ध नि	सां – सां,सां	ध – प प
प्र थ म,बि	ला ऽ व ल	मे ऽ ल,सु	नि ऽ श्चि त
0	3	×	2
प ग		प	नि़
ग – म,री	ग म प –,	ग म ग री	सानि़ री सा सा
शु ऽ द्ध,सु	र न सों ऽ,	म ऽ ण्डि त	सोऽ ऽ ह त
0	3	×	2

राग यमनः

सा	प प	म॑ म॑	प
नि़ – री –	म॑ ग म॑ प	प, प प प	म॑ ध प प
दू ऽ जो ऽ	क ऽ ल्या ऽ	ण, गु नि सु	सं ऽ म त
0	3	×	2
प ध	सां		सा
म॑ ग म॑ ध	नि (सां) नि,ध	प म॑ ग री	नि़ ध़ नि़ री
ऐ ऽ म न	सो ऽ हि,क	हा ऽ व त	रा ऽ ज त
0	3	×	2
म॑ प	प	ग	सा
प म॑ ग,म॑	प प,म॑ ग	ग ग,प री	नि़ री सा सा
ए ऽ क,वि	कृ त,म ऽ	ध्य म,ती ऽ	व र यु त
0	3	×	2

राग खमाजः

नि॒	ध सां	सां	
ध नि॒ ध नि॒	प ध नि –	सां,नि सां रीं	नि॒ ध प प
ता ऽ प र	ख ऽ म्मा ऽ	ज,ती ऽ जो	ब र न त
0	3	×	2
प	म	नि॒	
नि॒ नि॒ ध प	– ध,ग म	प,ध नि॒ सां	नि॒ ध प प
मृ दु नि खा	ऽ द,ए ऽ	क,वि कृ त	च म क त
0	3	×	2

राग भैरवः

री - ग ग,	म प ध ध,	नि सां रीं -	सां सां ध प
भै ऽ र व,	दु वि कृ त,	रि ध को ऽ	म ल स्थि त
०	३	×	२
म ग म, ध	- ध प प	ग री ग प	म ग री सा
तु रि य, मे	ऽ ल अ त,	ज न म न	भा ऽ व त
०	३	×	२

राग पूर्वीः

नि री ग ग	मं मं ध ध	नि रीं नि ध	प मं ग ग
त्रि वि कृ त	मृ दु रि ध	ती ऽ व र	म ऽ ध्य म
०	३	×	२
मं ध मं ग	मं री ग, ग	मं ध मं ग	मं ग री सा
पू ऽ र्वी ऽ	मे ऽ ल, पं	च म पु नि	वि ल स त
०	३	×	२

राग मारवाः

ध - ध मं	-, ध मं ग	मं री ग, ग	मं - ध ध
मा ऽ र वा	ऽ, छ ठ हि	मे ऽ ल, क	हा ऽ व त
०	३	×	२
नि रीं नि ध	मं ध मं, ग	मं री, ग मं	ग री सा सा
द्वि वि कृ त	मृ दु रि, ती	व र, म ऽ	ध्य म ग त
०	३	×	२

राग काफीः

री री ग ग	म म, प -	ध ध, नि नि	सां सां - सां
द्वि वि कृ त	ग नि, को ऽ	म ल, सु र	सिं गा ऽ र
०	३	×	२

नि	म	प	
सां रीं नि ध	प – प,ग	री ग,म म	प – प प
स ऽ प्त म	का ऽ फी,मे	ऽ ल,गु नि	मा ऽ न त
०	३	×	२

राग आसावरीः

प ध	नि	प	नि नि
म प प गं	रीं रीं,सां –	सां,म प प	ध ध सां सां
आ ऽ सा ऽ	व री,मे ऽ	ल,अ ठ म	सु म धु र
०	३	×	२
सां	नि नि	प म	
रीं सां रीं नि	ध ध,प म	ध ग –,रीसा	री – सा सा
त्रि वि कृ त	मृ दु,नि ध	ग सोंऽ,सुऽ	स ऽज्जि त
०	३	×	२

राग भैरवीः

म	नि नि सां	नि	गं
ग म – म	ध ध,नि –	सां सां,सां सां	रीं सां – सां
च तु ऽ र्वि	कृ त,भै ऽ	र वी,न व	म मे ऽ ल
०	३	×	२
ध		नि	नि
प ध निसां	गं(गं)रीं सां	सांरीं,गं,रींसां	ध – प प
रि ग धनि	कोऽ म ल	सोंऽ ऽ,म न	री ऽझ त
०	३	×	२

राग तोडीः

ग	प नि नि		
री – ग –	म –,ध ध	ध नि – नि,	सां – सां सां
तो ऽ डी ऽ	हूँ ऽ,द श	म मे ऽ ल,	सु ऽ न्द र
०	३	×	२
नि	प	ध	ग
ध नि ध ध	प,म म ध	म – ग ग,	री – सा सा
मृ दु रि ध	ग,ती व र	म ऽ ध्य म,	सं ऽ ग त
०	३	×	२

सा री ग -	ग, म - ध,	नि नि सां, रीं	गं रीं सां सां
द स मे ऽ	ल, रा ऽ ग,	ज न क, स	ब क ह त
०	३	×	२
म ध नि सां	नि, ध प म	प, ध म ग	री ग री सा
च तु र मु	नि, सु न सु	न, सु ज न	या ऽ ग त
०	३	×	२

॥ श्री तानसेन प्रशस्तिः ॥

ध्रुवः कण्ठस्वरोद्गारः शब्दोच्चारो ध्रुवस्तथा।
रागशुद्धिर्ध्रुवा यत्र तानसेनपदं ध्रुवम् ॥१॥

मुहमद गउसाशीर्वादजातप्रसादः।
हरिरतहरिदासग्राहितो गीतवेदम् ॥
अकबरवरसम्राड्वित्सभारत्नभूतः।
जयतु जयतु गंधर्वोपमस्तानसेनः ॥२॥

स्वरपदलयरागाणां रसानां च यस्याम्।
अविचलितशुचिः सा संमता गानविद्भिः ॥
ध्रुवपदमितिनाम्ना विश्रुता गीतिरीतिः।
तदधिकृतगतिर्वाग्गेयकृत्तानसेनः ॥३॥

मल्लारिमूर्तिर्घननीलवर्णा।
हृत्पंकजोत्फुल्लनकारिणीयम् ॥
मीयांमलारा शुभनामधेया।
श्रोतृप्रिया ते कृतिरद्वितीया ॥४॥

कर्णाट रागराजोऽपि राजसंसदि निर्मितः।
दरबारिः सुविख्यातस्तवव्युत्पत्तिदर्शकः ॥५॥

रसरंगयुतो मीयांसारंगोऽपित्वदुत्थितः ।
पुष्पं कल्पतरोश्चेव सर्वचित्तसुखप्रदः ॥६॥
प्रातर्गीता स्वरालापैर्मधुरैश्चित्तशान्तिदैः ।
"मीयां"दितोऽङ्किता तानसेना नाद विहारिणी ॥७॥
तवसुचरितदीप्ता गीतदीपावलीह ।
स्वरपदलयवर्णालंकृता रागराजी ॥
रसिकविबुधवृन्दानां मनोहारिणीयम् ।
चरणकमलयुग्मे तेऽर्पिता तानसेन ॥८॥

स्वरकरण

१. देशकारे । (सावकाशम्, विलंबितेन) :-

ध ध – प प – प प –, गपध ध ध०, प ध सां – ध – – प प –,
ध्रु वः ऽ क ण्ठ ऽ स्वरो ऽ, ऽऽऽ द्रा र ह् ; श ब्दो ऽ ऽच्चा ऽ ऽ रो ऽ,

ध प –, गपध ध प ग – रीसा | सा – री ग प प – ध ध – –,
ध्रु व ऽ, ऽऽऽ स् त था ऽ ऽऽ | रा ऽ ग शु ऽ द्धि र् ध्रु वा ऽऽ,

ध – ध –, सांधपधसांरीं सां ध – धपगपधसां – ध, प धपगपध
य ऽ त्र ऽ, ताऽऽऽऽऽ न से ऽ ऽऽऽऽऽऽ ऽ न, प दंऽऽऽऽ

–, प ग – रीसा |
ऽ, ध्रु व म् ऽऽ |

२. भैरव रागोत्तमे । (सावकाशम्, विलंबितेन) :-

ध ध ध ध ध ध ध – प –, म गम, मग म ध , ध ध ध प० |
मु ह म द ग उ सा ऽ शी ऽ, वी ऽऽ, द ऽ जा त , प्र सा ऽ द ह् |

मग मग मरी गरी गप मग री रीरीसा –, म – प धृ धृ धृ,
हऽ रिऽ रऽ तऽ हऽ रिऽ दा ऽ ऽ स ऽ, ग्राऽहि तो ऽ ऽ,

नि सा सा री री री सा – निसा ‖ म मग प प ध ध निसां सां सां,
गी ऽ त वे ऽ ऽ दं ऽ ऽऽ ‖ अ कऽ ब र व र स ऽ म्रा ट्,

रीं – रीं रीं रीं रीं, सां – – सां, म – निधृ सां निसां सां ० |
वि ऽत्स भा ऽ ऽ, र ऽ ऽत्न, भू ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ त हृ |

सां सां सांनि रीं सां सांनि, ध – ध ध प – म गम म निधृ सां –
ज य तुऽ ज य तुऽ, गं ऽ ऽ ऽ ध ऽ र्वो ऽऽ प मऽ ऽ ऽ

निनि, ध प प मगरीगमप री री री सा ० ‖
ऽसु, ता ऽ न सेऽऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ न हृ ‖

३. अल्हैयाबिलावले | (मध्यलयेन) :-

ध नि ध नि ध नि ध प प, –म ध गम री गप, धनिसां– निध
स्व र प द ल य रा ऽ गा,ऽऽ णा ऽम् र सा ऽ, नाऽऽम् चऽ

नि सां सां – – | सां रीं सां नि सां नि ध नि० ध प, प – प ध –,
य ऽस्या ऽम् | अ वि च लि त शु चि ऽहि सा ऽ, स ऽम्म ता ऽ,

गम, रीगपधनिसां – धप म ग रीग री सा० ‖ नि नि नि नि निधप प
गाऽ,ऽऽऽऽऽऽ ऽ नऽ वि ऽ ऽऽ द्वि ऽहि ‖ ध्रु व प द मि ऽऽ ति

निध निसां – –, प – प धनि –ध नि सां, धपमग, रीगपधनिसां, सां
नाऽ म्नाऽ ऽ ऽ, वि ऽ श्रु ताऽ ऽऽ गी ऽ, ऽऽऽऽ, ऽऽऽऽऽऽ ति

सां सां – –० | सां सां रीं गं रीं सां ध नि प –, गपधनिसां सां
री ति ऽ ऽहि | त द धि कृ त ग ति ऽ वी ऽ, ग्ऽेऽऽऽऽ य

सांसां, धपमगरीसा, सा ग रीगपधनिसां – सां ० ‖
कृत, ताSSSSS न सेSSSSS S न ह् ‖

४. मीयांमल्लारे । (मध्यलयेन):-

सां सां मं सां म म म म
नि – सां – रीं ध नि प –, प प धनि सां –, निप ग ग ग ग – – |
म S ल्ला S रि मू S र्तिर, घ न नीS S S, लS व S र्णा S S S |

ग सा प़ प़ सा
म (म) री सा सा निसारीगम री सा, म़ प़ नि़ धनि़ धनि़ – ध़ नि़ सा सा – ‖
ह S त्वं S क जोSSSS त्फु S, ल्लन का SS SS Sरि णी S यंS ‖

सा मं मं प
म री प –, प प –, प –, प प नि – निध निध निध नि प – |
मी S यांS, म लाS, राS, शुभ ना S SS मS धेS S याS |

मं प सां म म म
प – – नि – ध नि सां –, निप,मपधनिसां –, निप ग ग ग म (म) रीसासा – ‖
श्रोSS तृ SS प्रि या S, तेS, SSSSS S, कृति र SS द्विS ती S याS ‖

५. दरबारी कर्णाटे । (बिलंबितेन):-

सा नि़ प़ नि़ नि़ नि़
री – री – री सा – नि़सा सा, रीसानि़सारीसा ध़ नि़ प़, म़ – प़ ध़ ध़ ध़
कS र्णाS ट रा S SS ग, राSSSSS जो S पि, रा S ज सं S S

सा सा सा सा म म प
नि़ नि़, सा –, सा सा ० | नि़ सा री – री सा०, री ग – ग –, म – म
स दि, निS, मि त ह | द र बा S रि Sह, सु वि S ख्याS, तSस्

म म म
प प निपमपसां ग –, गमप ग म री – री सा ० ‖
त व व्युSSSS S S, त्पSS, S त्ति द S र्शी क ह् ‖

६. मीयां सारंगे । (मध्यलयेन) :-

री पम मरी सा सा नि – पधनिसा –, ध निध निसा – , सा
र सऽ रंऽ ग यु तो ऽ ऽऽऽऽ ऽ, मी ऽऽ यां ऽ ऽ, सा

निसारीमपनि प – –प, धप मरी री सा० | सा –रीमरी, म प प
रंऽऽऽऽऽ गोऽ ऽपि, त्वऽ दुऽ त्थि तह | पु ष पमऽ, कऽल्प

प धनि धनि, पधनिसां, नि प प, म – म प – प प निपमरी, मपनि –
त रोऽ, ऽऽ, ऽऽऽऽ, श्रेऽ व, सऽर्व चिऽत्त सु खऽऽऽ, ऽऽऽ ऽ

पम री सा० ॥
ऽऽ प्र द ह् ॥

७. 'मीयां की' तोड्याम् । (सावकाशम्, विलंबिते) :-

ध – धनि ध – प प –, प धपमगमध ध – ध –, मधनिसां –,
प्राऽ तर गीऽऽ ताऽ, स्वराऽऽऽऽऽ लाऽ पेर्, म धु रैऽऽ,

सां – –नि रीं सां – – सांनि ध – – | मधनि ध प प, री गरीसा –,
श्रिऽ ऽऽ त्त शांऽऽ तिऽ देऽर | मीऽऽ यां ऽदि, तोऽडिकाऽ,

निसा री ग, मगरीगमध – ध, निधमधनिसां –सां,
ऽ ऽ ऽ ऽ, ताऽऽऽऽऽ ऽन, सेऽऽऽऽऽ ऽना,

रींनिधम, धनिसांरींगं –, – रीं, सां निधमग, रीगमधनिसां, नि ध –प – – ॥
नाऽऽऽ, ऽऽऽऽऽऽ ऽद, वि हाऽऽऽ, ऽऽऽऽऽऽ, रि णीऽऽऽऽ ॥

८. भैरव्याम्। (मध्यलयेन):-

ध   नि   ग
प ध प मग् मप् म (ग) रीसानि़सा, सा-री ग धनिसां-,
त व सु चऽ रिऽ त दी प्ताऽऽऽ, गीऽत दी पाऽऽऽ,

नि   ध   गं   नि
रींसां धनिसां- --सां | प ध नि सां रीं सांनि ध-प --,
वऽ लीऽऽऽ ऽऽह | स्व र प द ल यऽ वऽर्णोऽऽ,

म   म   म
ग-म गमपध -, पमगसा, गमप- पम (री)- सा---‖
लं ऽकृ ताऽऽऽ ऽ, राऽऽऽ, ऽऽऽऽ गऽ रा ऽजी ऽऽऽ‖

नि   म नि   नि   नि   नि
ध पम ग म ध नि सां-सां- सां--सां, सां निसांरीं- सां-सां
र सिऽक वि बु ध वृ ऽन्दाऽ नाऽऽम्, म नोऽऽऽ हा ऽरि

म   सां   मं   गं   म
गमधनि सां सां- | गं गं गंरीं गं गं मं (रीं)-सां-, ग-म पधनिसां
णीऽऽऽ ऽ य म् | च र णऽ क म ल यु ऽग्मेऽ, तेऽर्पिताऽऽऽ

--, रींसांनिधपमगरीसा निसागमपधनिसां --सां ‖
ऽऽ, ताऽऽऽऽऽऽऽऽन, सेऽऽऽऽऽऽऽऽ ऽऽन ‖

सूचनाः 'तानसेन प्रशस्ति' का जो स्वरकरण ऊपर दिया गया है, वह प्रातर्गेय रागों में निबद्ध है। अतएव, उसे प्रातःकाल के समय गाना उचित होगा। यदि इसी 'प्रशस्ति' को सायंकाल के समय गाना हो तो उसमें क्रमांक १,२,३ एवम् ८ के श्लोकों को सायंगेय रागों में गाना होगा। और इसी हेतु से लेखक ने इन उपरोक्त चार श्लोकों को सायंगेय रागों में निबद्ध किये हैं, जिनका स्वरकरण नीचे दिया जाता है। इन्हें पाठांतर के रूप में समझना होगा। अन्य श्लोकों के (अर्थात् क्रमांक ४,५,६ तथा ७ के) राग वही रहेंगे जो कि ऊपर दिये गये हैं। क्यों कि इन रागों की निर्मिति स्वयम् तानसेन द्वारा हुई है। अतएव लेखक ने इन श्लोकों का स्वरकरण सम्बन्धित रागों के वर्तमान स्वरूप के अनुसार उन्हीं रागों में निबद्ध किया है और उन्हें उसी प्रकार गाना होगा।

तानसेन प्रशस्तिः(पाठान्तर)

१. धन्याश्रीः | (सावकाश्म, विलंबितेन):-

म नि म
प प –(ग)– (सा) , सा रीसानिसागमप, प –प°, पम,
ध्रु व ह् क ऽ प्ठ , स्व रेऽऽऽऽऽऽ, द्राऽरह्, शऽ,

म नि ग
पनिसांनि, – ध – प –, धपमगमप – –,मगम– री सा – |
द्रोऽऽऽ, ऽच्चाऽरोऽ, ध्रुवऽऽऽऽ, ऽ ऽ,ऽऽऽऽ, स्त थाऽ |

म सां सां सां
ग – म प – नि –, प नि सां – सां – सां –, नि – नि
राऽग शुऽद्धि र्, ध्रु वा ऽ ऽ यऽत्र ऽ, ताऽन

नि सां नि
सां गं रीं –, सां नि – पनिसां–, नि ध प – ‖
से ऽ न ऽ, प द म् ऽऽऽऽ, ऽ ध्रुव म ‖

२. गौरी | (विलंबितेन) :-

गं गं गं गं गं म ग
रीं रीं रीं रीं रीं – सां – – नि ध प मं – मं, प – ग ,प ग री –
म हु म द गौ ऽ साऽऽशीऽऽर्वाऽद,जाऽत ,प्रसाऽऽ

ग ग ग ग री ग ग म
सा° | री री री री, प प ग री – सा –, री – री प – –,
दह् | ह रि र त, ह रि दा ऽ ऽ स ऽ, ग्राऽहि तो ऽ ऽ,

सां ग ग
नि सां सां रीं – – सां सां – निसां, ‖ री री प प नि नि सां – सां –
गी ऽ त वे ऽ ऽ ऽ ऽ द म् ऽऽ, ‖ अ क ब र व र सऽम्राऽ

गं नि
निसां, –सां, रीं – गं रीं सां –,सां – सां नि ध प मं प – ग – |
ऽऽ, ऽट्, वि ऽत्स भा ऽ ऽ, रऽत्न भू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ त ह् |

रीरीरी, प प प, ग रीसा - - री - रीपमंप, नि - सां - सां
ज य तु, ज य तु, गं ऽ ध ऽ ऽर्वो ऽ प म ऽस्, ता ऽ ऽ ऽ न

रीं - - - सां सां ०॥
से ऽ ऽ ऽ ऽ नह्॥

३. यमनः। (मध्यलयेन) :-

री ग मं ध नि रीं सां - निधनि (प) - प, मं ग मंगरीगमंप - परीरी
स्व र प द ल य रा ऽ गाऽऽ णा ऽ म्, र सा नाऽऽऽऽऽ ऽम् ऽच

नि़रीसा - - सा | धनि़ री ग मं ध प - मं ग -, ग - म ग री,
य ऽस्याऽऽम् | अ वि च लि त शु चि ऽह् साऽ, स ऽम्म ता ऽ,

गरीनि़रीगमंप - री री, सानि़री सा - ० ॥ प प - मं मं ग प प धनिध
गाऽऽऽऽऽऽ ऽऽ न, विऽऽ द्वि ऽह् ॥ ध्रु व ऽ ऽ प द मि ति नाऽऽ

सां - -, प - मं धनिध, नि - सां - निधपमं, गमंपधनिसां, - - निध
म्नाऽ ऽ, वि ऽ श्रु ताऽऽ, गी ऽ ऽ ऽ, ऽऽऽऽ, ऽऽऽऽऽऽ, ऽ ऽ तिऽ

निसांसां - - ०| गमंध नि रीं गं रीं - सां -, (प) - री गमंपधनिसां
री ऽ ति ऽ ऽह्| त द धि कृ त ग तिऽर्वाऽ, ग्गे ऽ य कूऽऽऽऽऽ

- सां (प) - मं ग प री - - सा - - ०॥
ऽत् ता ऽ ऽ ऽ न से ऽ ऽ न ऽ ऽह्॥

८. खमाजः (मध्यलयेन) :-

सां नि सां रीं नि (सां) निधपध, - मगरीग, -, म - गरीसा - सा,
त व सु च रि त दीऽऽऽ ऽप्ताऽऽऽ ऽ, गीऽ ऽऽ, ऽ ऽ त,

[म]ग म पधनिसां – नि सां – धनि पधनिसां नि सां | [नि]प नि सां रीं
दी S पाSSS S व ली S SS SSSS S ह | स्व र प द

[मं]गंमंरींगं (सां) – नि ध प – ग – [म]म [ध]प – सां(सां), निध पध प
ळSयS व Sर्णा S SS लं S कृ ताS S S, राS SS ग

[म]ग – प(प) म गरी ग – || [म]नि ध ध, नि [ध]धप ध, नि [सां]सां सां –
रा S SS जी SS S S || र सि क, वि बुS ध, वृ S न्दा S

नि –नि, नि [सां]सां – पधसांरींगंमं–गं (सां) – निधपध | [म]ग म ध
ना Sम्, म नो S हाSSSSSSSरि णीS यSSम् | च र ण

[सां]नि सां (सां) नि ध प –, ग – म [ध]प [ध]सां –नि, नि धप,मपध –प
क म ल यु S ग्मे S, ते S र्पि ता S SS, ता SS,SSS Sन

मगरीग पधसांरींगंमं–– गंरींसांनिधपमग रीसा––, सा ||
सेSSS SSSSSSSS SSSS SSSS SSSS, न ||

॥ सरस्वती वन्दनम् ॥

हंसारूढा सितवसनयुता शारदा ब्रह्मपुत्री।
विद्याख्याता सुरनरमुनिवागीश्वरी भारतीया ॥
नादासक्ता स्वरलयनटने बद्धभावा प्रसन्ना ।
गीर्वाङ्माता जयतु जयतु साहित्यसंगीतसिद्धा ॥
शारदाम् वरदाम् वन्दे वीणा-वाद्य-विनोदिनीम्।
ब्रह्मात्मजां वरां वागीश्वरीं विद्यां सरस्वतीम् ॥
प्रसीद देहि मे देवि शिवम् सत्यम् च सुन्दरम्।
दृश्यं श्राव्यं तथा ज्ञेयं कार्यम् ते हृद्गतं सदा ॥
नहि शास्त्रं न काव्यं स्यात् नैव रागारसालयाः।
त्वत्प्रसादाद्विना कोऽपि व्यवहारो न विद्यते ॥
ध्यान गंधं तथा ध्वानधूपं साहित्यदीपकम्।
समर्पयामि तेऽथ श्रीर्भक्तिभावपुरस्सरम् ॥
अभिषेकः स्वराः सन्तु सुशब्दाः कुसुमान्यपि।
लयोऽर्घ्यमाचरेद्रागा रसा नैवेद्यरूपिणः ॥
पूजयामि नमस्कृत्य शतशः शिरसा नतः।
मंगलार्थम् प्रार्थयेऽहं पवित्रे शुभवासरे ॥

स्वरकरण

१. सिंधुरा :-

ग   प   प   म   सां सां
रीग रीसारी- म - म प - - -, पपधमप ध धसां - - -,
हंऽ साऽऽऽ रूऽढाऽऽऽऽ, सितवसन यु ताऽऽऽऽ,
ध   सां   सां
सां - रीं नि - - -, ध - म प - धपमपधपमगरी - - -, |
शाऽर दाऽऽऽ, ब्रऽह्म पुऽ त्रीऽऽऽऽऽऽऽऽ ऽऽऽ; |

ग ग म नि
रीगसारी रीप – – –, ग – – – री सा – – –, ध़नि़सारीमप,
विऽऽऽ थाऽ ऽऽऽ, ख्याऽऽऽताऽ ऽऽऽ, सुर नरमुनि,

नि नि ध ध म
ध – धनि सां निध – म –, प – – पध ग – री – – – ‖
वाऽ गीऽ ऽ श्वरी ऽ ऽऽ, भाऽ ऽरऽ तीऽयाऽ ऽऽ ‖

री सां नि
रीं – रीं – रीं – रीं – – –, रीं सां नि प ध धसां सां – – –,
नाऽदाऽसऽक्ताऽऽऽ, स्व र ल य न टऽ ने ऽऽऽ,

ध ध रीं सां
प – ध सांरींगं गं – , गं रीं – रीं – – – | नि – नि – सां(सां)
ब ऽद्ध भाऽऽ वाऽ, प्र स ऽन्नाऽ ऽऽ | गीऽ वींइ माऽ

प ध प म
निध प – – –, म म म, प सां नि, ध प – – – री – म, प –
ताऽ ऽऽऽऽ, ज यतु, ज य तु, साऽ ऽऽऽहि ऽत्य, संऽ

म
पध नि – – – धप, ग – – – री सा – – – ‖
गीऽ ऽऽऽऽतऽ, सिऽऽऽद्धा ऽऽऽऽ ‖

२. कीरवाणी :-

ध ध गं रीं
प – ध सांरींगं – – – गं, रीं गं सां – निरींसांनि ध – प – – –,
शाऽ रदाऽऽ ऽऽऽम्, व र दाऽ ऽऽऽम् वऽन्देऽऽऽ,

म प म ग री ग नि प प
प – म ग री सा –, री – गम प – ध प – – – | मप रीं –
वीऽणाऽ ऽ ऽऽ, वाऽधवि नोऽदि नीऽऽम् | ब्रऽ ह्माऽ

सां नि म ध नि
सां नि –, नि सां – सां, सा – री – ग म – – –, प – ध रीं –,
त्म जांऽ, व राऽम्, वाऽ गीऽश्व रीऽऽम्, विऽद्याऽम्,

नि सां
सां नि – नि सां – – – सां ‖
स र ऽस्वती ऽ ऽ ऽ म् ‖

३. भैरवी :-

गं नि गं नि नि म
सां ध – नि सांरींगं, सां रीं सां – – – – ध – ध – – –, सा ग –,
प्र सी ऽ द देऽऽ, ऽ हि मे ऽऽऽ देऽ विऽऽऽ, शि व म्,

नि गं प प
म – ध – नि सांरींगं, सां – रीं सां – – सां | नि – नि – , नि – नि –,
सऽत्यम् च सुऽऽ, ऽ ऽन्द र ऽऽ म् | ह ऽश्यम्, श्राऽव्यम्,

नि नि ग
सां सांनिरीं, सांनिरींसांनि, धपमप, –, सा – री – ग –, म – पमगम, रीसा ‖
त थाऽऽ, ज्ञेऽऽऽऽऽ, यंऽऽऽ, ऽ, काऽर्यंऽ तेऽ, हऽद्गतंऽऽ, सदा ‖

४. गौड़मल्हार :-

म नि नि ग म
ध ध ध – ध –, ध ध – नि(नि) प –, म – म (म) री – री प – – –,
न हि शाऽस्त्रंऽ, न काऽव्यम् स्यात्, नै ऽ व रा ऽ ऽ गा ऽ ऽऽऽ,

म म सा
प मपधनिसां, –, धप, म ग – – – | ग म री सा – निसारीगम, – ग म –,
र साऽऽऽऽ, ऽ, ऽऽ, ल याऽऽह | त्व ऽत्र सा ऽदाऽऽऽऽ, ऽद्विनाऽ,

प नि सां सां ग
मपधनि, सां – – सां, सां सां निसांरींगंमं, रीं सां ध नि प म – प म – – – ‖
कोऽऽऽ, ऽऽऽपि, व्य व हाऽऽऽऽ, रो ऽ ऽ ऽ न विऽधते ऽऽऽ ‖

५. कालिंगडा :-

म नि नि नि ध ध
ध – ध ध – ध – – –, ध ध – प – – प, पधनिनिधपमप, प – – –,
ध्याऽन गं ऽधं ऽऽऽ, त था ऽ ध्वाऽऽन, ध्रुऽऽऽऽऽऽऽ, पं ऽऽऽ,

म
ग – म – प म(म) ग रीसा – | सा ऩि – री सारीगम ग म – म –
सा ऽहिऽत्य दीऽ ऽ प कम् | स म ऽ पे याऽऽऽ मिते ऽघऽ

म ग
म – – –, ग – म पधनिसां निसां(सां) नि ध़, प मग (म)रीसा – ||
श्रीऽ ऽ र, भऽक्ति भाऽऽऽ ऽऽऽ ऽ व, पुरऽ ऽस्सरम ||

६. खमाज :-

म म प ग म
ग म प – प –, प मपध(नि) धप, मपधपमगरीग ग –, म ध –
अ भि षे ऽ कह्, स्व राऽऽऽ ऽह्न, संऽऽऽऽऽऽऽ तुहु, सुशऽ

नि ग
ध – , धनि (प) – धपमगमप प प – | मम – म म – धप सां – पध –
द्वाह्, कुसु, मा ऽ ऽऽऽऽऽऽ न्यपिहि | लयोऽर्घ्यमाऽ ऽऽ ऽऽऽऽऽ

म म
(म) ग –, ग – ग –, म ग –, गमपधसांरींगं – सां नि धप – ध, ग – म ग – ||
च रे त, राऽगाऽ, रसाऽ, नैऽऽऽऽऽऽ ऽवे ऽ ऽऽऽध, रूऽपि णह् ||

७. पीलु :-

सां रीं ध नि
गं – गं गं – गं, गं गं(गं) – रीं (सां) नि –, पध नि –, सांसां निसांरींमं
पू ऽ ज याऽमि, न म ऽ ऽस कृ त्यऽ, शत शह्, शिर साऽऽऽ

रीं सा री
मंगंरींगं – सांनिसां नि सां – – | ग – ग ग – ग –, ग – म ग (ग) –
ऽऽऽऽ ऽ ऽऽऽ न त ऽह् | मंऽग लाऽर्थम, प्राऽर्थ ये ऽ ऽ

सा म प
– री सा ऩि –, ऩिसा – रीमपधधप – म ग गरी ऩिसा ऩिसा – – – ||
ऽऽ ह म ऽ, प वि ऽ त्रेऽऽऽऽऽ ऽऽ शु भऽ वा ऽ स रेऽऽऽ ||

आचार्य
श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर
'सुजान'
के
"स्वनिर्मित राग"

सालगवराळी, देवगांधारी तोडी, सावनी केदार
गौरीशंकर, पीलू की माँझ, वियोगवराळी
सुरंजनी, जोगेश्वरी, सुरेश्वरी
कुमुद्वती, मालव मंजरी
श्यामली, हरप्रिया
रजनी कल्याण

राग सालगवराळी

यह राग कर्णाटक संगीत प्रणाली के अनुसार 'षड्विधमार्गिणी' मेल से उत्पन्न होता है। इस ठाठ को हिन्दुस्तानी में 'खटमारग' भी कहते हैं। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज माना जायगा। गान समय दिन का दूसरा प्रहर होगा। निषाद स्वर आरोही में दुर्बल है। 'राग लक्षण' में इस राग के ठाठ का उल्लेख पाया जाता है। "संगीत पारिजात" ग्रंथ के रागाध्याय में इस राग का उल्लेख "मेघनाद" इस नाम से किया हुआ, इस राग की निर्मिति के कई एक वर्षों के पश्चात् लेखक की दृष्टि में आया।

आरोहावरोह

सा रे ग प, ध, निधप, सां। सां नि ध प, धनिधप, गप, रे गरे सा॥

पकड

सा, रे गरे सा, रेगप, धप, निधप, धप, गप, रेगरेसा।

स्वरविस्तार

१. सा, रेगरेसा, सा, रेग, प, रेग, रेगप, रेगरे, सा, सारेगरे, गप, रेगप, धप, ग, रेगपग, परे, गरेसा।

२. सारेगरे, गरेसा, सानिधप, पसा, पधनिधप, सा, प-, गरे, गप, रेगरेसा।

३. सारेगप, धप, निधप, रेगपग, पध-, धनिधप, रेगपरेग, पधनिधप, निधपधप, ग, रेगपरे, गनिधप, पधप, ग, रेगपधनिध, पधप, ग, परे, गप, रेगरेसा।

४. सारेगरे, गपधग, पनिध, प, धपगरे, गप, गध, पनि, धप, गपनिध, पधप, ग, रेगपधनिधप, सां, निधप, गप, रेगपधनिसां, निध, पधनिध, पधप, ग, गरेगप धपग, पग, परे, गरे, सा।

५. सा, रेगरे, गप, गरेगप, गपधपगरे, गप, गपनिध, पधपग, रेगप, पधनिसां, निधप, प-, गंरें, गंरेंसांनिधप, धनिसां, पधनि, गपध, रेगपधनिसां-, निध पधनिध, पधप, ग, रेगप, रेगरे, सा।

६. सा, रेगरे-सा, धनिध-प, गपध, ध, ध, ध, निध-प, पधप-ग, रेगरे-सा, धनिसारेग, प, धनिसां, सांरेंगंरें-, पधनिध, निध, पधप, ग, रेगपधनिसां, निधप-ग, परे, गरे-सा।

७. अंतरा : पध नि, सां, निसां, सांरें, सांरेंगंरें-सां, सांनिधप, प-गंरें, गंपंरेंगंरें-सां, सां-पधनिध, पधप-ग, ग गं-, रेंसां, पधनिध, निध-, पधप-ग, गरे, गप धनिसांनिधपपग, रेगधप-ग, प-रेगरेसा।

८. तानें: सारेग रेगरेसा, पधनिधप गरे गरेसा, धनिसानि सारेगरे गप रेगप रेगरेसा, सारेगरे गपरेग पध पधनिध पधपग रेगपधनिसां निधपपगरेसा, सारेगरेगप रेगपगपध पधनिध पधपपगरे गपधनि धनिसांनिधपधपपगरे गरेसा, सारेगप रेगपधनिधपपगरे गपधनिसांरेंगंगंरेंगंरेंसां पधनिध पधपपगरे गपधनिसांरेंगंगं रेंगंगंरेंसांसां निधपपगरे गरेसा।

९. सारेपग रेगधप गपनिध पधगंरें गंरेंसां धनिसांनि पधनिध गपधप रेगपग रेगपधनिसांरेंगंरेंसांनिधपपगरेसा।

राग सालगवराळी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : सुमर साहेब सुलताने-आलम
निजामुद्दीन औलिया मन।
अंतरा : कर याद नाम परवरदिगार
करतार जिन रच्यो संसार
वोही अप्रम्पार मन ॥

स्थायी

री ग री, सा	सा नि, सा री	ग – गप, प	री ग री सा
सु म र, सा	हे ब, सु ल	ता ऽ नेऽ, आ	ऽ ऽ ल म
०	३	×	२

ग प	नि	ग	प ग
री ग प प	ध नि ध प	-,प ध प	ग -;री सा
नि जा ऽ मु	द्दी ऽ ऽ न	ऽ,औ ऽ लि	या ऽ;म न
०	३	×	२

अंतरा

नि सां सां	नि	ध नि	प
ध नि सां नि	सां - सां, सां	नि ध प प	ध नि ध, ध
र या ऽ द	ना ऽ म, प	र व र दि	गा ऽ र, क
३	×	२	०
प ग	ग ग प	ग	
प ग - री	-, री ग प	री ग -, री	- सा - सा
र ता ऽ र	ऽ, जि न र	च्यो ऽ ऽ, सं	ऽ सा ऽ र
३	×	२	०
नि सा गं	ग	नि	ग री नि
सा गं -, रीं	सां - - री	ग री; सा सा	री ग री, सा
वो ही ऽ,अ	प्र ऽ ऽ म्पा	ऽ र; म न	सु म र, सा
३	×	२	०
नि सा री			
सा नि सा री	ग - ग,		
हे ब सु ल	ता ऽ ने, इत्यादि स्थायी के अनुसार		
३	×		

राग सालगवराळी–त्रिताल(मध्यलय)

स्थायीः सुमिर 'सुजन' घनश्याम नाम नित
अनाथ नाथ नारायण।

अंतराः पतित उद्धारन परम पवित्र
किरतार जिहिं रच्यो संसार
वोही अप्रम्पार मन॥

स्थायी

ग नि़	सा नि़	प	
री ग री,सा	सा नि़,सा री	ग - ग,री	ग री सा सा
सु मि र,सु	ज न,घ न	श्या ऽ म,ना	ऽ म नि त
०	३	×	२

ग प	नि़	ग प	
री ग प प,	ध नि़ ध प	-, प ध प	री ग री सा
अ ना ऽ थ,	ना ऽ ऽ थ	ऽ, ना ऽ ऽ	रा ऽ य ण
०	३	×	२

अंतरा

ध
प
प

सां सां		नि़ ध	नि ग
ध नि़ सां,नि़	सां - सां सां,	सां नि़ ध,प	ध नि़ ध ,प
ति त ऽ,उ	द्धा ऽ र न,	प र म,प	वि ऽ त्र ,कि
३	×	२	०

प ग	ग ग	प ग	
प ग - री	-, री ग प	री ग -,री	- सा - सा
र ता ऽ र	ऽ, जि हिं र	च्यो ऽ ऽ,सं	ऽ सा ऽ र
३	×	२	०

नि़ सा गं	नि ग	नि़	ग री नि़
सा गं -,रीं	सां - - री	ग री;सा सा	री ग री,सा
वो ही ऽ,अ	प्र ऽ ऽ म्या	ऽ र;म न	सु मि र,सु
३	×	२	०

नि़ सा नि़ सा री	
सा नि़,सा री	ग - ग,
ज न,घ न	श्या ऽ म,
३	×

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग सालगवराळी–एकताल (मध्यलय)

स्थायी: जियरा नहिं माने एक घरि पल छिन
तरपत बीतत निसदिन नीर झरत नैननसों।

अंतरा: कासे कहूँ मन की बिथा, परदेसी बालमुवा मोरा
जारे जारे पतंगवा कहो संदेसा पियासों॥

स्थायी

ग		ग		नि॒		सा					
री	ग	री	–,	सा	सा	ध	–	ध ,	नि	ध	प
जि	य	रा	ऽ,	न	हिं	मा	ऽ	ने ,	ए	ऽ	क
०		३		४		×		०		२	
ग			प	ग		नि॒	सा		ग	री	
प	ध	प	ग	री	सा,	ध़	नि़	सा	री,	ग	–
घ	रि	प	ल	छि	न,	त	र	प	त,	बी	ऽ
०		३		४		×		०		२	
		नि	सां			नि		गं	नि		
प	प,	ध	नि	सां	सां,	सांरीं	गं	रीं ,	सां	सां	सां
त	त,	नि	स	दि	न,	नीऽ	ऽ	र ,	झ	र	त
०		३		४		×		०		२	
नि						ग					
धनि	सांनि	–	ध	–	प,	रीग	पध	निसां	निध	पग	रीसा
नेऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ	न,	सोंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

गं				रीं		ध			सां		
रीं	–	रीं ,	गं	रीं	सां,	प	प	ध	नि	सां	–
का	ऽ	से ,	क	हूँ	ऽ,	म	न	की	बि	था	ऽ
०		३		४		×		०		२	
नि		नि			प	नि	ध	प		ग	
सां	नि	ध	–	प,	नि	ध	प	ग	–	री	सा
प	र	दे	ऽ	सी,	बा	ल	मु	वा	ऽ	मो	रा
०		३		४		×		०		२	

ग प	ध नि	सां	गं	गं	
– , री	ग प	ध नि	सां सां	रीं गं,	रीं सां
ऽ , जा	रे जा	रे प	तं ग	वा ऽ,	क हो
०	३	४	×	०	२

ध नि		ग प ग			
प ध	नि ध,	प ग	रीग पध	निसां निध	पग रीसा
सं दे	ऽ सा,	पि या	सोंऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ
०	३	४	×	०	२

राग सालगवराळी-एकताल (विलंबित)

स्थायी: आज बधाई बाजे नंद-महलमों सखि

जनम लिये ब्रिजराज दुलारो।

अंतरा: मोहनी मूरत अत मन भाई, लेहों बलैया

जुग जुग जीवो रे क्रेष्ण कुँवारो॥

स्थायी

नि ग	नि	ग	ग		नि
सा,रीग री,री	सा ,सारी	ग –	परी ,ग	री सा	सा –री
आ,ऽऽ ज,ब	धा ,ईऽ	बा ऽ	ऽऽ ऽ,ऽ	जे ऽ	नं ऽऽ
३	४	×	०	२	०

ग	ग	प	ग		नि प
ग ,प	प ,पध	प ग	री ग	री सा	सारी ग,प
द ,म	ह ,लऽ	मों ऽ	ऽ ऽ	स खि	जन म,लि
३	४	×	०	२	०

ग	प प	ग प	ग ग	प	ग
प ,प	ध,धनि धप	प(प) ग	रीग प	री ग	री सा;
ये ,ऽ	ऽ,ऽऽ ब्रिज	राऽ ज	दुऽ ला	ऽ ऽ	रो ऽ;
३	४	×	०	२	०

अंतरा

पध निसां	सां निसां	सांसां ,सां	सां ,सांसां	रीं -	सां -
मोह,नीS	मू SS	रत ,अ	त ,मन	भाS	ईS
४	×	०	२	०	३
सां,रींगं रीं,रीं	सां नि	ध प	प ध,ध	नि धप	प (प)
ले,SS हों,ब	लै S	या S	जु ग,S	S जुग	जी S
४	×	०	२	०	३
ग री	रीग पध	प ग,री	प -	रीग रीसा ;	
वो रे	क्रेS SS	ष्ण S,कुँ	वा S	SS रोS ;	
४	×	०	२	०	

राग देवगांधारी तोडी

यह एक तोडी का प्रकार है। इसमें दोनों ऋषभ, दोनों गांधार, दोनों धैवतों का प्रयोग होता है। षड्ज वादी, पंचम संवादी है। इसकी जाति सम्पूर्ण होते हुए भी चलन वक्र है। गान समय प्रातःकाल का दूसरा प्रहर होगा।

रागवाचक स्वर-समुदाय

सा, ध़ ध, प, धमप ग, रे़ रे, सा, सारेग, गम, पनिध, प, धमप, ग, रे, पमप, ग, रे, सा।

स्वर विस्तार

१. सा, रे़ रे, सा, रेनि़सा, रे प, ग, रे, सा, नि़सारेगम, गमप, नि ध, प, धमप, ग, रेमपधमप, ग, रे, सा।

२. सा, रे, ध़, प़, सा, रे़ रे, सा, नि़सारेगम, प, निध, प, ग, रे, पमप, ग, रे, सा।

३. सा, रेगम, गम, गमप, नि ध, प, सां, रेंनि ध, प, पधनिसां, म, म, प, धमप, ग, रे, सा।

४. सा,प,मप,नि ध,प,पधनिसां,ध,प, गमप,सारेगमप,ध,प,धमप,ग,
रेमपधमप,ग,रे,सा।

५. अंतराः मप ध,निप,सां,निसां,पधनिसां,रें,रें,सां,निसां,ध,ग रे,
सां,रेंरेंसांनिसांरें,ध,निप,पधनिसां,पधमप,रेमपधमप,ग,रें,रे,सा।

६. पप ध,सां,गं रें,सां,सांरेंगं,मं,गंमंपं,गं,रें,सां,गंरेंसां,रेंनिध,प,
पधनिसां,पधमप,ग,रे,सा,रेसानिसा,रेमपधमप,ग,रे,रे,सा,
निसारेगमपधनिसां,पधमप,ग,रे,रे,सा।

७. तानें: सारेगम गमप मपधनिसांनिधप रेंसांरेंनिधप मपधनिसांरेंसां
रेंनिधप धमपगगरेसा। रेंरेंसां रेंरेंनिधप मपधनिसां पधनिसां गंरेंसां
निसांरेंरेंसां रेंनिधप, सारेगमपध नि सां–पधमप गगरेसा।

राग देवगांधारी तोडी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: राग रसको भेद न्यारो, सुर संजोग
रहस रस जाने, तब आवे उपजे रस राग रंग।

अंतरा: सुन 'सुजनवा' साची नीकी सीख
सुर मेल संवादि वादि सुर-संगत राग-अंग
उचार, नेम धरम बिन नहिं उपजे रस राग रंग॥

स्थायी

,	री	नि	सा	री	प	ग	–	–,	री	–	री	री	–	सा	–
,	रा	ऽ	ग	र	स	को	ऽ	ऽ,	भे	ऽ	द	न्या	ऽ	रो	ऽ
०				३				×				२			
–,	नि	सा	री	ध	नि	प,म		प	ध	नि	सा	री	म	प	–
ऽ,	सु	र	सं	जो	ऽ	ग,र		ह	स	र	स	जा	ऽ	ने	ऽ
०				३				×				२			

नि ध नि प	— म, प ध	नि सां, प ध	म प री ग
त ब आ ऽ	ऽ वे, उ प	जे ऽ, र स	रा ऽ ग रं
0	३	×	२

सां; री नि सा	री प ग —
ग; रा ऽ ग	र स को ऽ.... इत्यादि
0	३

अंतरा

म, प धनि प	सां — —, नि	सां सां — सां	रीं — सां, सां
न, सु जऽ न	वा ऽ ऽ, सा	ची नी ऽ की	सी ऽ ख, सु
0	३	×	२
गं रीं — सां,	नि — सां —	रीं, ध नि प,	म म प ध
र मे ऽ ल,	सं ऽ वा ऽ	दि, वा ऽ दि,	सु र सं ग
0	३	×	२
नि, सां नि ध	प — ग, ग	री — सा सा,	री नि सा, री
त, रा ऽ ग	अं ऽ ग, उ	चा ऽ ऽ र,	ने ऽ म, ध
0	३	×	२
म री म प,	ध म प ध	नि सां, प ध	म प री ग
र म बि न,	न हिं उ प	जे ऽ, र स	रा ऽ ग रं
0	३	×	२

सां; री नि सा	री प ग —
ग; रा ऽ ग	र स को ऽ.... इत्यादि स्थायी के अनुसार
0	३

राग देवगांधारी तोडी–एकताल(विलंबित)

स्थायीः माथे किरीट, पीताम्बर कट सोहे

मुरली अधर सोहे मन मोहनी।

अंतरा : जमुना नीर तीर नैना निरख्यो ऐसो न्यारो रूप

लागी लगन वाहूँ सों सुध बुध बिसरानी॥

स्थायी

रीनि़, सा	नि़सा, री,प	ग –	री –	सा नि़सा	नि़सा, रीग
माऽ ऽ	ऽऽ, थे,कि	री ऽ	ऽ ऽ	ट ऽऽ	पीऽ, ऽऽ
३	४	×	०	२	०

म,गम, नि,धनि	पप,मप, पधपप	ग री	सा ,नि़प़	सा नि़सा	पध, नि़सां
ऽ,ऽऽ, ता,ऽऽ	म्बर,ऽऽ, कऽटऽ	सो ऽ	हे ,मुर	ली ऽऽ	अध, रऽ
३	४	×	०	२	०

म म	प मप	सा री	ग म	प ग	री सा;
सो हे	ऽ ऽऽ	म न	मो ऽ	ऽ ऽ	ह नी;
३	४	×	०	२	०

अंतरा

मम	प,ध, निप	सां सां,नि़सां	पध, नि़सां	रीं सांसां	गं रीं
जमु	ना,नी, ऽर	ती र,ऽऽ	नैना, निर	ख्यो ऐसो	न्या ऽ
	४	×	०	२	०

सां नि़सां	रीं,ध़, निप	म निप	सां –,प	ध प	रीं नि
ऽ रोऽ	ऽ,रू, ऽप	ला ऽऽ	गी ऽ,ल	ग न	वा ऽ
३	४	×	०	२	०

ध़ म	प ,मप	सारी, गम	पध, नि़सां	मप ग	री सा;
हूँ सों	ऽ ,ऽऽ	सुध, बुध	बिस, राऽ	ऽऽ ऽ	ऽ नी;
३	४	×	०	२	०

राग सावनी केदार

यह एक केदारे का प्रकार बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। इसमें मल्हार का लाग मीयाँमल्हार की तरह दिया जाता है। वादी स्वर मध्यम, संवादी षड्ज और गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है। राग मौसमी (ऋतु राग) होने के कारण वर्षा ऋतु में किसी भी समय गाया जा सकता है।

आरोहावरोह

सा, रेसा, म, मग, प, निधनिसां। सां, निप, म, गमप, गम, रे, सा॥

उठाव

सा रे सा, नि़, मप़, नि़ध़, सा, रे सा, म, म, म प, धनिप, म, गमप, गम, सारे, सा।

स्वरविस्तार

१. सा, नि़ध़, सा, रेसा, म, म, म, प, म, गम, रे, सा, नि़, धनि, सा, प–म– रेसा, नि़–ध़, सा।

२. प़, नि़–ध़ सा, सा, रेसा, म, म–, गप, पपधनिसां, नि (प), म, गमप, गम– रे, सा, म़, प़, नि़ध़, सानि़रे, सा, प, म– रेसा।

३. सा, म–प, प, निध, निसां, नि (प)–म, प, धनिप, म, गमप, गम, रे, सा, पपनिसांरें सां, नि (प), म– रेसा।

४. प़प़ नि़– नि़– नि़सा, सासा, म–म–, प, (प) म–, सानि़– नि़सा, सा, म–प, प, नि– नि– नि–, प, मप, सां, (प), रेंसां – (प), सांमं–, रेंसां– (प), म, सा, मग, प, निधनिसां, नि (प), धनिप, म, गमप, गम, रे, सा।

५. सा, प, नि – नि–, प, निसां, सां, रेंसां, मं, गमं, रें, सां, पपनिसां, रें, सां, निसां, सांसांरेंगंमंपं मं, रें, सां, प, सां, (प), म, मगप, नि, धनिप, म, मप, म, गमप, गम, – रे, सा।

राग सावनी केदार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : सोलेहूँ सिंगार किये सजी सजनी
रजनीकान्तहूँ याते लजत अत
चतुर सुघर सुंदर प्यारी नारी।

अंतरा : बाट जुहत आनंद भरे, मिलबे को चाहे
जिया पिया सन, रसिक 'सुजन' मन मोहे भारी॥

स्थायी

निसारी
सोऽऽ

सा ध़ नि़, प़	नि़ -ध़ सा, सा	म -, मग, प	गम, री सा -
ले हूँ ऽ, सिं	गा ऽऽ र, कि	ये ऽ, सऽ जी	सऽ ज नी ऽ
३	×	२	०
सा म ग प	- प नि -ध	सां नि (प), म	म प ध नि
र ज नी का	ऽ न्त हूँ ऽऽ	या ऽ ते, ल	ज त अ त
३	×	२	०
प म ग, म	री सा, सां री	सां, ध नि प,	म गम री; निसारी
च तु र, सु	घ र, सु न्द	र, प्या ऽ री,	ना ऽऽ री; सोऽऽ
३	×	२	०

अंतरा

म - प, प	ध नि, म प	नि - सां, सां	रींगं मंपं -, मं
बा ऽ ट, जु	ह त, आ ऽ	न ऽ न्द, भ	रेऽ ऽऽ ऽ, मि
३	×	२	०
रीं सां - नि	(प) - म -,	गमप गम -, री	सा - ध़नि़ प़
ल बे ऽ को	चा ऽ हे ऽ,	जिऽऽ याऽ ऽ, पि	या ऽ सऽ न
३	×	२	०

नि धसा,सा | म ग प प, | धनि,सां नि,प | म रीसा,निसारी
र सिक,सु | ज न म न, | मोऽ ऽ हे,भा | ऽ रीऽ;सोऽऽ
३ | × | २ | ०

सा धृ नि,प | नि -ध, सा,
ले हूँ ऽ,सिं | गाऽऽ र, ... इत्यादि स्थायी के अनुसार
३ | ×

राग सावनी केदार-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी : तुम हो प्रवीन महा प्रताप
महा बली महा बीर।

अंतरा: सुमरन करत तेरे नाम की
इच्छा पूरन होत सकल
बरनी न जाय महिमा,ऐसो धीर गंभीर॥

स्थायी

निसारी,सासा निृ प,निृध निसारी,सासा | म – मग पप
तुऽऽ,मऽ हो ऽ,ऽऽ पऽऽ,रऽ | बी ऽ ऽऽ ऽन
३ | ×

प,पपधनिसांरीं सांनि (प)म | गमप गम री सा || सा मग,प निधनिसां नि
म,हाऽऽऽऽऽ पर ता ऽ | ऽऽऽ ऽऽ ऽ प || म हाऽ,ऽ ऽऽऽऽ ब
२ | ० || ३

(प),मग प ध,-नि | प म, गमप गम | री – सा –;||
ली,मऽ हा ऽ,ऽऽ | बी ऽ, ऽऽऽ,ऽऽ | ऽ ऽ र ऽ;||
× | २ | ०

अंतरा

सासा पप निनि मप,प	नि सां सां -	सांसांरींगंमंपं गंमं,रीं सां -	
सुम रन कर ऽऽ,त	ते ऽ रे ऽ	नाऽऽऽऽऽ ऽऽ,म की ऽ	
३	×	२	
प सां प म	मप म,गम रीसारीसा	सासा म,मग प,ध--नि पप	
इ च्छा पू ऽ	रन हो,ऽऽ त सकल	ब र नी,नऽ जा,यऽऽऽ महि	
०	३	×	
पपनिसांरीं सां--नि,(प) म,गम री--,सा	सासा,रीगमप म री सा ;		
माऽऽऽऽ ऐऽऽऽ,सो धी,ऽऽ रऽऽ,गं	भीऽ,ऽऽऽऽ ऽ ऽ र ;		
२	०		

राग गौरी शंकर

यह राग गौरी एवम् शंकरा के संयोग से बना है। इसका ठाठ मारवा होगा। मध्यम वर्ज्य है। इसका वादी स्वर पंचम एवम् षड्ज संवादी है। गान समय सायंकाल होगा।

उठाव

प,ग,रेसा,रे,सानि,साग,पगप, निधनि(प),गप,धपग,रेसा,रेनि,साग, पगप।

स्वरविस्तार

१ प, ग, रे,सा, नि,साग,प, गप, नि (प),ग,प,ग,रेग,प,ग,रेसा,रे,सानि, धनि(प), सा, रेग,प, सां, नि (प), गप, ग,रेसा।

२ निसाग,पगप,सां, निधनि, गप, ग,साग,प, धपग,पग,रेसा, रे,सानि, साग, पगप।

३ निसा, पग,रेसा, रेनि, सा, गप गप, गपधनि(प),सां,नि(प), गपधनिसां,नि(प), रेंसांनि, धनि (प), गप,ग,रेसा, रेसा, नि, साग, पगप।

४. सारे सानि, पग रेसानि, पसा, धपगरेसा, नि, नि(प), गप गरेसा, नि, सागप, गपधनिसां, नि (प), गपधपग, रेसा, (सा) नि, साग पगप।

५. अंतरा: पग पपसां, रेंसां, गं, गंपं, गंपंगं, रेंसां, रें, (सां) नि, सांनि (प), पसां, नि (प), गप, रेगप, धप, गप, गरेसा, रे, (सा) नि, साग, पगप।

राग गौरी शंकर– झपताल (मध्यलय)

स्थायी : कौन मदमातो ठाड़ो है बारे
सैन करत मोसों नैन उजियारो।

अंतरा : ऐसो लंगर ढीट देख्यो ना कोऊ गाँव
लाज लजत मोरी सुध बुध बिसारो॥

स्थायी

प ग	री, सा री	(सा) –	नि – –,	सा –	ग प प,	नि नि	प – ग
कौ ऽ	न, म द	मा ऽ	तो ऽ ऽ,	ठा ऽ	ड़ो ऽ है,	बा ऽ	रे ऽ ऽ
×	२	०	३	×	२	०	३
सा –	ग प, प	सां रीं	(सां) – नि,	सांरीं गं	रीं, सां नि	(प) गप	ग री सा;
से ऽ	न ऽ, क	र त	मो ऽ सों,	नैऽ ऽ	न, उ जि	या ऽऽ	रो ऽ ऽ;
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

प ग	प –, सां	सां रीं	सां – सां,	सां –	गं पं गं	रीं सां	(प) ग प
ऐ ऽ	सो ऽ, लं	ग र	ढी ऽ ट,	दे ऽ	ख्यो ऽ ना	को ऊ	गाँ ऽ व
×	२	०	३	×	२	०	३
सा –	ग प, प	सां रीं	सां – नि,	रीं गं	रीं सां, नि	(प) गप	ग री सा;
ला ऽ	ज ऽ, ल	ज त	मो ऽ री,	सु ध	बु ध, बि	सा ऽऽ	रो ऽ ऽ;
×	२	०	३	×	२	०	३

राग गोरी शंकर–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सरस रस रास रच्यो कान्हर

ब्रिज ग्वारन बिच सोहे लला लली।

अंतरा: श्यामसुन्दर संग राधा गोरी

बिलसत निरतत हरखत बनमाली॥

स्थायी

ग
प
स

ऩि	ऩि ऩि	प प	ध ऩि
ग री सा री	सा – सा, सा	ग प –, नि	नि (प) ग, सा
र स र स	रा ऽ स, र	च्यो ऽ ऽ, का	ऽ न्ह र, ब्रि
३	×	२	०

प नि नि	नि नि	सां नि	ग ग
ग प सां रीं	सां सां, सांरीं गं	रीं, सां (प) ग,	प ग रीसा; प
ज ग्वा र न	बि च, सोऽ ऽ	हे, ल ला ऽ,	ल ली ऽऽ; स
३	×	२	०

अंतरा

मं
प
श्या

प नि	नि नि	नि पं	नि
– सां – सां	सां रीं सां सां,	सांरीं गंपं गं पं	गं रीं सां, सां
ऽ म ऽ सु	न्द र सं ग,	राऽ ऽऽ धा ऽ	गो ऽ री, बि
३	×	२	०

ऩि प		ध	प ग
नि प ग, सा	ग प सां, नि	प ध प, ग	प गरी सा; प
ल स त, नि	र त त, ह	र ख त, ब	न माऽ ली; स
३	×	२	०

राग पीलु की माँझ

यह राग-स्वरूप पीलु एवम् तिलककामोद इन दो रागों के मिश्रण से बना हुआ है। रात्रिगेय राग है। इसमें कोमल गंधार तथा शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। यथा: सा री ग़ म प ध नि सां। कर्नाटक संगीत में इस मेल को "गौरी मनोहरी" मेलकर्ता कहते हैं। वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पंचम है। निषाद भी इस राग का एक प्रबल स्वर है; उस पर न्यास भी होता है। आरोह में गंधार तथा धैवत दुर्बल रहते हैं। कुछ वक्र गति का राग है।

उठाव

सा, प़नि़सारेग़, सा, रेप, मप, ध, म(ग़), सानि़, सारेग़, सारेमग़, (सा)।

स्वरविस्तार

१. सा, प, मग़, (सा) नि़, नि़सा, रेप, मग़, (सा); पनि़, मप़नि़, सा, रे म प ध, मे (ग़), सानि़, प़नि़सारेग़, सारेमग़, (सा)।

२. सारेग़, सानि़, प़नि़सारेग़, सारेप मग़, सानि़, रेग़सारे म, मप, रेमपध, मपध, म(ग़), सा, नि़सारेग़ सारेमपध मपसां, पध, म(ग़), सा।

३. सा, म(ग़), सा, प-म(ग़), सा, मपध, म(ग़), सा, रेमपध, मपसां, पध, म(ग़), सा, रेमपध मपनि, सांरेंसां, पसां, पध, म(ग़), सा, (सा) नि़, मप़नि़सारेग़, सारेप ध, म(ग़), सा।

४. प, मप, (ग़), सा, रेमप, ध, मप, रेमपध, म(ग़), सा, रेमप, धमप, सां, पध, म (ग़), सा, रेमपध, मपनिसां, गं, रेंगं, (सां), पनिसांरें सां, (प), मग़, सानि़, नि़सारेप, मग़, (सा)।

५. अंतरा: मपनि, निसां, सां, रेंगं(सां), रेंमंगं, (सां), सांरेंगं सांरेंपं, मं(गं), सां, सां, पध मपसां, रेमपध मपनि, सां, रेंगं, सां, पनिसांरेंपं, मंगं, सां, सांरेंसां, पध मपध, मग़, (सा), नि़, प़नि़सारेप, मग़, (सा)।

६. तानें: प़नि़सारेग़ सारेमग़, (सा); प़नि़सारेग़ सारेमपध मग़, (सा); प़नि़सारेग़ सारेमपनिसांरेंसां, पधमग़, (सा); नि़सारेग़ सारेमपध मपनिसां रेंगंसांरें मंगं, (सां), निसांरेंनिसां, पधमपसां, पधमपध मग़ (सा)।

७. पधमगरेसा, सांरेंसां पधमगरेसा; सांरेंगंसां, रेंसांसांधपमगरेसा; ऩिसारे ऩिसारेग सारेमपध मपनिसांरें निसांरेंगंसांरें पंमंगंरेंसांसां धपमगरेसा।

राग पीलु की माँझ–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ऐसी कैसी रीत नेहा की निराली
पीत लगावत औरनसों
नित झूठी बतियाँ बनावत हो।

अंतरा : हमतो लगाये फँसे पीत
को जाने यह पीत की रीत
रसके हेत रसिया तुम हो॥

स्थायी

नि
सां
ऐ

	ऩि सा	म प	सां
नि प (ग) –	सा – सा, ऩि	सा – री, म	प – नि –
सी कै सी ऽ	री ऽ त, ने	हा ऽ की, नि	रा ऽ ली ऽ
३	×	२	०
नि गं	नि	मं नि	नि प
सां – रीं, गं	(सां) – प प,	पनि सांरीं सां सां	प ध, म म
पी ऽ त, ल	गा ऽ व त,	औऽ ऽऽ र न	सों ऽ, नि त
३	×	२	०
म	ऩि	म री	नि
ग –री (सा) ऩि	प़ ऩि सा, री	ग रीग सा सा	रीम पनि सांरीं; सां
झू ऽऽ ठी ऽ	ब ति याँ, ब	ना ऽऽ व त	होऽ ऽऽ ऽऽ; ऐ
३	×	२	०

अंतरा

प म	ऩि		
, म पध, धप	ग – (सा), सा	रीम पनि सांरीं गं	(सां) – – सां
, हम तोऽ, लऽ	गा ऽ ये, फँ	सेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	पी ऽ ऽ त
३	×	२	०

पनि, सांरीं, सां -	प ध म म,	री म प सां	प ध म ग
कोऽ, ऽऽ, जाऽ	ने ऽ य ह,	पी ऽ त की	री ऽ ऽ त
३	×	२	०

सा (सा) नि़ -,	प़ नि़ सा, री	रीग, री म प	रीम, पनि, सांरीं; सां
र स के ऽ,	हे ऽ त, र	सिऽ या तु म	होऽ ऽऽ ऽऽ; पे
३	×	२	०

राग पीलू की माँझ–एकताल (विलंबित)

स्थायी : कौन अधीन भयो ऐसो बालमुवा मोरा

ना जानूँ कौन ऐसी परी चूक मोसों।

अंतरा : बिरम रहे सखी पीतम प्यारे

बूझत ना कछु सूझत हूँ मोरे

कौन ऐसी परी चूक मोसों॥

स्थायी

सां(सां), गनिप,	(ग) सा, सा	नि़सारीम, मग, सा(सा)	नि ,पनि़सा,
कौऽ, नअ	धी न, भ	योऽऽऽ, ऽऽ ऐ ऽ	सो ,बालमु,
३	४	×	०

सारीग, सारीप, (ग)	(सा) -	सारीग, सारीम, म	प -
वाऽऽ, ऽऽऽ, मो	रा ऽ	नाऽऽ, ऽऽऽ, जा	नूँ ऽ
२	०	३	४

धमप, सां -प	पनि सांरीं	(सां), पध (म) ग	सा नि़सा, सा ;
कौऽऽ, ऽ ऽन	ऐसी परी	चू, ऽऽ क ऽ	मो ऽऽ, सों ;
×	०	२	०

अंतरा

मपनि,नि	सां,सांसां	मपनिसांरींगं,सांरींमं	(गं)सां	पधपमपध(म)		
बिरम,र	हे,सखि	पीSSSSS,SSS	तम	SSSSSSप्या		
४		×		०		
(ग),सानि	मप,निनि	सा,सासा	सारीग,सारीम	,मम		
S,रेS	बूS,झत	ना,कछु	सुSS,SSS	,झत		
	२	०	३			
प,पप	धमप,सां	-प	पनि,सांरीं	(सां),पध	(म)ग	सा निसा,सा;
हूँ,मोरे	केSS,S	Sन	ऐसी,परी	चू,SS	कS	मो SS,सों;
४	×		०	२		०
रीमपनिसांरींसांसां	,नि,प	(ग)	सा,सा			
कोSSSSSSS	,न,अ	धी	न,भ	इत्यादि स्थायी के अनुसार		
३		४				

राग सुरंजनी

यह एक नया राग-स्वरूप दाक्षिणात्य संगीत के १७वें 'सूर्यकान्त' मेलकर्ता से उत्पन्न हुआ है। दिन के प्रथम प्रहर में गाया जानेवाला राग है। इसमें भैरव एवम् माँड इन दो रागों का मिलाप है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज है। आरोह-अवरोह में मध्यम तथा धैवत की संगति बीच बीच में दिखाई देती है। सम्पूर्ण जाति का राग है।

उठाव

सा, रेगमप, गरे,सा, रेग,म, गमप, धपम, पम, (म ग) रे, रे,सा।

स्वरविस्तार

१. सा, गमप, गम, [म]रे, सा, रेगम, म[ग]प, पध, पम, धपम, [म]रे, गमप, गम, [म]रे, सा।

२. सा, रे, सा, गमप, धप, निध, प, धम, धप, म[म]रे, गमप, मग, म[म]रे, सा।

३. सा, रेसा, ऩिध़, म़ध़ऩिसा, रे, गरे, गम, धप, गमधप, गमप, म[म]रे, [ग]रे, सा।

४. म, गम, रेगम, सा, रेसा, गम, धप, म, ऩिसागम, धप, म, निधप, म, सां, रेंसां, निध, निधप, धम, गमप, म, धपमगरे, सा।

५. प, निधप, म, पध, निधप, रेगमपम, पध, निधप, रेंसां, निध, म, धप, ध, निसां, रेंसां, निध, प, गमपध निसांरें, सां, निध, प, रेगमप, म, निधपम, [म]रे, पम, [म]रे, [ग]रे, सा।

६. अंतरा: ध, मध, धनिसां, रें, रें, सां, सांरेंगंमं, [मं]रें, सां, रें, सां, ध, प, मधनिसां, निधप, निधम, रे, गमधप, म, ग, [म]रे, [ग]रे, सा।

७. सां, रेंसां, गंमं, [मं]रें, सां, निसांरें, सां, निधप, रें, सां, निधप, मध, धनिसां, मगम पधनिसां, रें, सां, निधप, धम, ध, प, म, पम, [म]रे, [ग]रे, सा।

८. तानें: सारेगरे गमपधपमग पमगरेसा, गमप गमधपधनि पधनिधम धमप मग पमगरेसा, ऩिसागम पधप ममपधनि धनिपध मप मधपमग पमगरेसा, ऩिसागमपध निसांरेंसांनिध पधनिधम धपमगरे गमधपमगरेसा, ऩिसागरे गमप गमपधनिसां गंरेंसांनिधप ममपधनिसां निधपम धपमगरेसा।

राग सुरंजनी - ताल हंसबिलास (मध्यलय)

स्थायी: सुरन बिच सोहे प्रथम खरज
रागन बिच भैरों राग प्रथम
ध्रुपद सोहे सबहुँ गीतनमों।

अंतरा: खरज साधे साधे कण्ठस्वर
साधे भैरों राग साधे सब
गीत साधे ध्रुपद साधनसों॥

स्थायी

×	2	0	3	४
प म ग री सा	ग म	म – –,	ध प म	प ग म
सु र न बि च	सो ऽ	हे ऽ ऽ,	प्र थ म	ख र ज
प ध प म ग	म प	री ग म	री – री	सा नि सा
रा ग न बि च	भै ऽ	रें ऽ ऽ	रा ऽ ग	प्र थ म
सा ग म,प ध	नि सां,	ध म प	ध – प	म री –;
ध्रु प द,सो ऽ	हे ऽ,	स ब हुँ	गी ऽ त	न मों ऽ;

अंतरा

×	2	0	3	४
ध ध नि सां –	सां –,	रीं – सां	नि सां ध	– प प
ख र ज सा ऽ	धे ऽ,	सा ऽ धे	क ऽ ष्ठ	ऽ स्व र
म प प,ध –	नि ध,	म ग म	प ध नि	सां रीं सां
सा ऽ धे,भै ऽ	रों ऽ,	रा ऽ ग	सा ऽ धे	ऽ स ब
गं रीं सां,ध –	प –,	नि ध प	म – री	ग म प;
गी ऽ त,सा ऽ	धे ऽ,	ध्रु प द	सा ऽ ध	न सों ऽ;

राग सुरंजनी-तिलवाड़ा (विलंबित)

स्थायी: नेह लगा कित जाय बसे मोरे राजा
अब कैसे सहूँ ये बिरह बिथा।

अंतरा: कौन परी मोंसे चूक ऐसी
भयो परदेसी पिया मोरा
असुवनकी झरी लगी, को जाने ये कथा॥

स्थायी

रीगमप ,गरी सा ,गम	प ध प म,प	म – गम ,धप
नेSSS ,हल गा ,कित	जा S S य,ब	से S SS ,मोरे
३	×	२

मग री री सा ‖	गम मधनिसां – निसां	रीं रीं सां निसां
राS S S जा ‖	अब कैंSSS S SS	से S S SS
० ‖	३	×

नि ध म ,गमप	निध प,म रीरी सा ‖
स हूँ S ,येSS	बिर ह,बि थाS S ‖
२	०

अंतरा

ध ,धनि सां धनि	सां निसां,सां रीं सां	धनि सांरीं गंरीं सां
कौ ,नप री मोंसे	चू SS,क ऐ सी	भयो पर देS सी
३	×	२

रींसां ,नि ध प ‖	धप मग री ,सा	गमपध रींसां ध प
पिया ,मो रा S ‖	असु वन की ,झ	रीSSS S,ल गी S
० ‖	३	×

सारी, गम, म, गम	मग, मगम, री, सा ;	रीगमप, गरी, सा, गम
कोऽ, जाऽ, ने, ऽऽ	येऽ, ऽऽऽ, क, था ;	नेऽऽऽ, हल, गा, कित
२	०	३

इत्यादि स्थायी के अनुसार

राग रजनीकल्याण

यह एक नया राग-स्वरूप विचित्र है। खमाज थाट का जन्य है; पर खमाज-अंग इसमें है नहीं। इसमें सब से प्रबल स्वर ऋषभ है और उसी को वादीस्वर समझा जाना चाहिए। रात्रिगेय राग है और इसकी जाति सम्पूर्ण है। कोमलनिषाद की मूर्छना से चलता है; अतएव इस राग के आरोह-अवरोह इस प्रकार होंगे:-

आरोह: नि़ सा रे ग म प ध नि ।

अवरोह: नि ध प म ग रे सा नि़ ॥

राग का विस्तार इस प्रकार होगा:-

१. सा, रे, सा, नि़, सारे, रे, म(म), सारे, सानि़, सारे ग म, सारे, रे, सा।

२. नि़सारेगम, रेम, मप, म, धपम, सारे, म(म), सानि़, सारेगम, रेसा।

३. म(म), रेसानि़, सारे, रे, सा, सारेगम, म, मपध, प, म, गरे, म(म), गरे, सारेगम, रेसा, नि़ नि़, सारे, रे, सा।

४. सा, रेगमप, गप, धप, नि(नि), धप, गमपधपम, सारे, गमप, म, सारे, सानि़, सा, रे, रे, सा।

५. धपमगरे, सा, रे, गमप, धनिधप, गपधप, मगरे, सारेगमपधपमगरे, सारेगमप, म, सारे, सानि़, सा, रे, रे, सा।

६. मगरे, पमगरे, धपमगरे, निधपमगरे, रेगमपधपमगरे, रेप, मगरे, सारेगम, रे, म, सानि़, सारे, सा।

७. सा, म, गरेम, मपधपम, मपधनिधपम, धपमगरे, सारेगमप, गम, सारे, सा, नि़, सारे, रे, सा।

८. अंतराः पपसां, सां, नि, सांरें, रेंसां, नि़सांरेंगंमं, सांनि, धसांरेंसांनि़धपम, मपधनि़सां, नि़धपम, गम, पधपम, गरे, गमप, गम, रे, सारे, गम, रे, सा, नि़, सारे, रे, सा।

९. तानें: रेसानि़सारेगमगरेसा, नि़सारेगमपधपमगरेसा, नि़सारेगमपधनि़धपमग रेगमपधनि़सांरेंसांनि़धपमग, रेगमपधनि़सांरेंगंरेंसांनि़धपमगरेसानि़, सारे, रे, सा।

१०. मगरे, पमगरे, धपमगरे, नि़धपमगरे, रेंसांनि़धपमगरे, गमपधनि़धपमगरे, गमगरे, गरे, सानि़, सारेगम, सानि़, सारे, रे, सा।

राग रजनीकल्याण – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: अब तो याद करो ईश्वर को
निकट आयी घरी अंत समे की।

अंतरा: सुत दारा संसारा सबही
छाँड़ देओ भी माया जंजाल॥

स्थायी

मप, मम, री, सा	– नि़ –, सा	री – –, सा	री ग म प
अऽ, बऽ, तो, या	ऽ द ऽ, कि	जो ऽ ऽ, ई	श्व र को
०	३	×	२
प ध प, म	ग री –, सा	री – –, म	प म री सा;
नि क ट, आ	ऽ यी ऽ, घ	री ऽ ऽ, अं	त स मे की;
०	३	×	२

अंतरा

प प सां –	सां –, सां –	सां – नि –	सां रीं रीं सां
सु त दा ऽ	रा ऽ, सं ऽ	सा ऽ रा ऽ	स ब ही ऽ
०	३	×	२

नि सां गं		प	
सां – गं रीं	– रीं सां –	मप निसां रीं सां	निनि पप मम रीसा;
छाँ ऽ इ दे	ऽ ओ भी ऽ	माऽ ऽऽ ऽ या	जंऽ जाऽ ऽऽ लऽ;
०	३	×	२

राग रजनीकल्याण – एकताल (विलंबित)

स्थायीः अब न माने जियरा एरी आली।

अंतराः निसदिना घरि पल बिरह बिथा मोहे सतावे

कासे कहूँ अपनी ये कथा आली॥

स्थायी

ग ग	नि़	सा	नि़ म	ध	
मपमम,री सा	रीसासानि़ ,सारी	री सा	सारी म	पध पम	गम रीसा; ‖
अऽबऽ,न मा	ने ऽऽऽ ,जिय	रा ऽ	एरी ऽ	आऽ ऽऽ	ऽऽ लीऽ; ‖
३	४	×	०	२	०

(म /ग above गम रीसा)

अंतरा

प /म		नि	नि	सां मं	
,मप,प	सां निसां	सांसां रींसां	सांसां रीं, रीं	गंमं ,रींसां	रींसां प
,निस,दि	ना ऽऽ	घरि पल	बिर ह,बि	थाऽ ,मोहे	सता वे
	×	०	२	०	३

प	सा	म	नि	म /ग
गमप,गम ,रीसा	नि़ ,सारी	गम पनिसांरीं,सां	निप म	गम रीसा;
काऽऽ,ऽऽ ,सेक	हूँ ,अप	नीऽ येऽऽऽ ,क	थाऽ ऽ	आऽ लीऽ;
४	×	०	२	०

राग जोगेश्वरी

यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है, जिसमें रागेश्वरी का प्रधान अंग रखते हुए कुछ जैजैवंती की छाया लगती है। खमाज ठाठ से इसकी उत्पत्ति है। वादी स्वर षड्ज, संवादी मध्यम है। रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है। कोमल गंधार का प्रयोग इसमें न होगा।

स्वर-विस्तार

१. सा, नि़ध़सा, मरे, नि़सा, रेप, मपध, मग, म, रे, नि़सारेगमप, गम, रेसा।

२. म, गम, रेसा, नि़सारेग, रेसा, नि़ध़सा, रेप, मगम, रे, ध, मगम, रेसा, नि़सारेग, म, रेसा, नि़ध़सा।

३. सा, गम, पम, धग, म, रेप, निधप, ध़नि़सारेग, म, रेप, मगम, रेसा, रे, गम, रेसा।

४. प, धग, म, रेप, निधप, सां, निधप, ध़नि़सा, रेगम, रेप, गम, रे, नि़सारेसा, नि़ध़, सा।

५. अंतरा: सां, निसां, धनिसां, रेंगंमं, रेंसां, निसां, रेंसां, निधप, मपध, ग, म, रेप, मगम, रेसा, सा, ध, ध, गम, रेसा, रेसानि़ध़सा, नि़सारेगमप, गम, रेसा।

६. तानें: नि़सारेगरेसानि़ध़सा, नि़सारेगमप गमरेसानि़ध़सा, नि़सारेप मपधम गमरेसानि़ध़सा, नि़सारेप मपधनिधप मगमरेसानि़ध़सा।

७. मगमरेसा, धपधम गमरेसा, निधपधपम पमगमरेसा, सांनिधप मगमरेसा, सांरेंसांनिधप मपध मगमरेसा।

८. धनिसां धनिसां धनिसांरें गंमंरेंसां निसांनिधप धपमगमरेसानि़ध़सा, रेप मपधनिधप धमगमरेसा नि़सारेगमप गमरेसा।

राग जोगेश्वरी-त्रिताल(मध्यलय)

स्थायी: लाज काज सब छाँडि धाई मैं
बाँसुरी की धुन सुनि भई बोरी
सुध बुध बिसराये सखी री।

अंतरा : नाहिं भावे घर आंगन मोंको
अब ना चैन दिन रैन नींद नहीं
लगी लगन निसदिन, तरप तरप
बीति जात अकुलात जिया री ॥

स्थायी

निसा रीग री,सा	– सा नि ध	सा – सा,म	ग म ग री
लाऽ ऽऽ ज,का	ऽ ज स ब	छाँ ऽ डि,धा	ऽ ई मैं ऽ
०	३	×	२
री पम प प	मप ध म गम	री सा,ध नि	सा री ग –
बाँ ऽऽ सु री	कीऽ ऽ धु नऽ	सु नि,भ ई	बो ऽ री ऽ
०	३	×	२
म गम री सा	नि सा रीग मप	गम री –, नि	सा – रीग म;
सु धऽ बु ध	बि स राऽ ऽऽ	ऽऽ ये ऽ,स	खी ऽ रीऽ ऽ;
०	३	×	२

अंतरा

धनि सां नि सां	– सां,ध नि	सां – सां सां	रींगं मं रीं सां
नाऽ ऽ हिं भा	ऽ वै,घ र	आं ऽ ग न	मोंऽ ऽ को ऽ
०	३	×	२
सां रीं सां नि	ध प,म ग	म ग म,री	– सा नि सा
अ ब ना चै	ऽ न,दि न	रैं ऽ न,नीं	ऽ द न हीं
०	३	×	२

नि़ म	ग	नि़	सा
सा री पम प	ध ध,म गम	री सा, सा सा	सा, ध ध ध
ल गी SS ल	ग न,नि सS	दि न, त र	प, त र प
0	३	×	२

म नि़	सा	ग	ग
ग म री सा	– सा, नि़ सा	रीग मप म, री	सा – रीग म;
बी S ति जा	S त, अ कु	लाS SS त, जि	या S रीS S;
0	३	×	२

राग जोगेश्वरी– एकताल (विलंबित)

स्थायीः जोग जाग जप कीन्हे बहुत दिन बीते
काहे बिलम रहे नाथ निधान अब।

अंतरा : गाय गाय गंधर्व गुनी सुर नर मुनि थाके
तुम्हरो नाम, कीजो कृपा, दीजो दरस दान अब॥

स्थायी

सा नि़	ध़ ध़		ग	ग
नि़सारीग,–री सा	नि़ध़,ध़ सा,नि़सा	म गरी	रीप ,मग	म,गम ,रीसा
जोSSS,Sग जा	SS,ग ज,पS	की SS	न्हेS ,SS	S,SS ,बहु
३	४	×	0	२

सा ग	प	ग	नि़
नि़सारीसा,री प ‖	मपध– मग	रीसा रीगम–,ग	ध़नि़सारी ग
तSSS,दि न ‖	बीSSS तेS	SS काSSS,हे	बिलमर हे
0 ‖	३	४	×

	नि़	री
म,गम ग,री	सा,नि़सारीगमप गम,री	नि़ सा ;
ना,SS थ,नि	धा,SSSSSS SS,न	अ ब ;
0	२	0

अंतरा

,धनिसां-नि	सां निसांसां	सांरींगंमं रींसां	सांरींसांनि धप
,गाऽऽ,ऽय	गा ऽऽ,य	गंधरव गुनि	सुरनर मुनि
	×	०	२

म,गम रीसा	सासा री,पम	प--प ,मपध	म,गम रीसा
था,ऽऽ केऽ	तुम्ह रो,ऽऽ	नाऽऽम ,कीऽऽ	जो,ऽऽ कृपा
०	३	४	×

साध-ध ,मरीसा	सा,निसारीगमप गम,री	नि सा;
दीऽऽजो ,दरस	दा,ऽऽऽऽऽऽ ऽऽ,न	अ ब;
०	२	०

राग वियोगवराळी

यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है। ऋषभ, गांधार, मध्यम तथा धैवत कोमल, निषाद शुद्ध व षड्ज ये स्वर इसमें लगते हैं। दाक्षिणात्य मेल प्रक्रिया में "धेनुका" नाम से एक मेल है, जिसके स्वर दाक्षिणात्य स्वर-परिभाषा में इस प्रकार होते हैं: षड्ज, शुद्ध ऋषभ, साधारण गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, शुद्ध धैवत तथा काकली निषाद। हिंदुस्तानी प्रणाली में ये ही स्वर इस प्रकार होंगे: षड्ज, कोमल ऋषभ, कोमल गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, कोमल धैवत तथा शुद्ध निषाद; अर्थात् सा, रे॒, ग॒, म, प, ध॒, नि, सां।

वियोगवराळी के आरोह में गांधार एवम् पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्ज्य हैं। अवरोह में गांधार का प्रयोग सरल अर्थात् 'म ग॒ रे॒ सा' इस प्रकार न होगा; परन्तु गांधार का प्रयोग अवरोह में सदैव 'म, रे ग॒ रे सा' इस प्रकार होगा। वादी स्वर इसमें धैवत एवम् संवादी ऋषभ माना जाता है। गान समय दिन का द्वितीय प्रहर है।

आरोहावरोह

सा, रेम, ध, नि, सां। सां, निध, म, रेग, रे, सा॥

स्वर - विस्तार

१. सा, ध,म, रेग रे, सा, सा, रेम, धनि, धनिसां, निध,म, रेग रे, सा।

२. सा, रे, सारे ग, रे, सा, धनि, सारेग, रे, मध नि, निध, म, धनि, धनिसां, निध, रेगरे, मध,म, रेगरे, सा।

३. सा, ध, म, धनि, धनिसा, सारे ग, रे, सा, सारेमध, नि, ध, धनि, धनिसां, निध, धनिसां, रेंगं, रें, सां, सांनिध, मे, मधनि, ध, म, रेग, रे, सा।

४. म, ध, मे, निध, मे, धनिसां, निध, म, धनि, ध, गंरें, सां, निध, मध, निध, मध,मे, रेमध, निध, म, रेग, रे, सा।

५. ध, मे, रेग, रे, सा; नि, ध, मे, रेग, रे, सा; सां, निध, मे, रेग, रे, सा; धनिसारेग, रे, मधनि, सांरेंगं, रेंसां, धनि, धमे, रेमधमे, रेगरे, सा।

६. अंतरा: ध, निनिसां, निसां, धनिसांरेंगं, रेंगं, रें सां, धनि, धनिसां, निध, मधनिसां, निध, मधनिध, मे, गंरेंसांनिध, म, निध, मे, रे, गरेसा।

७. तानें: सारेगरेसा, सारेमधनिधम रेगरेसा, सारेमधनिसांनिधम रेगरेसा, सारेमधनिसां रेंगंरेंसांनिधम रेगरेसा।

८. गगरे गगरेसा, धधम धधमरे गगरेसा, गंगंरें गंगंरें सांनिधमरे गगरेसा; सारेगरे मधनिध सांरेंगंरें सांनिधम रेगरेसा।

९. मधनिध, मधनिसांनिध, मधनिसांरेंसांनिध, मधनिसांरेंगंरेंसांनिध, मधनिधम रेगरेसा।

१०. रेसा गरे धम निध सांनि रेंसां गंरें सांनिधमध निनिध निनिधम रेगरेसा।

११. गरेसा धमरे निधम सांनिध रेंसांनि, गंरेंसांनि धनिसांनि मधनिध रेमधम रेगरेसा, रेमधनिसां - - - निधम रेगरेसा।

राग वियोगवराळी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायीः बिनती यही न जैयो मथुरा नगरी
गोकुल धाम छाँडी।
अंतराः भये उदास नर नारी सब जीव जंत
ग्राम गोकुल के तोरे बिना
घर अंगना उजाड़ी॥

स्थायी

ध
बि

म री ग री | सा –,म धनि | सां ध म,री | ग रीसा,री
न ती ऽ य | ही ऽ,न जैऽ | ऽ यो ऽ,म | थु रा ऽ, न
३ | × | २ | ०

ग री, सा– | री म धनिसांरीं | गं रीं सां,री | ग री सा; ध
ग री, गोऽ | कु ल धाऽऽऽ | ऽ म ऽ,छाँ | ऽ डी ऽ; बि
३ | × | २ | ०

अंतरा

–, म ध नि | सां – सां,रीं | सां रीं गं रीं | –,सां सां नि
ऽ, भ ये उ | दा ऽ स, न | र ना ऽ री | ऽ, स ब जी
३ | × | २ | ०

ध ध, म – | म,री ग री, | सा – सा सा | ध नि सा,री
ऽ व, जं ऽ | त,ग्रा ऽ म, | गो ऽ कु ल | के ऽ ऽ,तो
३ | × | २ | ०

म ध नि सां | –,रीं गं रीं | सां ध नि, ध | म – म; ध
रे बि ना ऽ | ऽ,घ र अं | ग ना ऽ, उ | जा ऽ ड़ी; बि
३ | × | २ | ०

राग वियोगवराळी–एकताल(विलंबित)

स्थायी: लाख करोर जियो जियो नाद पुजारी हे
जस कीरत अनत बढ़े तिहारी या जग में हो।

अंतरा: गावो सुनावो रिझावो गायक गुनी कहावो
सदा रहो रत संगीत सुधा रस में हो॥

स्थायी

धनि धनिसांनि,धम | री सा,सा | रीग,री सा | सारी म,म | धनि धनिसां-
लाऽ ऽऽऽऽ,खक | रो र,जि | योऽ,जि यो | नाऽ द,पु | जाऽ ऽऽऽऽ
४ | × | ० | २ | ०

सांरीगं- रींसां | सांसां रीं,सांसां | धनिधम रीसा | साधनि- धनिसा-,सा-
रीऽऽऽ हेऽ | जस की,रत | अनतब ढ़ेऽ | तिहाऽऽ ऽऽऽऽ,रीऽ
३ | ४ | × | ०

सारीमधनिसां -,सांरीं | सांरीगं- ,धनिसांनि | धम,रीग रीसा ||
याऽऽऽऽऽ ऽ,जग | मेंऽऽऽ ,होऽऽऽ | ऽऽ,ऽऽ ऽऽ ||
२ | ० | ३

अंतरा

ध निनि | सां सां,सां | रींगं रींसां | नि ,सांनि | धम,नि | धम रीसा
गा वो,सु | ना वो,रि | झाऽ वोऽ | गा ,यक | गुनि,क | हाऽ वोऽ
४ | × | ० | २ | ० | ३

सारी म,म | ध ,निनि | सां धनिसांरीं,सां रीं | गं ,रींगं | रींसां
सदा ऽ,र | हो ,रत | सं गीऽऽऽ,त सु | धा ,रस | मेंऽ
४ | × | ० | २ | ०

,धनिसांनि | धम,रीग रीसा; ||
,होऽऽऽ | ऽऽ,ऽऽ ऽऽ; ||
| ३

राग सुरेश्वरी

हिंदुस्तानी संगीत में कई एक रागों की निर्मिति केवल थाट परिवर्तन करने से हुई है। ऐसे प्रयोग के फलस्वरूप इस सुरेश्वरी राग की संकल्पना लेखक द्वारा की गई है। राग बागेश्री के स्वरूप को कायम रखते हुए, केवल गांधार तथा निषाद स्वरों को तीव्र स्थान में रखते हुवे सुरेश्वरी का यह राग-रूप स्पष्ट हो जाता है। अर्थात इस राग की उत्पत्ति खमाज थाट के अंतर्गत मानी जावेगी।

इस राग के आरोह में ऋषभ स्वर वर्ज्य एवम् आरोह तथा अवरोह में पंचम का प्रयोग अल्प प्रमाण में किया जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज माना गया है। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर होगा।

आरोहावरोह

सा, गम, पध, मग, मधनिसां | सां, निध, मपध, मग, मग, (सा)रे, सा ॥

स्वर – विस्तार

१. सा, रेसा, ऩिध़, ऩिसा, म, मग, (सा)रे, सा; सा, गम, धम, पध, मग, मग, (सा)रे, सा।

२. सा, गरेसाऩिध़, ऩिध़, मध़ऩिसा, धऩिसा, मग, (सा)रे, सा; सा, गमध, निध, निध, म, गमधनिसां, निध, निधपम पध, मग, मग, (सा)रे, सा।

३. सा, म, गम, धऩिसा, गम, ध, म, निध, म, गमधनि, ध, म, मधनिसां, निध, म, मपध, मग, मग, मधनिध, निसां, निध मपध, मग, मग, (सा)रे, सा।

४. सा, गम, गमध, निध, मधनिध, मधनिसां, निसां, निध, धनिसां, गं, (सां)रें, सां, रेंसांनिध, मधनिध, निधपम, पध, मग, मग, (सा)रे, सा।

५. अंतरा: मग, मधनिध, निसां, निसां, गं, (सां)रें, सां, धनिसां, मं, मंगं, मंगं, (सां)रें, सां, रेंसांनिसां, निध, गमधनिसां, निधपम, पध, मग, मग, (सा)रे, सा।

६. सां, निसां, धनिसां, मग, मधनिसां, सांग, मपध, मग, मधनिसां, धनिसां, मं, गमं, (सां)रें, सां, धनिसांगंरेंसां, निध, मधनिसां, निधपमपध, मग, मग, (सा)रे सा।

७. तानें : सागमग मगरेसा, सागमध मधमग मगरेसा, सागमध मधनिध निधमपधमग मगरेसा, सागमध मधनिसां धनिसांगं मंगंरेंसां रेंसांनिसांनिध मधनिसांनिधपम पधमग मगरेसा।

८. मगमगरेसा, धमधमपधमग मगरेसा, निधनिधपमपधमग मगरेसा, धऩिसाम गमधम धनिसांमं गंमंगंरेंसां रेंसांनिध मधनिसांनिध मधनिध मपधमग मगरेसा।

९. सागमग सागमधम गमनिध मधनिसांनि धनिसांगं सांगंमंगं मंगंरेंसां, निसांरें धनिसां पधनि मपधमग, सागमधनिसां मंगंरेंसांनिधपम, निसागमधनि सांनिधपमग मगरेसा।

राग सुरेश्वरी–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : गुरु बिना ग्यान कबहु नहीं आवे
सुध बानी सुध मुद्रा न सधे।

अंतरा : गुरु मुखतें साची सीख 'सुजान' पावे
आवे तुरतहूँ सुर लय राग तान ताल सुधबुधे॥

स्थायी

(ग) म
गु

(सां) ध नि सां –	(नि) ध – म, पध	म ग री सा	री – सा, (ऩि) ध़
रु बि ना ऽ	ग्या ऽ न, कऽ	ब हु न हीं	आ ऽ वे, सु
३	×	२	०
ऩि सा (म) ग म	ध –, नि ध	नि ध (प) म पध	(म) ग री सा; (ग) म
ध बा ऽ नी	ऽ ऽ, सु ध	मु ऽ द्रा ऽऽ	न स धे; गु
३	×	२	०

अंतरा

				(नि) सां
				गु
नि सां ध नि	सां – सां, ध	नि सां गं, मं	गं रीं सां, रीं	
रु मु ख तें	सा ऽ चि, सी	ऽ ख ऽ, सु	जा ऽ न, पा	
३	×	२	०	
सां नि ध, म	– धनि सां ध	नि ध म –,	ध़ नि़ सा ग	
ऽ वे ऽ, आ	ऽ वेऽ ऽ तु	र त हूँ ऽ,	सु र ल य	
३	×	२	०	
म – म, ध	– ध, सां –	नि, ध प म	ग री सा; म	
रा ऽ ग, ता	ऽ न, ता ऽ	ल, स ब सु	ध बु धे; गु	
३	×	२	०	
ध नि सां –				
रु बि ना ऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार			
३				

राग सुरेश्वरी–एकताल(विलंबित)

स्थायी: जियरा नहीं माने एक घरी पल पियु बिन कैसे
कहे सखी कहे दिन रतिया।
अंतरा: कौन सुने मोरे मन की बिथा
जाय कहे को परदेसी मोरे पिया॥

स्थायी

,गम	धनिसां– –,निध	म ,गम	म ,गम	मप,मपध– मग	पग म,रीसा
,जिय	राऽऽऽ ऽ,नहीं	मा ,ऽऽ	ने ,ऽऽ	एऽ,ऽऽऽऽकऽ	घरी ऽ,पल
	४	×	०	२	०

धनि ,साग	म,गम म,गम	मध ,निसां	रींसां ,निसां	मध ,निध
पियु ,बिन	के,SS से,SS	कहे ,सखी	कहे ,SS	दिन ,रति
३	४	×	०	२

निध मग	रीसा ;गम	धनिसां– –,निध	
याऽ SS	SS ;जिय	राSSS S,नहीं	इत्यादि
०	३	४	

अंतरा

म गम,धनि	सां ,निसां	सां सां	धनि सांरींसां	निसां निध
को SS,नसु	ने ,SS	मो रे	मन कीऽ,बि	थाऽ SS
४	×	०	२	०

धनिसांगं ,मंगं	रीं सां	निध ,गम	धनिसां– निध	म ,पध
जाSSS ,यक	हे S	कोऽ ,पर	देSSS सीऽ	S ,मोऽ
३	४	×	०	२

मग ,मग	रीसा ;गम	धनिसां– –,निध	
रेऽ ,पिऽ	याऽ ;जिय	राSSS S,नहीं	इत्यादि स्थायी के अनुसार
०	३	४	

राग सुरेश्वरी–होरी–धमार

स्थायी : छूटत पिचकारी अनेक रंग

अतही धूमधामसों परत फुहार।

अंतरा : ब्रिज में रास रच्यो है हरि

ताकी शोभा बरनी ना जाए सहज

आनन्द पावत सब नर नार॥

स्थायी

			नि़ सा छू
म नि	नि		नि़
ग म ध नि	सां - - ध -	-, नि	ध म, सा
ट त पि च	का ऽ ऽ री ऽ	ऽ, अ	ने क, छू
३	×	२	०
म नि	नि	ध	प
ग म ध नि	सां - - ध -	-, नि	ध म ग
ट त पि च	का ऽ ऽ री ऽ	ऽ, अ	ने ऽ क
३	×	२	०
	सा नि़		म
री - सा सा,	री सा नि़, ध़ नि़	- सा	ग म ग
रं ऽ ऽ ग,	अ त ही, धू ऽ	ऽ म	धा ऽ म
३	×	२	०
नि	सां		नि़
ध - नि -,	रीं सां - नि ध	-, नि	ध म ; सा
सों ऽ ऽ ऽ,	प र ऽ त ऽ	ऽ, फु	हा र ; छू
३	×	२	०

अंतरा

नि नि	नि	सां	
सां सां ध नि	सां - - सां -	-, मं	गं - रीं
ब्रि ज में ऽ	रा ऽ ऽ स ऽ	ऽ, र	च्यो ऽ ऽ
३	×	२	०
नि		ध	
सां - ध नि,	सां - नि ध -	-, नि	ध म ग
है ऽ ह रि,	ता ऽ ऽ की ऽ	ऽ, शो	ऽ भा ऽ
३	×	२	०
म	म		नि
प म ग री	सा - - ग -	- म	ध नि सां
ब र नी ऽ	ना ऽ ऽ जा ऽ	ऽ प	स ह ज
३	×	२	०

नि ध नि सां गं	रीं सां नि, ध म	ग री	सा सा ; सा
आ ऽ न न्द	पा व त, स ब	न र	ना र ; छू
३	×	२	०
म नि ग म ध नि	सां – – ध –		
ट त पि च	का ऽ ऽ री ऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार	
३	×		

राग मालवमंजरी

यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है, जिसमें राग मालश्री का प्रधान अंग रखते हुवे बीच बीच में शंकरा राग की कुछ स्वर-संगतियाँ उसके साथ जोड़ दी गई हैं। यह कल्याण थाट का राग माना जावेगा। इसमें ऋषभ तथा मध्यम वर्ज्य हैं, अतएव इसकी जाति औडुव-औडुव होगी। वादी स्वर षड्ज एवम् संवादी पंचम होगा। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर होगा।

उठाव

गपधप, ग सा, ध़सा, पग, प, गप, निध, प, गप, ग सा।

स्वर–विस्तार

१. सा, ध़सा, प, ग, गपधप, ग, सा, ध़सा, ग, पग, प, निध, प, पध, प, ग, गप, ग, सा।

२. सा, पग, सा, ध़सा, निध़, प़, प़ध़प़, सा, प, ग सा, सा, ग, पध, प, ग, गप, निसांगं, सां, निध, प, ग सा, गपधनि, धप, गप, ग सा।

३. सा, ग सा, पग, सा, धप, गप, ग, सा, गप, निध, पधप, ग, साग, पधनिध, पध प, ग, प, गप, ग, सा।

४. सा, प, गप, ध़सा, ग सा, गप, निध, प, गपधनि, धप, गपसां, निध, प, गप, निसांगं, सां, निध, प, पध, प, गप, ग सा।

नि ध नि सां गं	रीं सां नि, ध म	ग री	नि सा सा ; सा
आ ऽ न न्द	पा व त, स ब	न र	ना र् ; छू
३	×	२	०
म नि ग म ध नि	नि सां – – ध –		
ट त पि च	का ऽ ऽ री ऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार	
३	×		

राग मालवमंजरी

यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है, जिसमें राग मालश्री का प्रधान अंग रखते हुवे बीच बीच में शंकरा राग की कुछ स्वर-संगतियाँ उसके साथ जोड़ दी गई हैं। यह कल्याण थाट का राग माना जावेगा। इसमें ऋषभ तथा मध्यम वर्ज्य हैं, अतएव इसकी जाति औडुव-औडुव होगी। वादी स्वर षड्ज एवम् संवादी पंचम होगा। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर होगा।

उठाव

गपधप, ग सा, ध़सा, पग, प, गप, निध, प, गप, ग सा।

स्वर-विस्तार

१. सा, ध़सा, प, ग, गपधप, ग, सा, ध़सा, ग, पग, प, निध, प, पध, प, ग, गप, ग, सा।

२. सा, पग, सा, ध़सा, ऩिध़, प़, प़ध़प़, सा, प, ग सा, सा, ग, पध, प, ग, गप, निसांग, सां, निध, प, गसा, गपधनि, धप, गप, ग सा।

३. सा, ग सा, पग, सा, धप, गप, ग, सा, गप, निध, पधप, ग, साग, पधनिध, पध प, ग, प, गप, ग, सा।

४. सा, प, गप, ध़सा, गसा, गप, निध, प, गपधनि, धप, गपसां, निध, प, गप, निसांग, सां, निध, प, पध, प, गप, ग सा।

५· अंतरा : पप, सां, धसां, गं, सां, सांसांगंपं, गं, पंगं, सां, पप, निसांगं, सां,
निध, प, धसां, प, ग, गपधनि, धप, ग, प, गप, ग, सा।

६· सां, धसां, पधप, ग, पसां, निध, प, गप, सां, निसांगं, सां, सांसांगंपं, गं,
पंगं, सां, निध, प, गपसां, धप, निध, पधप, ग, गसा, गपधनि, ध, पध, प, ग,
सा ग, पधप, ग, सा।

७· तानें : सासागप गपधप गपग-सा, सासापग सागपधनिध पधपप गपधप
गपग-सा, सासागपगसा गपधनिधपप गपसांसांगंसां धसांनिधपप गपधनिध
पधपप गपधपग-सा।

८· पपगपगसा निधपधपप, सासागप गपधपप, गपधनिधपप, गपसांसांगंसां
निधपप, गपसांसां गंपंगंसांनिधपधपप गपधपग-सा।

९· गगसा गगसा पगपधपप गपनिनिध निनिध निधपधपप गपनिसां गंगंसां
गंगंसां गंगंसांधसांसांनिधपप गपधनिध पधपप गपग-सा।

राग मालवमंजरी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: नाम न जानुँ गामहू न जानुँ

काहू को ढीटनवा करे लरकैयाँ

करत मों संग अत बरजोरी।

अंतरा: मुकुट माथे काछे पीताम्बर

गरे हरवा नीको साँवरो

अधर धरी ऐसो मनभावनो

करत मों संग अत बरजोरी ॥

स्थायी

ग प ध प	ग सा सा,ध़	सा ग प ध	प ग ग,ग
ना ऽ म न	जा ऽ नुँ,गा	ऽ म हूँ न	जा ऽ नुँ,का
३	×	२	०
प निसां गं,सां	नि ध प,प	ध प ग प	ग सा सा,प़
हृ कोऽ ऽ,ढी	ट न वा,क	रे ल र ऽ	कै ऽ याँ,क
३	×	२	०
प़ सा ग प	सां – सां,प	ध प ग प	ग – सा सा;
र त में ऽ	सं ऽ ग,अ	त ब र ऽ	जो ऽ ऽ री;
३	×	२	०

अंतरा

, प प प	सां – सां,सां	– सां,गं पं	गं – सां सां
, मु कु ट	मा ऽ थे,का	ऽ छे,पी ऽ	ता ऽ म्ब र
३	×	२	०
प ध प गप	ग सा –,सा	सा ग प प	सां – –,नि
ग रे ह रऽ	वा ऽ ऽ,नी	को साँ ऽ व	रो ऽ ऽ,अ
३	×	२	०
ध प ग सा	प़ ध़ प़,सा	सा ग प प	सां – –,सां
ध र ध री	ऐ ऽ सो,म	न भा ऽ व	नो ऽ ऽ,क
३	×	२	०
सां गं,सां ध	प ग ग,नि	ध प ग प	ग – सा सा;
र त,में ऽ	सं ऽ ग,अ	त ब र ऽ	जो ऽ ऽ री;
३	×	२	०

राग मालवमंजरी–रूपक(विलंबित)

स्थायी: हो मेंडा साँई इष्कदी तैंडी गलाँ मनभावनी ।

अंतरा: दिन रैना मेनुँ याद आवत अतही

जियरा बेकल, इष्कदी तैंडी गलाँ मनभावनी ॥

स्थायी

प	नि़	नि़ प		ग
गपधप ,गसा	सा ध़सा सा	,सासा ग	पग प	प ,निसांगं ,सां
होSSS ,मेंडा	साँ SS ई	,इष्क दी	SS S	तें ,डीSS ,ग
३	⊗	२	३	⊗

	ग	प	प ग
निध प	,पध प	गसा,गपधनि ,ध प,गप	ग सा;
लाँS S	,मन भा	SS,SSSS ,व नी,SS	S S;
२	३	⊗	२

अंतरा

ग प नि	नि	नि	ग प
,पप सां	सां – ,सांसां	सांसांगंपं गं,सां	निध प,गप
,दिन रै	ना S ,मेनुँ	याSSS द,आ	वत अ,तS
३	⊗	२	३

सा	नि़	ग प	ग
गसा ,प़प़ सा	सासागपसां धप	पध प,गप	प ,निसांगं ,सां
हीS ,जिय रा	बेSSSS कल	इष्क दी,SS	तें ,डीSS ,ग
⊗	२	३	⊗

	ग	प	पे ग
निध प	,पध प	गसा,गपधनि ,ध प,गप	ग सा;
लाँS S	,मन भा	SS,SSSS ,व नी,SS	S S;
२	३	⊗	२

राग कुमुद्वती

कल्याण ठाठ से उत्पन्न होनेवाला यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है। इसमें गांधार एवम् निषाद वर्ज्य हैं; अतएव इसकी जाति औडुव-औडुव होगी। कुमुद्वती के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम, इस प्रकार दोनों मध्यमों का प्रयोग इसमें होता है। गांधार वर्जित कामोद का प्रधान अंग रखते हुए शुद्ध मल्हार की छाया बीच बीच में प्रविष्ट की गई है। इसमें वादी स्वर षड्ज तथा संवादी पंचम माना गया है। गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर होगा।

आरोहावरोह

सा, रे, मप, ध, सां। सां, ध, प, मप, म रे, सा॥

स्वर - विस्तार

१. सा, धसा, रेम, प, मरे, सा, धसा, रेम, प, मपध, मरे, मप, मरे, सा।

२. सा, मरे, सा, रे ध, प, मप, सा, मप, धरे, सा, ध, प, मप, ध, सा, रेम, प, रेमपध, मरे, प, मरे, सा।

३. सा, रेसा, मप, मरे, सा, धसा, रेम, प, मपध, मरे, सा, रेम, प, धसां, ध, प, मप, रेमपध, मपध, मरे, मप, मरे, सा।

४. सारे, मप, मपध, मरे, मप, धसां, ध, प, मपध, मरे, रेमपध, मपधसां, ध, प, मपध, मरे, रेमपध, मपधरें, सां, धप, मपधसां, (प), रेमपध, मपध, मरे, प, मरे, सा।

५. सारेमप, रेमप, धसां, धप, रेमपध, मपधसां, धप, मपधरें, सांध, प, मपधसां, (प), मपध, मरे, रेमपध, मपधसां, (प), रेमपध, मपध, मरे, प, मरे, सा।

६. अंतरा: पप, सां, सांरें, सां, धसां, मंरें, सां, रेंसां, धप, धसां, रेंमंपं, मंरें, सां, मपधरें, सांध, प, म, पध, प, रेमपध, मपधसां, पध, प, प(प), मरे, मप, मरे, सा।

७. सां, धसां, मंपधसां, रेमंपध, मरे, मंपधसां, सांरें, मंपं, मंरें सां, मंपधमंप, धरें, सां धप, मंप, सां, (प), मरे, रेमंपधसां, धप, मरे, रेमंपध, मरे सा, रे, ध़, प़, म़प़, सा।

८. तानें : सारेमंपमरेसा, रेसाध़प़ म़प़ध़सा, ध़सारेमं रेमंपध मंपधमरेसा, ध़सारेमं रेमंपध मंपधसांधप मंपधमंप रेमंपध सांसांधप ममरेसा।

९. ममरेसा, धपमंपममरेसा, मंपधसां मंपधमंपममरेसा, ध़सारेमंपध मंपधरें सांधप, मंपधसां मंमंरेंसांधपमंप, रेमंपध मंपधसां रेंमंपंमंपं, मंमंरेंसांसांधपप रेमंपध सांसांधपममरेसा।

राग कुमुद्वती–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : सरस रस बतियाँ करके चले
छाँड गये परदेस मोहे
अजहूँ नाये नाये नाये।

अंतरा : कहो सखी कौन ये रीत पीत की
तरपत रही मैं अकेली, कैसे फँसी
नेहा लगाये लगाये लगाये॥

स्थायी

म		सां	ध री (सा म स)
री सा, री मं	प ध प, ध	सां (प) –, प	म री –, म
र स, र स	ब ति याँ, क	र के ऽ, च	ले ऽ ऽ, छाँ
३	×	२	०

	सा	प़ प़ सा	म
री सा –, री	सा –, ध़ प़	म़ प़ प़, सा	री सा –, री
ऽ ड ऽ, ग	ये ऽ, प र	दे ऽ स, मो	ऽ हे ऽ, अ
३	×	२	०

म प सां –,	रीं – सां, ध	– प –, म	री सा –; म
ज हूँ ऽ ऽ,	ना ऽ ये, ना	ऽ ये ऽ, ना	ऽ ये ऽ; स
३	×	२	०

री सा, री म	
र स, र स	इत्यादि
३	

अंतरा

री
क

म प सां –,	सां – सां सां	सां – सां, सां	– रीं सां –
हो स खी ऽ,	को ऽ न ये	री ऽ त, पी	ऽ त की ऽ
३	×	२	०
सां रीं मं पं	मं रीं सां, सां	ध – प, प	म री सा, री
त र प त	र ही मैं, अ	के ऽ लि, के	से फँ सी, ने
३	×	२	०
म प –, रीं	सां – सां, सां	ध – प, प	म री सा; म
ऽ हा ऽ, ल	गा ऽ ये, ल	गा ऽ ये, ल	गा ऽ ये; स
३	×	२	०

री सा, री म	
र स, र स	इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

राग कुमुद्वती—एकताल(विलंबित)

स्थायी : ये कौन पुरुख परब्रह्म
अगम अगोचर निराकार निर्गुण।

अंतरा : मूँदिकै दसहूँ इंद्रिनको निज अंतर में
परम पुरुख लैहो जानि रे 'सुजन'॥

स्थायी

मंपधप	मरी,सा,री	धप,मप	सा –	सा –	धसा,री,मं	
येऽऽऽ	कौऽ,न,पु	रुख,पर	ब्र ऽ	ह्म ऽ	अग,म,अ	
	३	४	×	०	२	
प,मंपधसां,धप	रीमं,मध	म रीरी	मं प	म री	ध प	सा;
गो,ऽऽऽऽ,चर	निरा,ऽऽ	का ऽर	नि र	गु ण	ऽ ऽ	ऽ;
०	३	४	×	०	२	०
मंपधप	मरी,सा,री	धप				
येऽऽऽ	कौऽ,न,पु	रुख ..... इत्यादि				
	३	४				

अंतरा

प,मंप प	सां,सांसां	रीं –	सां –	मंपधरीं,सांध	प,मंप,मंमं
मूँ,ऽऽ दि	कै,दस	हूँ ऽ	ऽ ऽ	इंऽऽऽ,द्रिन	कोऽऽ,निज
३	४	×	०	२	०
पमं,पध	प मंप	सारीमं,प,धसां	ध प	मरी,री,मंपध–	
अंऽ,तर	में ऽऽ	परम,पु,रुख	लै हो	जाऽनि,रेऽऽऽ	
३	४	×	०	२	
प,रीसा;मंपधप	मरी,सा,री	धप			
सु,जन;येऽऽऽ	कौऽ,न,पु	रुख .... इत्यादि स्थायी के अनुसार			
०	३	४			

राग श्यामली

कल्याण ठाठ से उत्पन्न होनेवाला यह एक मनोरंजक राग-स्वरूप है। इसके आरोहावरोह में गांधार-निषाद वर्ज्य हैं, अतएव इसकी जाति औड़व-औड़व होगी। वादी स्वर षड्‌ज, संवादी पंचम एवम् गान समय रात्रि का प्रथम प्रहर होगा।

बिलावल ठाठ-जन्य राग दुर्गा का ही यह एक परिवर्तित रूप है, जिसमें शुद्ध मध्यम के स्थान पर तीव्र मध्यम का प्रयोग किया गया है। दुर्गा को यूँतो हिमालय की पुत्री मानी गई है और चूँकि यह राग इसी दुर्गा का परिवर्तित रूप होने के कारण इस राग का नामकरण 'श्यामली' निश्चित किया गया है।

आरोहावरोह

सा, रे, मं, प, ध, सां। सां, ध, प, मंप, रे, सा॥

स्वरविस्तार

१. सा, रेसा, रेमं, प, धसां, ध, प, मंप, ध, प, मंप, रे, सा।

२. सा, रेसा, ध़, प़, मं़प़, ध़, सा, ध़सारेमं, रेमंप, मंपध, प, मंप, रे, सा।

३. सा, रेसा, मंप, रे, सा, रेमंपध, मंप, रे, सा, रेमंपध, मंपधसां, धप, मंप, रेसा, रेमंपध, मंप, रेंसां, ध, प, मंपधसां, मंपधमंप, रे, सा।

४. सा, रेमं, प, मंप, रेसा, रेमंप, मंपध, प, धपमंप, रे, मंप, धसां, ध, प, मंपध, मंपसांधसां, ध, प, मंप, रेंसां, ध, प, मंपधसां, रेंमंपं, रें, सां, मंपसां, पध, मंप, रेमंपध, मंपध, मंप, रे, सा।

५. अंतरा: मंप, सां, सांरें, सां, रेंमंपं, मंपं, रें, सां, धसां, धरें, सां, रेंसां, धप, मंप, रेंसां, ध, प, रेमंपधसां, धप, मंप, रे, सा।

६. तानें : सारेसा, रेमंपध मंपधमंप रे–सा, रेमंपध मंपसांधसां पधमंप रेमंपध सांसांधप मंपधमंप रे–सा, ध़सारेमं रेमंपध मंपधसां धसांरेंमंपं मंपंरेंसां धपमंप, रेमंपध मंपसांधसां धपमंपमंरेसा।

७. पम॑परेसा, धपधम॑प रेम॑पधपम॑परेसा, धसाम॑रेपम॑प रेम॑पध म॑पधम॑प सांधसांपधम॑प, रेम॑पध म॑पधसां रेंम॑ंपंम॑ंपं रेंसांरेंसांधप, म॑पधसांसांधप म॑पम॑रेसा।

राग श्यामली–झपताल(मध्यलय)

स्थायी : लावो री गूँध लावो मालन
सरस सुगंध हरवा डारूँ,गरे लागूँ पियु के।

अंतरा : सोलेहूँ सिंगार किये बैठी तकत राह
उनके आवन की, प्यासी दरस की॥

स्थायी

म॑	सां	सां ध		प	प	म॑	नि़
री म॑	प ध सां	ध प	म॑ प प,	म॑ प	ध – प	म॑ प	री –, सा
ला ऽ	वो ऽ री	गूँ ध	ला ऽ वो,	मा ऽ	ल ऽ न	स र	स ऽ, सु
×	2	0	3	×	2	0	3
सा	प़	सा	प		सां	रीं	प
ध़ प़	म़॑ प़ –,	ध़ सा	री –, म॑	प –,	ध सां रीं	ध प	म॑ प ध
गं ध	ह वाऽ,	डा ऽ	रूँ ऽ, ग	रे ऽ,	ला ऽ गूँ	पि यु	के ऽ ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

अंतरा

ध	नि		नि	प	नि	सां	म॑
म॑ प	सां –, सां	सां –	सां रीं सां,	म॑ प	रीं –, सां	ध प	री – सा
सो ले	हूँ ऽ, सिं	गा ऽ	र कि ये,	बै ऽ	ठी ऽ, त	क त	रा ऽ ह
×	2	0	3	×	2	0	3
प	सां	म॑ं पं	म॑ं			सां ध	
म॑ प	ध सां, रीं	म॑ं पं	रीं – सां,	रीं –	सां –, रीं	सां ध	म॑ प ध
उ न	के ऽ, आ	व न	की ऽ ऽ,	प्या ऽ	सी ऽ, द	र स	की ऽ ऽ
×	2	0	3	×	2	0	3

राग हरप्रिया

इस राग की निर्मिति मूर्च्छना पद्धति से की गई है। 'हरप्रिया' यानि 'खरहरप्रिय' मेल, कर्नाटक संगीत प्रणाली से सम्बन्धित है, जो कि हमारे हिन्दुस्तानी प्रणाली में काफी ठाठ कहलाता है। कल्याण ठाठ के धैवत को षड्ज मानते हुए उसी ठाठ की धैवत की मूर्च्छना को पूर्णतया गाने पर हमें काफी ठाठ दृष्टिगोचर होता है। जैसे कि :

कल्याण ठाठ : ध़ ऩि सा रे ग मं प ध।
काफी ठाठ : सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां।

अर्थात्, कल्याण अथवा यमन राग का विस्तार, धैवत को षड्ज मान कर, काफी के स्वर-संगतियों के संदर्भ में करने से 'हरप्रिया' का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। सारांश, यह सब मूर्च्छना-मेल की दिमागी खटपट है।

राग हरप्रिया – रूपक (मध्यलय)

स्थायी: सुन रे 'सुजान' मनमोहन एक राग
हरप्रिया सुन्दर नाम।

अंतरा: गायक गुनि गंधर्व जो साचे ग्यानी
भेद वाको जाने, ना और काहूँ को ये काम॥

स्थायी

म		म	म		
पम ग(ग)	– रीसा	री म म	री म	प रींसांरीं	सां नि –
सुन रेऽ	ऽ सुऽ	जा ऽ न	म न	मो ऽऽऽ	ह न ऽ
2	3	⊗	2	3	⊗

ध		प	री	प	
म प	– म	ग – ग	म री	–म प	पधनिसांरींगं–रींसां
ए ऽ	ऽ क	रा ऽ ग	ह र	ऽप्रि या	सुंऽऽऽऽऽ ऽद र
2	3	⊗	2	3	⊗

री म | ग - | रीसा री सा; ||
ना S | S S | SS S म; ||
2 | 3 | ⊗ ||

अंतरा

म ,पध | सांरीं ,मं | गं - रीसां || रीं सां | सांरीं पं | मं - गं
गा ,यक | गुनि ,गं | ध S SS || S वे | जोS S | सा S चे
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

रींसांरीं सां | नि (नि) | ध प - || नि (नि) | मप -म | ग - ग
ग्याSSS S | नी S | S S S || भे S | SS Sद | वा S को
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

रीसा री | सा - | सा री - || सा -नि | मप धनिसांरींगं | रीं सां -
जाS S | ने S | ना S S || ओ SR | काS हूँSSSS | को ये S
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 | ⊗

धसांरींसां निध | मपम- ग | रीसा री सा; || पम ग(ग) | - ,रीसा |
काSSS SS | SSSS S | SS S म; || सुन रेS | S ,सुS |
2 | 3 | ⊗ || 2 | 3 |

री म म ||
जा S न || इत्यादि स्थायी के अनुसार
⊗ ||

टीपः इन उपरिनिर्दिष्ट रागों के अतिरिक्त इस मालिका के तीनों भागों में दिये गयेः मार्ग-बिहाग, शंकराकरण, सावनी नाट, हेमनाट, केदार-बहार, गौड़-बहार, नटभैरवी आदि रागों की संकल्पना लेखक की अपनी स्वतंत्र सूझ है।

'ताल-लक्षणगीत-संग्रह'

ताल दादरा-राग देस

स्थायीः रसरंग युत गीत जुगत ताल दादरो नाम
खट मात्रा गिनत जामें एक भरी एक तजी।
अंतराः भरी प्रथम तजी तुरिय बोल बजत अत सुंदर
तबले पे धा धी ना धा तू ना लगी झाल मुखर बजी॥

स्थायी

ग	म	री	ग	नि़	सा	री	म	प	नि॒	ध	प,	निसां	रीं	नि॒	ध	म	म
र	स	रं	ग	यु	त	गी	ऽ	त	जु	ग	त,	ताऽ	ऽ	ल	दा	ऽ	द
×			०			×			०			×			०		
प	ध	म	ग	री	री,	री	री	री	प	म	ग,	म	गरी	ग	नि़	सा	सा,
रो	ऽ	ऽ	ना	ऽ	म	ख	ट	मा	ऽ	त्रा	ऽ,	गि	नऽ	त	जा	ऽ	में,
×			०			×			०			×			०		
री	–	री	म	प	–,	पध	नि॒	ध	प	ध	म;						
ए	ऽ	क	भ	री	ऽ,	एऽ	ऽ	क	त	जी	ऽ;						
×			०			×			०								

अंतरा

म	म	–	प	नि	नि	सां	सां	–	नि	सां	सां	म	प	नि	सां	सां	सां
भ	री	ऽ	प्र	थ	म	त	जी	ऽ	तु	रि	य	बो	ऽ	ल	ब	ज	त
×			०			×			०			×			०		
नि	सां	निसां	रीं	रीं	रीं,	रीं	मं	गंरीं	गं	नि	सां,	प	नि॒	ध	प	ध	म,
अ	त	सुऽ	ऽ	न्द	र,	त	ब	लेऽ	ऽ	पे	ऽ,	धा	धी	ना	धा	तू	ना,
×			०			×			०			×			०		

प	सां	–	निसां	रींसां	निध	री	म	प	नि	धप	ध;
ल	गी	ऽ	झाऽ	ऽऽ	लऽ	मु	ख	र	ब	जीऽ	ऽ;
×			०			×			०		

ताल तीव्रा–राग केदार

स्थायी : तेवरो ताल गुनिजन सप्त मात्रा सबहुँ सम्मत
जामें तीन भरी प्रथम तुरीय षष्ठहुँ।

अंतरा : मृदंग धीर गम्भीर गरजत धा दिंता तिट कत गदि गिन
मुक्त हस्त बजावे गुनिजन, रसिक जन मन मोहि लेतहु॥

स्थायी

प	–	प	ध	–	म	–	प	–	प,	सां	नि	ध	प
ते	ऽ	व	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ल,	गु	नि	ज	न
×			२		३		×			२		३	
म॑	प	प	(प)	–	म	–,	प	ध	प	म	सा	री	सा
स	ऽ	प्त	मा	ऽ	त्रा	ऽ,	स	ब	हुँ	स	ऽ	म्म	त
×			२		३		×			२		३	
रा	–	सा	म	–	म	मग	प	–	–,	सां	सां	मं ,	रीं
जा	ऽ	में	ती	ऽ	न	भऽ	री	ऽ	ऽ,	प्र	थ	म ,	तु
×			२		३		×			२		३	
सां	नि	ध	प	–	म	मग	प	–	प	ध	–	म	–
री	ऽ	य	ष	ऽ	ष्ठ	हुँऽ	ते	ऽ	व	रो	ऽ	ऽ	ऽ...इ.
×			२		३		×			२		३	

अंतरा

प	प	प	सां	–	सां,	सां	सां	–	सां	सां	रीं	सां	सां
मृ	दं	ग	धी	ऽ	र,	ग	म्भी	ऽ	र	ग	र	ज	त
×			२		३		×			२		३	

सां	नि	ध	सां	सां	रीं	सां,	ध	–	प	म	–ग	प	, प
धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गिन,	मु	ऽ	क्त	ह	ऽऽ	स्त	, ब
×			२		३		×			२		३	
(प)	–	म	सा	री	सा	सा,	सा	म	मग	प	प	म	प
जा	ऽ	वे	गु	नि	ज	न,	र	सि	कऽ	ज	न	म	न
×			२		३		×			२		३	
धनि	सां	धप	म	मग	प	प;	प	–	प	ध	–	म	–
मोऽ	ऽ	हिऽ	ले	ऽऽ	त	हु;	ते	ऽ	व	रो	ऽ	ऽ	ऽ...इ.
×			२		३		×			२		३	

ताल रूपक – राग तिलककामोद

स्थायीः रूप अनुपम ताल रूपक, सप्त मात्रा नियत सुंदर
ख्याल ध्रुवपद दोऊ बानी, संगत सोहे रीझत जन मन।

अंतराः प्रथम तजि पुनि सोहि सम धरि, तुरिय छटिहूँ भरी मात्रा
बजत बोल मृदंग पर नित ताद्धा तिट कत गदि गिन
सोहि तबले पे निकसत तिन् ता त्रक धिन् त्रक धिंना॥

स्थायी

ऩि	प़	प़	ऩि	ऩि	सा	सा	री	म	गरी	(सा)	–	सा	सा
रू	ऽ	प	अ	नु	प	म	ता	ऽ	लऽ	रू	ऽ	प	क
⊗			२		३		⊗			२		३	
री	–	म	प	ध	म	गरी	सा	री	म	ग	–	(सा)	सा
स	ऽ	प्त	मा	ऽ	त्रा	ऽऽ	नि	य	त	सु	ऽ	न्द	र
⊗			२		३		⊗			२		३	

री ग री | म म | प प || नि – नि | सां – | सां –
ख्या S ल | छु व | प द || दो S ऊ | बा S | नी S
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

सां रीं गं | (सां) – | प –, || री म प | सां पध | (म) गरी;
सं ग त | सो S | है S, || री झ त | ज नS | म नS;
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

अंतरा

म म म | प प | नि नि, || सां – सां | नि सां | सां सां,
प्र थ म | त जि | पु नि, || सो S हि | स म | ध रि,
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

प नि सां | रीं गं | (सां) –, || प सां (सां) | प ध | (म) गरी
तु रि य | छ ठि | हूँ S, || भ री S | मा S | त्रा SS
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

री म गरी | (सा) – | सा, प़ || नि़ सा सा | री ग | सा सा
ब ज तS | बो S | ल, मृ || दं S ग | प र | नि त
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

री – री | म प | नि सां, || रीं मं गंरीं | सां सां | रीं गं
ता S द्धा | तिट कत | गदि गिन, || सो S हिS | त ब | ले S
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

(सां) – – | प ध | (म) ग, || म ग सा | निप़ निसा | रीग (सा);
पे S S | नि क | स त, || तिं ता त्रक | धिंS त्रक | धिंS ना;
⊗ | 2 | 3 || ⊗ | 2 | 3

ताल कहरवा-राग खमाज

स्थायीः भरि एक एक तजि आठ गिने
जब ताल कहरवा सुनत रसिक जन
तबले पे लगी झाल मुखर बजी
ललित रीत अत नीकी बजे।

अंतराः पहले भरी इक फिर तीजि तजी
धागे नाति नक धिंधिं बोल बजत नित
ललित गीत सिंगार सजे॥

स्थायी

म
गम
भरि

प	प,प	ऽप	गम	प	प,प	पध	,गम	ध	ध,नि	धनि	पधनिसां
ए	क,ए	ऽक	तजि	आ	ठ,गि	नेऽ	,जब	ता	ल,क	हर	वाऽऽऽ
×		०		×		०		×		०	

निध	प,ध	गम	गग,	निनि	नि	नि	निनि	सां	सां,सां	सांसां	सांसां,
सुन	त,र	सिक	जन,	तब	ले	पे	लगी	झा	ल,मु	खर	बजी,
×		०		×		०		×		०	

गम	प,सां	(सां)नि	धप	गम	प,ध	(म)ग;	गम	प	प,प	ऽप	
ललि	त,री	ऽत	अत	नीऽ	की,ब	जेऽ;	भरि	ए	क,ए	ऽक	इत्यादि
×		०		×		०		×		०	

अंतरा

धध	ध,नि	धनि	पध	निनि	सां	नि,सां	सां,	पनि	निनि	सांनि	सांसां
पह	ले,भ	रीऽ	इक	फिर	ती	जि,त	जी,	धागे	नाति	नक	धिंधिं
×		०		×		०		×		०	

पधनिरीं सांरीं	सांनि धप	गम पध,सां	रींगं,सां निध	गमपसां प,ध	(म)ग ; गम
बोSSS ल,ब	जत नित	ललि तS,गी	SS,त सिंS	गाSSS र,स	जेS ; भरि
×	०	×	०	×	०

प प,प	-प गम	
ए क,ए	Sक तजि	इत्यादि स्थायी के अनुसार
×	०	

ताल झपताल – राग छायानट

स्थायी : गिनत दश मात्रा तामें त्रय सशब्द एक निःशब्द मिलि
झंपा कहत नाम, मृदंग पर बजत नित
धा धित्ता कत् तिटकत गदिगिन।

अंतरा : प्रथम तृतीय आठमी भरी तजी छठी, बजत जब
तबले पे झपताल नाम कहे, बोल सजत नीके
धीना धीधीना तीना धीधीना ॥

स्थायी

सां ध	प,री ग	म प	ग म री,	सा –	रींग मप री	सा, सा	ध नि प,
गि न	त,द श	मा S	त्रा S S,	ता S	मेंS SS त्र	य, स	श S ब्द,
×	२	०	३	×	२	०	३
म प	प,सा –	री गरी	ग म म,	प –	निसां रीं,रीं	सां सां	ध नि प,
ए S	क, निः S	श SS	द्व मिलि,	झं S	पाS S,क	ह त	ना S म,
×	२	०	३	×	२	०	३
सा सा	सा री री	ग ग	ग म म	प –	ध प –	सां रींरीं	सां धनि प
मृ दं	ग प र	ब ज	त नि त	धाS	धित्ताS	क तिट	कत गदिगिन
×	२	०	३	×	२	०	३

अंतरा

×	2	0	3	×	2	0	3
प प	सां–,सां	सां सां	रीं–सां	सां ध	सां सां रीं,	सां सां	सां धनि प
प्र थ	म ऽ,तृ	ती य	आऽठ	मी ऽ	भ री ऽ,	त जी	छठीऽ ऽ
रीं गंरीं	गं, मं पं	गं मं	रीं–सां	सां सां	रींगं मं रीं	सां –	सां ध प
ब जऽ	त, ज ब	त ब	ले ऽ पे	झ प	ताऽ ऽ ल	ना ऽ	म क हे
प –	निसां रीं,रीं	सां सां	ध नि प	म प	सां धनि प	री ग	मप री सा
बो ऽ	लऽ ऽ,स	ज त	नी ऽ के	धी ना	धी धीऽ ना	ती ना	धीऽ धी ना

ताल सूल–राग मारवा

स्थायीः सूल सुलच्छन कहे दश मात्रा नियमित
ताल ख्याल ध्रुवपद बिलसत दोऊ रीत।

अंतरा-१ः तीन भरी दो तजि भरी प्रथम पंचम
सप्तहूँ मात्रा, तजी तीजि नवमी
धाधा दिंता तिटि धा तिटिकत गदिगिन
गरजत मृदंग रीत॥

अंतरा-२ः तबले पे बजत धिन् त्रक धीना त्रक धीना धीधीना
ख्याल संगत सोहत, जब याहूँ के कोऊ
सुरफाक्ता कहत॥

स्थायी

×	0	2	3	0
म ध	म, ध	म ग	री री	सा सा
सू ऽ	ल, सु	ल ऽ	च्छ न	क हे

(री)नि़	नि़	री	-	ग	-	(ध)मं	मं	ध	ध
द	श	मा	ऽ	त्रा	ऽ	नि	य	मि	त
×		0		2		3		0	
(ध)री	-	री	ग	-	ग	(ध)मं	मं	ध	ध
ता	ऽ	ल	स्या	ऽ	ल	ध्रु	व	प	द
×		0		2		3		0	
(रीं)नि	निरीं	नि	ध	(ध)मं	ध	मं	ग	री	सा
बि	लऽ	स	त	दो	ऽ	क	री	ऽ	त
×		0		2		3		0	

अंतरा-१

रीं	-	रीं	रीं	सां	-,	(ध)मं	ध	सां	सां
ती	ऽ	न	भ	री	ऽ,	दो	ऽ	त	जि
×		0		2		3		0	
(रीं)नि	नि	रीं	गं	मं	गं	रीं	-	सां	सां
भ	री	ऽ	प्र	थ	म	पं	ऽ	च	म
×		0		2		3		0	
(सां)नि	रीं	नि	रीं	नि	ध	मं	ग	री	सा
स	ऽ	प्त	म	हूँ	ऽ	मा	ऽ	त्रा	ऽ
×		0		2		3		0	
(री)नि़	नि़	री	नि़	ध़	ध़	(ध)मं़	ध़	सा	-
त	जी	ऽ	ती	ऽ	जि	न	व	मी	ऽ
×		0		2		3		0	
री	री	ग	ग	मं	मं	ध	ध	सां	सां
धा	धा	दिं	ता	किटि	धा	तिटि	कत	गदि	गन
×		0		2		3		0	

नि	निरीं	नि	ध	री	ग	मं	ग	री	सा
ग	रऽ	ज	त	मृ	दं	ग	री	ऽ	त
×		०		२		३		०	

अंतरा-२

मं	मं	ध	–	सां	–	–	सां	सां	सां
त	ब	ले	ऽ	पे	ऽ	ऽ	ब	ज	त
×		०		२		३		०	
रीं	रीं	नि	रीं	नि	रीं	नि	रीं	नि	ध
धिं	त्रक	धी	ना	त्रक	धी	ना	धी	धी	ना
×		०		२		३		०	
नि	–	नि	रीं	गं	मं	गं	रीं	सां	सां
ख्या	ऽ	ल	सं	ग	त	सो	ऽ	ह	त
×		०		२		३		०	
नि	रीं	नि	ध	मं	ध	मं	ग	री	सा
ज	ब	या	ऽ	हूँ	ऽ	के	ऽ	को	ऊ
×		०		२		३		०	
म़	म़	ध़	–	सा	–	ऩि	री	री	सा
सु	र	फा	ऽ	का	ऽ	ऽ	क	ह	त
×		०		२		३		०	

ताल सार्धरूपक—राग दरबारीकान्हड़ा

(१०॥ मात्रा)

स्थायी : जाही के अनुपम गत सार्धरूपक अत बिचित्र ताल
गिनत जात दश मात्रा ताहूँ पे आध अधिक जोड़ दई
जो जाने सोही गुनी बड़ो ग्यानी।

अंतरा : पहले एक तजी चतुर अधिक अध मात्रा
वाहूँ को माने सम, तापर इक तारी भरी त्रय मात्रा
अंतहुँ तक त्रैमात्रा भरी तारी अनुपम लय
तींऽऽ तींऽऽ नाऽऽ धिंऽ धाऽ त्रक धिंऽऽ धा त्रक
सोहत अत मनहर तबले पे बजत बानि ॥

स्थायी

नि़ नि़	प़ नि़	सा री
रीसा -,ध़ -नि़ प़- -,०	म़प़ ध़नि़ सासा	नि़- सा,री सारी
जाऽ ऽ,ही ऽऽ केऽ ऽ,०	अनु पम गत	साऽ र्ध,रू पक
⊗	२	३
म म म	सा नि़	प
गग ग,म पप,गम रीसा,०	नि़सा सा,री -सा	मम प- प-
अत बिचि ऽत्र, ताऽ लऽ,०	गिन त,जा ऽत	दश माऽ त्राऽ
⊗	२	३
नि नि	नि नि	प
ध- -,ध नि- ,प- -,०	मप सां,ध निप	सां- सां,नि प-
ताऽ ऽ,हूँ ऽऽ,पेऽ ऽ,०	आऽ ध,अ धिक	जोऽ ड़,द ईऽ
⊗	२	३
प म म	सा सा	प़ नि़ सा
मप नि,ग गम रीसा -,०	नि़नि़ साम रीसा	म़प़ ध़,नि़ सासा;
जोऽ ऽ,जा ऽऽ नेऽ ऽ,०	सोऽ हीऽ गुनि	बड़ो ऽ,ग्या ऽनि;
⊗	२	३

अंतरा

मम प,ध धनि सांसां –,० | सांसां सां,नि सांसां | निसां रीं– रींरीं
पह ले,प Sक तजी S,० | चतु र,अ धिक | अध माS त्राS
⊗ | 2 | ३

गं– –,गं गंमं रींसां –,० | निसां रीं– सांसां, | म– पप मप
वाS Sहूँ SS कोS S,० | माS नेS सम, | ताS पर इक
⊗ | 2 | ३

सां– –,नि प– ,मप नि,० | गम री– सा– | नि– सासा रीरी
ताS S,री SS ,भरी S,० | त्रय माS त्राS | अंS तहूँ तक
⊗ | 2 | ३

प– –,म पनि गगम,० | रीसा धनि सा–, | निप गम रीसा
त्रैS S,मा SS त्राS S,० | भरी ताS रीS, | अनु पम लय
⊗ | 2 | ३

म– –,प ––,ध– –,० | नि– सा– सासा, | रीं– –,रीं सांसां
तिंS S,तिं SS,नाS S,० | धिंS धाS त्रक, | धिंS S,धा त्रक
⊗ | 2 | ३

मप सां,नि प,ग मरी सा,० | निनि सा– रीरी | गम प,री –सा;
सोह त,अ त,म नह र,० | तब लेS पेS | बज त,बा Sनि;
⊗ | 2 | ३

टीपः इसमें प्रथम विभाग (बार) का ब्रॅकेट '◡' अर्ध मात्रा का समझना होगा।
शेष सभी ब्रॅकेट पूरी मात्रा के हैं।

ताल चौताल–राग शंकरा

स्थायी: चतुर ताल कहे लच्छन, सुनो रे 'सुजान' मान
द्वादश मात्रा सजत, दो निःशब्द सशब्द चार।

अंतरा: प्रथम पंचम नवम मात्रा, एकादशहूँ सशब्द
तृतीय सप्तम पुनि निःशब्द, ध्रुवपद संग सोहे सिंगार॥

संचारी: धाधादिंता किटधादिंता तिटिकत गदिगिन
गरजत अत धूम धाम, मृदंग पे बजत बोल
मुक्त हस्त करि बिचार॥

आभोग: शिव-ताण्डव निरत संग, सिरि गनेसहूँ बजाए
नाना बिधि बोल परन, सीध आड़ पेंचिदार॥

स्थायी

(नि)					(प)		(नि)			(ध)	
सां	सां	सां,	नि	प	प,	नि	ध	सां,	नि	प	प
च	तु	र,	ता	ऽ	ल,	क	हे	ऽ,	ल	च्छ	न
×		०		२		०		३		४	

(ग)	(प)		(प)		(प)	(ध)				(री)	
प	ग	—	ग	—,	नि	प	ग	प,	ग	रीसा	सा
सु	नो	ऽ	रे	ऽ,	सु	जा	ऽ	न,	मा	ऽऽ	न
×		०		२		०		३		४	

(नि़)		(प)				(प)			(नि)		
सा	—	ग	ग	प	—	नि	—	ध,	सां	सां	सां
द्वा	ऽ	द	श	मा	ऽ	त्रा	ऽ	ऽ,	स	ज	त
×		०		२		०		३		४	

(नि)		(नि)		(ध)		(ग)	(प)		(री)		
सां	गं	सां	नि	—	प,	प	ग	प,	ग	रीसा	सा
दो	ऽ	निः	श	ऽ	ब्द,	स	श	ब्द,	चा	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

ग प नि नि नि
प प | प , सां | सां सां, | सां सां | रीं सां | — सां
प्र थ | म , पं | च म, | न व | म मा | ऽ त्रा
× | ० | २ | ० | ३ | ४

सां सां रीं ध प नि
नि ध | नि सां | नि प, | नि ध | सां नि | — नि
ए ऽ | क्र ऽ | द श, | हूँ ऽ | स श | ऽ ब्द
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि पं पं पं गं रीं रीं
सां सां | सां गं | गं पं | गं गं | पं गं | — सां
तृ ती | य स | प्त म | पु नि | निः श | ऽ ब्द
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि रीं ग ग री
सां गं | सां सां | नि प | प ग | प ग | रीसा सा
ध्रु व | प द | सं ग | सो हे | सिं गा | ऽऽ र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

संचारी

ऩि सा ग
सा सा | प प, | प प | नि प, | नि धसां | नि प
धा धा | दिं ता, | किट धा | दिं ता, | तिटि कत | गदि गिन
× | ० | २ | ० | ३ | ४

नि रीं ध प
सां गं | सां सां | नि प | नि ध | सां , नि | —ध प
ग र | ज त | अ त | धू ऽ | म , धा | ऽऽ म
× | ० | २ | ० | ३ | ४

प ग प ग री
ग प | सां नि | —ध प, | प ग | प , ग | रीसा सा
मृ दं | ग पे | ऽऽ ऽ, | ब ज | त , बो | ऽऽ ल
× | ० | २ | ० | ३ | ४

ऩि प ग
सा — | सा , ग | — ग, | प प | नि प | — प
मु ऽ | क , ह | ऽ स्त, | क रि | बि चा | ऽ र
× | ० | २ | ० | ३ | ४

आभोग

ग		प		नि		नि			नि		
प	प	सां	–	सां	सां,	सां	सां	सां,	सां	–	सां
शि	व	ता	ऽ	ण्ड	व,	नि	र	त,	सं	ऽ	ग
×		0		2		0		3		4	

नि		पं	पं			पं		गं	रीं		
सां	सां	गं	गं	पं	पं,	गं	–,	पं	गं	रींसां,	सां
सि	रि	ग	ने	ऽ	स,	हुँ	ऽ,	ब	जा	ऽऽ,	प
×		0		2		0		3		4	

नि				रीं		ग			ग	री	
सां	–	गं	–	सां	सां,	प	ग	ग,	प	ग	सा
ना	ऽ	ना	ऽ	बि	ध,	बो	ऽ	ल,	प	र	न
×		0		2		0		3		4	

नि			प			नि	नि		नि		
सा	–	सा,	ग	प	प,	सां	–	रीं,	सां	–	सां
सी	ऽ	ध,	आ	ऽ	ड़,	पें	ऽ	चि,	दा	ऽ	र
×		0		2		0		3		4	

ताल एकताल–राग मधमादसारंग

स्थायी : द्वादश मात्रा नियमित, एकताल नाम कहे
प्रथम पंचम नवम एकादश भरी
तृतीय सप्तम तजी।
अंतरा : ख्याल संगत नित सोहत, तबले पे बजत बोल
धिंधिं धात्रक तूना कत्ता धिंत्रक धीना
बिलमित मध्यरु द्रुत सजी॥

स्थायी

सां								म			
नि	–	सां	सां	नि	–	प	म,	री	री	म	प
द्वा	ऽ	द	श	मा	ऽ	त्रा	ऽ,	नि	य	मि	त
×		0		2		0		3		4	

प			प			नि		प			
नि	म	प	सां	–	नि,	म	प	नि	प	म	री
ए	ऽ	क	ता	ऽ	ल,	ना	ऽ	म	क	हे	ऽ
×		0		2		0		३		४	
सा		म				म		प	नि		
नि़	नि़	सा,	री	म	म,	प	प	नि,	म	प	–
प्र	थ	म,	पं	च	म,	न	व	म,	ए	का	ऽ
×		0		2		0		३		४	
सां				सां				सां		नि	
नि	सां	रीं	रीं,	नि	सां	रीं,	सां	नि	नि	म	प;
द	श	भ	री,	तृ	ती	य,	स	प्त	म	त	जी;
×		0		2		0		३		४	

अंतरा

प			प			प					
म	–	म	म	प	प,	नि	नि	सां	–	सां	सां
ख्या	ऽ	ल	सं	ग	त,	नि	त	सो	ऽ	ह	त
×		0		2		0		३		४	
सां		मं				सां	सां				
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां,	नि	नि	सां	रीं	–	रीं
त	ब	ले	ऽ	पे	ऽ,	ब	ज	त	बो	ऽ	ल
×		0		2		0		३		४	
म					रीं	नि		नि		सां	
प	रीं	सां	रीं	नि	सां	प	नि	म	प	नि	सां
धिं	धिं	धा	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धीं	त्रक	धी	ना
×		0		2		0		३		४	
मं				सां				प			
रीं	मं	रीं	सां,	नि	सां	रीं	सां	नि	प	म	प;
बि	ल	मि	त,	म	ऽ	ध्य	रु	द्रु	त	स	जी;
×		0		2		0		३		४	

ताल विक्रम-राग हिंडोल

स्थायी : ताल विक्रम कहत गुनि, जामें द्वादश गिनत नित मात्रा
तीन भरी इक तजि बिलमित लय पे।

अंतरा : प्रथम तृतीय मात्रा नवमीहूँ भरी छठि तजि
धा धित्ता कत्ता तिटिकत गदिगिन
गरजत मृदंग पे॥

स्थायी

(ध)सां –	ध, सां (मं)ध	सां ध, मं	ग सा (सा)ध़ सा
ता S	ल, वि S	क्र म, क	ह त गु नि
×	2	0	3
(मं)ग मं	ग, (नि़)सा –	(सा)मं़ मं़, ध़	(सा)सा सा, ग ग
जा S	में, द्वा S	द श, गि	न त, नि त
×	2	0	3
(ध)मं –	(सां)ध – –,	(ध)सां – सां	गं सां, (सां)मं ध
मा S	त्रा S S,	ती S न	भ री, इ क
×	2	0	3
सां ध,	(ग)मं ग मं	ग सा ध़	(नि़)सा (मं)ग (ध)मं (सां)ध
त जि,	बि ल मि	त ल य	पे S S S
×	2	0	3

अंतरा

(ध)मं मं	ध –, (ध)सां	सां – सां	(नि)सां – सां –
प्र थ	म S, तृ	ती S य	मा S त्रा S
×	2	0	3

सां	सां	गं	सां	–	सां	ध	–	सां	ध	मं	ध
न	व	मी	हूँ	ऽ	भ	री	ऽ	छ	ठि	त	जी
×		2			0			3			

सां	–	मं	गं	–	मं	–	गं	सां	ध	मं	ध
धा	ऽ	धि	त्ता	ऽ	क	ऽ	त्ता	तिटि	कत	गदि	गिन
×		2			0			3			

सां	सां	ध	सां, ध		मं	–	ग	सा	ग	मं	ध
ग	र	ज	त, मृ		दं	ऽ	ग	पे	ऽ	ऽ	ऽ
×		2			0			3			

ताल आड़ाचौताल–राग अड़ाना

स्थायी : अट चौताल नाम सोहे, चतुर्दश मात्रा गुनी गिनत
सशब्द चार निःशब्द तीन बिलमित मध्यरु द्रुत लय करि।

अंतरा १: प्रथम तृतीय सप्तम तापर एकादश सबहूँ सशब्द
पंचम नवम त्रयोदशहूँ मात्रा निःशब्द सबै धरि ॥

अंतरा २: ख्याल बानि संग राजत अत बाजे तबले पे मधुर
धिंत्रक धीना तूना कत्ता त्रक धीना धीधीना
सुन सुनरे 'सुजनवा' माधुरी ॥

स्थायी

सां	सां	ध	नि	सां	–	रीं,	सां	–	रीं	नि	सां	ध	नि
अ	ट	चौ	ऽ	ता	ऽ	ल,	ना	ऽ	म	सो	ऽ	हे	ऽ
×		2		0		2		0		४		0	

सां	सां	ध	नि	सां	–	रीं,	सां	–	रीं	सां	–	ध	, नि
अ	ट	चौ	ऽ	ता	ऽ	ल,	ना	ऽ	म	सो	ऽ	हे	, च
		2		0		3		0		४		0	

प म प म

सां – | नि प | ग म | प सां, | नि प | ग म | री सा

तु ऽ | र्द श | मा ऽ | त्रा ऽ, | गु नी | ऽ गि | न त

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

सा म नि सां

नि़ सा | सा, री | म म, | प – | धि – | नि, सां | – सां

स श | ब्द, चा | ऽ र, | निः ऽ | श ऽ | ब्द, ती | ऽ न

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

सां सां सां नि नि

नि नि | सां सां, | रीं – | सां रीं, | नि सां | म प | धि नि

बि ल | मि त, | म ऽ | ध्य रु, | द्रु त | ल य | क रि

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

अंतरा १

प म नि सां नि

म म | प, प | धि धि, | नि – | सां सां, | सां – | सां सां

प्र थ | म, तृ | ती य, | स ऽ | प्त म, | ता ऽ | प र

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

सां सां सां नि

नि सां | रीं – | सां सां | नि नि | सां –, | रीं धि | नि प

प ऽ | का ऽ | द श | स ब | हूँ ऽ, | स श | ऽ ब्द

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

मं मं मं मं मं मं मं गं नि

गं गं | गं गं, | गं गं | गं, मं | रीं – | सां सां | धि नि

पं ऽ | च म, | न व | म, त्र | यो ऽ | द श | हूँ ऽ

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

प नि

रीं – | सां –, | म – | प – | प, रीं | सां – | धि नि

मा ऽ | त्रा ऽ, | निः ऽ | श ऽ | ब्द, स | बै ऽ | ध रि

× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

अंतरा २

प नि नि नि सां सां

म - | प, ध | ध ध | नि नि | सां - | सां सां | सां सां
ख्या ऽ | ल, बा | ऽ नि | सं ग | रा ऽ | ज त | अ त
× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

सां मं सां नि

नि सां | गं मं, | रीं रीं | सां - | नि सां | रीं, ध | नि प
बा ऽ | जे ऽ, | त ब | ले ऽ | पे ऽ | ऽ, म | धु र
× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

मं मं प नि सां

गं गं | मं पं | गं मं | रीं सां | म प | ध नि | सां सां
धिं त्रक | धी ना | तू ना | क त्ता | त्रक धी | ना धी | धी ना
× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

सा म नि मं नि नि

नि सा | री म | प ध | नि सां | गंमं रींसां | म प | ध नि
सु न | सु न | रे सु | ज न | वाऽ ऽऽ | मा ऽ | धु रि
× | २ | ० | ३ | ० | ४ | ०

ताल झूमरा – राग हमीर

स्थायी : झूमर ताल सोहत अतही चतुर्दश मात्रा नियमित
तीन भरी तजी एक ख्याल सिंगार।
अंतरा : प्रथम तुरीय एकादशहूँ भरी तजी आठवीं
बिलमित मात्रा करि तबले पे बजे
धिंऽधा तिरकिट धिं धिं धागे तिरकिट
तिं ऽता तिरकिट धिं धिं धागे तिरकिट
धीर गंभीर चितहार॥

स्थायी

प म प नि ध ध नि सां प

सां ध प(प) ,गम | ध – निध | सां रीं सांनि धप | मध प –
झू S SS ,मर | ता S लS | सो S हS St | अत ही S
3 | × | 2 | 0

म ग प सा नि म प

पप (प)ग मरी मध | प,गम री सा | साग पप ,नि ध | ध,नि (प) –
चतु रS SS दश | मा,SS त्रा S | नियमित ,ती S | न,भ री S
3 | × | 2 | 0

प नि सां प म

मप धनि सांरीं – | सांनि ध प | ग गमप गम सा,री | सा निसा सा
तजी SS SS S | एS S क | ख्या SSSSS ल,सिं | गा SS र
3 | × | 2 | 0

अंतरा

म नि नि नि सां

पप सां,सां | सां सांरीं सां, | निध निध सांरीं सां | सां ध प
प्रथ म,तु | री SS य, | एS काS दश हूँ | भ री S
| × | 2 | 0

नि नि म प

सांसां रींगंमंपं गंमं –रीं | सां,निध सांनिरींसां | पप मप नि ध |
तजी आSSS SS SS | वीं,SS SS SS | बिल मित मा S |
3 | × | 2 |

नि नि नि प नि

धरीं सां धप || सासा रीगमध प,ग मरी | सा –म गगगग |
त्राS S करि || तब लेSSS पे,ब जेS | धिं Sधा तिरकिट |
0 || 3 | × |

मं नि

प प निध सांसांसांसां | गंमंप गंमं,रीं सांरींसांसां | निध निध
धिं धिं धागे तिरकिट | तिंSS SS,ता तिरकिट | धिंS धिंS
2 | 0 | 3

	सांनि धनिपप	ध मप प,प	रीप गम रीसा ,सासा	मग पम धप,
	धागे तिरकिट	थी SS र,ग	म्भीS SS SR ,चित	हाS SS SR,
		×	२	०

ताल दीपचंदी– राग काफी

स्थायी : निराली सजी है सखि होली रसिक जन मन रंजनी
ताल न्यारो दीपचन्दी कहायो चाचरहूँ दूजो नाम।

अंतरा : मात्रा चतुर्दश गिनि भरी तीन इक तजी
प्रथम तुरीय एकादश भरी आठमी तजी
बाजे तबले पे लगी झाल मुखरो संगत
धाधींS धागेतिन् तातिन् धागेधिन्
निरतै सुन्दर श्याम॥

स्थायी

नि ध प	ग री नि़,सा	री – –	ग ग म म
नि रा S	ली S S ,स	जी S S	है S स खि
×	२	०	३
प – –	प – – –,	नि ध नि	प ध म प
हो S S	ली S S S,	र सि क	ज न म न
×	२	०	३
रीम पध धप	ग – री –,	नि – नि	सां (सां) निध़ प
रंS SSजS	नी S S S,	ता S ल	न्या S रोS S
×	२	०	३
मप ध प	म प ग री,	म ग रीसा	री नि़ सा –
दीS S प	च Sन्दी S,	क हा SS	यो S S S
×	२	०	३

सा सा म री
री नि़ सा | री री ग ग | म – म | पध निसां – प;
चा ऽ ऽ | च र हूँ ऽ | दू ऽ जो | नाऽ ऽऽ ऽ म;
× | 2 | 0 | 3

अंतरा

प नि सां
म – – | प – –,ध | नि सां नि | सां सां सां सां
मा ऽ ऽ | त्रा ऽ ऽ,च | तु ऽ ऽ | र्द श गि नि
× | 2 | 0 | 3

गं सां
रीं रीं – | रींगंमंमं गंरींगं रींसांरींनि सांसां | नि सां (सां) | नि ध प –
भ री ऽ | तीऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽन | इ क त | जी ऽऽऽ
× | 2 | 0 | 3

म प सां नि
ध ध – | ध – –,नि | ध प ध | नि सां सां –
प्र थ ऽ | म ऽ ऽ,तु | री ऽ य | ए ऽ का ऽ
× | 2 | 0 | 3

सां सां ग
नि सां रीं | नि ध प –, | म ग म | पध पध सां(सां) –
द श भ | री ऽ ऽ ऽ, | आ ऽ ठ | मीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
× | 2 | 0 | 3

म ग री
नि ध प, | मप मपध पम प | ग री – | रीगमम गरीग सारी
त जी ऽ, | बाऽ ऽऽऽ ऽऽ ऽ | जे ऽ ऽ | ऽऽऽऽ ऽऽऽ तब
× | 2 | 0 | 3

री नि़ नि़ नि़
नि़ सा – | सा – – –, | सा सा रीं | सां – – रीं
ले ऽ ऽ | पे ऽ ऽ ऽ, | ल गी ऽ | झा ऽ ऽ ल
× | 2 | 0 | 3

ग सां
नि ध प | म म प ध | नि – – | सां – – सां
मु ख ऽ | रो ऽ ऽ ऽ | सं ऽ ऽ | ग ऽ ऽ त
× | 2 | 0 | 3

सां नि	सां	–	नि	ध	प	–	प म	प	ध	म ग	ग	री	–
धा	धिं	ऽ	धा	गे	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	गे	धिं	ऽ
×			2				0			3			

सा री	री नि̣	सा	री	–	–, गग	री म	म	–	पध	निसां	–	प
नि	र	ऽ	तै	ऽ	ऽ, सुंऽ	द	र	ऽ	श्याऽ	ऽऽ	ऽ	म
×			2			0			3			

ताल धमार—राग मालकौंस

स्थायी : रच्यो है रास कान्ह , धऱ्यो धमार ताल दै दै तारी ।

अंतरा १: मात्रा गिने चतुर्दश, तीन भरी एक तजी

प्रथम छठी एकादश भरी, तजी आठमी

मृदंग पे चितहारी ॥

अंतरा २: कधिट धिटधाऽगतिट तिटताऽ, खुले हाथ बजत बोल

सजे सिंगार नित बिन्द्राबन में होरी ॥

स्थायी

नि सां	नि ध	नि	ध	म
र	च्यो	ऽ	है	ऽ
	3			

ग	सा	–	म	ग	–, म	नि	नि ध, सां	नि ध	नि	ध	म
रा	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ, का	ऽ	न्ह, र	च्यो	ऽ	है	ऽ
×					2	0		3			

ग	सा	–	म	ग	–, म	–	नि	ध,	सां नि	सां	गं, सां
रा	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ, का	ऽ	न्ह	ऽ,	ध	ज्यो	ऽ, ध
×					2	0			3		

ध नि ध, म -	- ग	-, म नि	ध सां - -
मा ऽ र, ता ऽ	ऽ ल	ऽ, दै ऽ	ऽ दै ऽ ऽ
×	2	0	3
सा ग म ध नि	सां नि	ध म; सां	ध नि ध म
ता ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ री	ऽ ऽ; र	च्यो ऽ है ऽ
×	2	0	3

अंतरा-१

सां - - सां -	-, सां	सां -, सां	सां सां ध नि
मा ऽ ऽ त्रा ऽ	ऽ, गि	ने ऽ, च	तु र द श
×	2	0	3
सां गं मं गं -	-, गं	सां -, ध	नि ध म म
ती ऽ ऽ न ऽ	ऽ, भ	री ऽ, ए	ऽ क त जि
×	2	0	3
सा ग म, ग सा	-, नि़	सा ध़ नि़	सा ग म ध
प्र थ म, छ ठी	ऽ, प	ऽ का ऽ	द श भ री
×	2	0	3
नि सां -, गं -	मं गं	सां -, सां	ध नि ध म
त जी ऽ, आ ऽ	ऽ ठ	मी ऽ, मृ	दं ग पे ऽ
×	2	0	3
सा ग म ध नि	सां नि	ध म; सां	ध नि ध म
चि त हा ऽ ऽ	ऽ री	ऽ ऽ; र	च्यो ऽ है ऽ
×	2	0	3

अंतरा–2

मं मं मं मं		नि म	नि
गं गं गं गंमं	गं सां,	सां ग म	ध नि सां –
क धि ट धिट	धा ऽ,	ग ति ट	ति ट ता ऽ
×	2	0	3
नि		म म	
गं सां –, ध नि	ध म,	ग ग म	ग सा – सा
खु ले ऽ, हा ऽ	ऽ थ,	ब ज त	बो ऽ ऽ ल
×	2	0	3
सा नि नि		म नि	सां नि
ग सा सा ध नि	सा सा,	ग म, ध	नि सां सां सां
स जे सिं गा ऽ	ऽ र,	नि त, बि	न्द्रा ऽ ब न
×	2	0	3
नि म ध नि सां		म	नि
सा ग, म ध नि	सां नि	ध म; सां	ध नि ध म
में ऽ, हो ऽ ऽ	ऽ री	ऽ ऽ; र	ज्यो ऽ है ऽ
×	2	0	3

ताल सवारी – राग तोडी

स्थायी: सवारी सोहे पंचदश मात्रा गिन्त जात
जामें तीन भरी इक तजत होत
प्रथम पंचम त्रयोदश भरी नवम् तज दीनि
'सुजन' मनहरि।

अंतरा : बजत बोल अत सुन्दर तबले पे
धिंधा, तत, धीना, धीना, तीऽऽक्ड, तीना,
तिरकिट, तूना, किड़नग, कता, धीधीना, धीधीना,
धिंऽऽ, धा, ऽक्ड, धिंऽ, ऽ, धाऽक्ड, लय सिंगार नहीं पायो।

स्थायी

			प--,री -ग,री- -सा--
			सऽऽ,वाऽऽ,रीऽ ऽऽऽऽ
			३
ध - ध, नि	म॑ ध नि सां	नि ध प -	रीरी ग,री -सा
सो ऽ हे, पं	ऽ च द श	मा ऽआऽ	गिन त,जा ऽत
×	2	0	३
निसा रीसा निध	म॑ ध नि सा	री -,ग ग	मम प,ध -ध
जाऽ ऽऽ मेंऽ	ती ऽ न भ	री ऽ,इ क	तज त,हो ऽत
×	2	0	३
म॑ ध नि,सां	रीं सां -,सां	रीं गं रींसां	निसां रीं,नि धध
प्र थ म, पं	च म ऽ, त्र	यो ऽ द श	भरी ऽ,न वम
×	2	0	३
म॑ ध निसां रीं	नि, ध प प,	म॑ म॑ प ध;	प--,री-,ग,री- -सा--
त जदीऽ ऽ	नि, सु ज न,	म न ह रि;	सऽऽवा,ऽऽ,रीऽ,ऽऽऽऽ
×	2	0	३

अंतरा

रीं रीं रीं सां	- सां, म॑ ध	नि सां रीं सां	नि--,सां --रीं -गं--
ब ज त बो	ऽ ल, अ त	सुं ऽ द र	तऽऽ,ब ऽऽ,लेऽ ऽ,प्रेऽऽ
×	2	0	३

रीं गं,रीं गंरीं,सांसां	नि,-नि सांरीं नि-,ध- म॑,म॑
थिं धा,तत धीना,धीना	ती,ऽक्ड तीना तिरकिट,तूना किड़,नग
×	2

धध मंध नि,ध पप	रीग-,री -सा,ध- -,निमंध	
कत्ता धीधी ना,धी थीना	धिंऽऽ,धा ऽक्ड़,धिंऽ ऽ,धाऽक्ड़	
०	३	

नि सां रीं नि	ध ध, मं ध	नि, ध प प;
ल य सिं गा	ऽ र, न हीं	ऽ, पा ऽ र;
×	2	०

प--,री -ग,री- -सा--	
सऽऽ,वा ऽऽ,रीऽ ऽऽऽऽ	इत्यादि स्थायी के अनुसार
३	

ताल त्रिताल - राग बिहाग

स्थायी : लघु गुरु लघु मिलि षोडश मात्रा
कहे त्रिताल गुनि संमत ताल
विलंबित मध्यरु द्रुत तीहूँ लयमित।

अंतरा १ : त्रय सशब्द पुनि एक निःशब्द
प्रथम पंचम त्रयोदश मात्रा सशब्द
नवम निःशब्द, ताल वाध तबला जासों मन लुभात॥

अंतरा २ : विलंबित लय युत धा तिरकिट धिं धिं धा धा तिं तिं
ता तिरकिट धिं धिं धा धा धिं धिं
धाधिंधिंधा धाधिंधिंधा धातिंतिंता ताधिंधिंधा
नाधिं धिंना नाधिं धिंना नातिं तिंना नाधिं धिंना
लय मध्यरु द्रुत बोल बजावत॥

स्थायी

0	३	×	२
ग म प म	ग गरी सा सा,	ग म प सां	नि नि (प) -
ल घु गु रु	ल घुऽ मि लि,	षो ऽ ड श	मा ऽ त्रा ऽ
ग ग म ग	- ग, ग म	प - ग म	ग रीसा - सा
क हे त्रि ता	ऽ ल, गु नि	सं ऽ म त	ता ऽऽ ऽ ल
ऩि ऩि प़ प़,	ऩि सा सा सा,	ग मग प पम	ग म गरी सा
वि लं बि त,	म ऽ ध्य रु,	द्रु तऽ ती हूँऽ	ल य मिऽ त;

अंतरा-१

0	३	×	२
ग म प नि	सां सां, सांसां	सां - सां, सां	- सां रीं सां
त्र य स श	ऽ ब्द, पु नि	ए ऽ क, निः	ऽ श ऽ ब्द
सां सां गं, मं	गंरीं सां -, सां	नि प नि सां	नि -ध प -
प्र थ म, पं	चऽ म ऽ, त्र	यो ऽ द श	मा ऽऽ त्रा ऽ
प ग म, ग	सा सा, ऩि -	प़ ऩि सा सा,	ग - म, प
स शब्द, न	व म, निःऽ	ऽ श ऽब्द,	ता ऽ ल, वा
नि नि, सां गं	(सां) -, नि -	प -, ग ग	म ग रीसा, सा;
ऽ थ, त ब	ला ऽ, जा ऽ	सों ऽ, म न	लु भा ऽऽ त;

अंतरा-२

प प सां सां	सां सां सां सां	नि -ध निरीं सांसां	नि - प -
वि लं बि त	ल य यु त	धा SS तिर किट	धिं S धिं S
०	३	×	२
गम पध ग म	ग - सा -,	नि प नि नि	सा - सा -
धाS SS धा धा	तिं S तिं S,	ता S तिर किट	धिं S धिं S
०	३	×	२
ग म पनि सांमं	गं - सां -,	गं मं पं मं	गं मं गं सां
धा S धाS SS	धिं S धिं S,	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा
०	३	×	२
नि प ग म	प गम ग सा,	पसा निरी साम गप	पसां निरीं सांमं गंसां
धा तिं तिं ता	ता धिंS धिं धा,	नाधिं धिंना नाधिं धिंना	नातिं तिंना नाधिं धिंना
०	३	×	२
नि नि पमं (प)	ग म ग ग,	गम पमं ग, म	ग रीसा सा सा;
ल य मS S	ध्य रु द्रु त,	बोS SS ल, ब	जा SS व त;
०	३	×	२

ताल गजमुख-राग देशकार

स्थायी: ताल गजमुख जानियो, जामें गिनत
षोडश मात्रा गुनिजन, चार भरी
तजी एक सुन 'सुजान'।

अंतरा: प्रथम छठि आठवींहुँ त्रयोदशि भरी
तजि एकादशी एक, धिंS त्रक धीना तूना कत्ता
त्रक धीना धीधीना, तबले पे बोल किये बखान॥

स्थायी

	ग			
ध – प, ध ग	पध, पप,	ग रीसा, सा	रीध़, सा,	प ग ग –
ता ऽ ल, ग ज	मुऽ खऽ,	जा ऽऽ नि	योऽ ऽ,	जा ऽ में ऽ
×	२	३	०	४

प		प		ग प
सा ग प, ध –	प ध,	प ग प	ग रीसा,	सा री ग प
गि न त, षो ऽ	ड श,	मा ऽ ऽ	त्रा ऽऽ,	गु नि ज न
×	२	३	०	४

सां				
ध – ध प ध,	सां रीं	सां ध प,	ध ग	प ग री सा
चा ऽ र भ री,	त जी	ए ऽ क,	सु न	सु जा ऽ न
×	२	३	०	४

अंतरा

प				
ग प ध सां ध	सां –	सां सां –	सां, रीं	सां – सां सां
प्र थ म छ ठि	आ ऽ	ठ वीं ऽ	हुँ, त्र	यो ऽ द शि
×	२	३	०	४

सां				
सां ध सां, रीं रीं	सां रीं	सां – ध	प धग,	प ध – ध
भ री ऽ, त जि	ए ऽ	का ऽ द	शी ऽऽ,	ए ऽ ऽ क
×	२	३	०	४

गं – पं गं पं	गं रीं	सां – प	ध सां	रीं सां ध प
धिं ऽ त्रक धी ना	तू ना	क ऽ त्ता	त्रक धी	ना धी धी ना
×	२	३	०	४

प		ध		
ग प ध सां ध	सां –	ध –, ग	प, ध	प ग री सा
त ब ले पे ऽ	बो ऽ	ल ऽ, कि	ये, ब	खा ऽ ऽ न
×	२	३	०	४

ताल हंसविलास–राग अल्हैयाबिलावल

स्थायी : ताल हंसविलास गुनि बरनत
गिनत सोलह मात्रा जामें भरी चार
एक तजी सुन 'सुजान'।

अंतरा : बजत सुंदर बोल तबले पे
धिंऽ नाधिं त्रक धिंना तिंऽत्रक धीधीना धीधीना
पंच दो पुनि तीन तीन तीन ॥

स्थायी

नि			प नि	
सां नि ध,प –	ध ग	म री री,	ग प ध	नि सां रीं
ता ऽ ल, हं ऽ	स बि	ला ऽ स,	गु नि ब	र न त
×	२	०	३	४
नि	नि			नि
ध नि सां, धप	ध नि॒	ध – प,	म ग म	री, सा सा
गि न त,सो ऽ	ल ह	मा ऽ त्रा,	जा ऽ में	ऽ, भ री
×	२	०	३	४
सा ध	ग			
ध – ध,नि॒ प	प, प	ध ग प,	नि ध नि	सां – रीं
चा ऽ र, ए ऽ	क, त	जी ऽ ऽ,	सु न सु	जा ऽ न
×	२	०	३	४

अंतरा

सां सां			नि	
नि नि नि,नि ध	नि नि	सां – सां,	सां रीं सां	नि ध प
ब ज त,सुं ऽ	द र	बो ऽ ल,	त ब ले	ऽ पे ऽ
×	२	०	३	४
ग		प		
प –प ध ग	म री	ग प निध	नि सां सां	रीं सां सां
धिं ऽ ना धिं त्रक	धिं ना	तिं ऽ त्रक	धी धी ना	धी धी ना
×	२	०	३	४

नि	नि	प		प	
सांरीं गंरीं,सां–	ध प,	ध नि ग,	प – प,	नि ध नि;	
पंऽ ऽ च, दोऽ	प्र नि,	ती ऽ न,	ती ऽ न,	ती ऽ न;	
×	२	०	३	४	

ताल पंचानन–राग बहार

स्थायी: ताल पंचानन गिनै उनईस कुल मात्रा
तामें भरी पाँच दो तजी, प्रथम तिजि नवमी
एकादशि पंचदशि भरी, तजी छठी अष्टादशी
'सुजन' सुन।

अंतरा: धाऽधि त्ताऽ कऽत्ता धिटधाऽतिटधा तिटकित गदिगिन
मृदंग बाजे खुले हाथ गरजे घन
धिंऽधागेन तिंऽत्रक धीधीना धीधीना कऽत्तिं नात्रक
बाजे सोही तबले पे रीझे मन।

स्थायी

म	प	म		सां		
नि –	प, म प	ग म नि	ध, नि	सां –, रीं सां	नि सां सां	नि ध
ता ऽ	ल, पं ऽ	चा ऽ न	न, गि	नै ऽ, उ न	ई ऽ स	कुल
×	२	०	३	४	५	०
म	नि सां		प	म म	नि सा	
ग म	ध नि सां,	नि – प	म प	ग ग म प,	री – सा	म –
मा ऽ	त्रा ऽ ऽ,	जा ऽ में	भ री	पाँ ऽ ऽ च,	दो ऽ त	जीऽ
×	२	०	३	४	५	०
म म		सां	मं	नि	नि	सां
प ग	म, नि ध,	नि सां सां	गं मं	रीं – सां रीं,	सां – रीं	नि सां
प्र थ	म, ति जि,	नौ ऽ मि	ए ऽ	का ऽ द शि,	पं ऽ च	द शि
×	२	०	३	४	५	०

म नि सां म म म म सा
ग म, | ध नि सां | नि प –, | ग ग | म प ग ग, | म री सा | नि सा
भ री, | त जी ऽ | छ ठि ऽ, | अ ऽ | ष्टा ऽ द शि, | सु ज न | सु न
× | 2 | 0 | 3 | 4 | 5 | 0

अंतरा

म नि म सां
नि ध | नि सां – | सां – सां | नि ध | नि सां नि सां | रीं निसां रींसां | निध निसां
धा ऽ | धि त्ता ऽ | क ऽ त्ता | धि ट | धा ऽ ति ट | धा तिटि कत | गदि गिन
× | 2 | 0 | 3 | 4 | 5 | 0

मं मं सां म म
गं गं | मं रीं – | सां –, रीं | नि सां | नि प म प | ग ग म | री सा
मृ दं | ग बा ऽ | जे ऽ, खु | ले ऽ | हा ऽ ऽ थ | ग र जे | घ न
× | 2 | 0 | 3 | 4 | 5 | 0

नि गं मं म नि
सा मं | मं मं पं | गं – मं | रीं सां | ग म ध नि | सां – रीं | सां रीं
धीं ऽ | धा गे न | तिं ऽ त्रक | धी धी | ना धी धी ना | क ऽ त्तिं | ना त्रक
× | 2 | 0 | 3 | 4 | 5 | 0

रीं प म म नि सां
नि सां | सां, नि – | प, म प | ग म | री – सा –, | ग म ध | नि सां;
बा ऽ | जे, सो ऽ | ही, त ब | ले ऽ | पे ऽ ऽ ऽ, | री ऽ झे | म न;
× | 2 | 0 | 3 | 4 | 5 | 0

❋ स मा प्त ❋

परिशिष्ट

राग खमाज- तराना- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ना दिर दिर तन तुं दिर दिर तोम् तनन देरेना
दीम् तननननन द्रियानारे दीम् तोम्
तारेदानि तदानि तननन यारे।

अंतरा: तन नितान्न तन नितान्न दीम् तन
ना दिर दिर तुं दिर दिर तन, दिर दिर दिर दिर
दिर दिर तोम्, धागेना धागेना धातीना धातीना
धा किड़नग तिरकिट थुंथुंना कत्तिट धा
तननन यारे॥

स्थायी

(म)नि ध प म	ग,(प)म प ध	(नि)सां –,नि ध	म,(ध)प ध म
ना दिर दिर त	न,तुं दिर दिर	तो म्,त न	न,दे रे ना
0	3	×	2
ग –,(ग)म ग	री (सा)सा ऩि सा,	(म)ग म (ध)प (प)ध	म ग (म)म,ऩि
दी म्,त न	न न न न,	द्रि या ना रे	दी ऽ म्,तो
0	3	×	2
ध (ध)ऩि,प ध	(सां)नि सां –,रीं	(सां)नि (सां)सां,(प)ऩि ध	प म (म)ग म
ऽ म्,ता रे	दा नि ऽ,त	दा नि,त न	न न या रे
0	3	×	2

अंतरा

(ग)म ग म ऩि	(ध)ध ऩि,प ध	(सां)नि सां –सां	(नि)सां – सां सां
त न नि ता	ऽन्न,त न	नि ता ऽन्न,	दी म् त न
0	3	×	2

प नि सां,रीं	नि सां नि ध,	ग म प ध	ग म ग –
ना दिर दिर,तुं	दिर दिर त न,	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर तो म
0	3	×	2
सा ऩि सा, म	ग म, नि प	ध, नि सां सां,	रीं –सां निध
धा गे ना, धा	गे ना, धा ती	ना, धा ती ना,	धा ऽकिड नग
0	3	×	2
मं गं नि सां	नि, ध प म	ग –, नि ध	प म ग म
तिर किट थुं थुं	ना, कत्ति ट	धा ऽ, त न	न न या रे
0	3	×	2

राग गोरखकल्याण–तिलवाडा(विलंबित)

स्थायीः कासे कहूँ मन की बिथा, परदेसी बालमवा
अत बिलम रहे, का जानूँ कब घर ऐहैं।

अंतराः राह तकत हूँ निसदिन उनके आवन की
घरी पल छिन दिन कल ना परत मोहे ॥

स्थायी

, निसारीसा निध ,री	सा,रीम धम ,नि	ध –, मम धनि
, काऽऽऽ सेऽ ,क	हूँ ,मन कीऽ ,बि	था ऽ, पर देऽ
3	×	2
सां निध,रीम रीसा	निसा, धसा रीम धनि	ध – –,मधनिसांरीं
ऽ सीऽ,बाऽ लम	वाऽ ,अत बिल मर	हे ऽऽ,काऽऽऽऽ
0	3	×

नि सां म सा सा
सां,निसां निध,निसांनिनि ध | म , री मरी नि | सा; निसारीसा
जा,SS नूँS,कSबS घ | र , ऐ SS हैं | S; काSSS
2 | 0 | 3

सा
निध ,री | सा
सेS ,क | हूँ ...... इत्यादि
 | ×

अंतरा

म सां ध सां रीं नि
रीम ध – नि,ध | सां –रीं सां – | निसांरींमंमं रींसां रींरींसांसां
राS ह S S,त | क Sत हूँ S | नि सSSS दिन उSनS
3 | × | 2

नि ध प म सा म नि नि
ध निध म रीसा || धसा रीम धनिसांसां | धनिसांमं –रींसां
के आव न कीS || घरि पल छिन दिन | कल नाS S पर
0 || 3 | ×

सां री नि सां प सा सा
नि ध , मम धनि | सां ध म री | निसा; निसारीसा निध ,री
त S , मोS SS | S हे S S | SS; काSSS सेS ,क
2 | 0 | 3

सा
हूँ ...... इत्यादि स्थायी के अनुसार
×

॥ श्री गुरुवे नमः ॥

Archived by Aaraeva Business Solutions Pvt Ltd